LIST DE BUUKS FUK GALE.

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ASIATIC SOCIETY OF BENGAL,

No. 57, PARK STREET, CALCUTTA,

AND OBTAINABLE FROM

THE SOCIETY'S AGENTS, Mr. BERNARD QUARITCH, 15, PICCADILLY, LONDON, W., AND Mr. OTTO : HARRASSOWITZ, BOOKSELLER, LEIPZIG, GERMANY.

Complete copies of those works marked with an asterisk * cannot be supplied-some

of the Fasciculi being out of stock.

BIBLIOTHECA INDICA,

| Sanskrit Series. | | | |
|---|--|-----|----|
| Advaira Brahma Siddhi, (Text) Fasc. 1-4 @ /6/ each | Rs. | , | 0 |
| Advantabinita Kaustubhe, Fasc. 1-2 | | 0 | 12 |
| (Ma-4) Bara 4 14 @ [6] anah | | 4 | 2 |
| Aitareya Brahmana, Vol. I, Fasc. 1-5 and Vol. II, Fasc. 1-6 | 5 · Vol III | - | - |
| Fasc. 1-5, Vol. 1V, Fasc. 1-5 @ /6/ | | 7 | 8 |
| Ann Dhiannam (Mart) Dans 9 5 (a) (6) such | *** | i | 8 |
| Aphonisms of Candilus (Facility) Fogs 1 | - | ō | 12 |
| Aştasāhasrikā Prajānpāramitā, (Text) Fasc. 1-6 @ /6/ each | 7 | 2 | 4 |
| Açvavaidyaka, (Text) Fasc. 1-5 @ /6/ each | | ī | 14 |
| Avadana Kalpalata, (Sans. and Tibetan) Vol. I, Fasc. 2-5; V | | | • |
| 1-5 @ 1/ each | *** | 9 | 0 |
| Bala Bhatti, Vol. I, Fasc. 1 | | 0 | 6 |
| Baudhayana Srauta Sutra, Fasc. 1-2 @ /6/ each | | o | 12 |
| *Bhamati, (Text) Fasc. 4-8 (a /6/ each | | 1 | 14 |
| Bhātṭa Dipikā Vol. I, Fasc. 1-4 | | 1 | 8 |
| Brhaddevata (Text) Fasc. 1-4 @ /6/ each | The state of the s | ī | 8 |
| Brhaddharma Purana, (Text) Fasc. 1-6 @ /6/ each | | 2 | 4 |
| Bodhicaryavatara of Cantidevi, Fasc. 1-2 | | 0 | 12 |
| Catadusani, Fasc. 1 | | 0 | 6 |
| Catalogue of Sanskrit Books and MSS., Fasc. 1-4 @ 2/ each | | 8 | 0 |
| Qatapatha Brahmana, Vol. I, Fasc. 1-7; Vol. III, Fasc. 1-4 | | 4 | 2 |
| Çatasahasrika-prajnaparamita (Text) Part I, Fasc. 1-7 @ | /6/ each | 2 | 10 |
| *Caturvarga Chintamani (Text) Vols. II, 1-25; III. Part I, | Fasc. 1-18. | | |
| Part II, Fasc. 1-10 @ /6/ each; Vol IV, Fasc. 1 | | 20 | 4 |
| Olokavartika, (English) Fasc. 1-4 | | 3 | 0 |
| *Oranta Sutra of Apastamba, (Text) Fasc. 4-17 @ /6/ each | | 5 | 4 |
| Ditto Çankhayana, (Text) Vol. I, Fasc. 1-7; Vo | | | |
| 1-4; Vol. III, Fasc. 1-4 @ /6/ each Vol 4, Fasc. 1, | | 6 | 0 |
| Gri Bhashyam, (Text) Fasc. 1-3 @ /6/ each | | 1 | 2 |
| Dan Kriva Kaumudi, Fasc, 1-2 | | 0 | 12 |
| Gadadhara Paddhati Kalasara, Vol I, Fasc. 1-6 | | 2 | 4 |
| Kāla Mādhava, (Text) Fasc. 1-4 @ /6/ each | | 1 | 8 |
| Kāla Viveka, Fasc. 1-6 | | 2 | 4 |
| Katantra, (Text) Fasc. 1-6 @ /12/ each | , ,,,,, | + | 8 |
| Katha Sarit Sagara, (English) Fasc. 1-14 @ /12/ each | | 10 | 8 |
| Kurma Purana, (Text) Fasc. 1-9 @ /6/ each | | 3 | 6 |
| Lalita-Vistara, (English) Fasc. 1-3 @ /12/ each | | 2 | 4 |
| Madana Pārijāta, (Text) Fasc. 1-11 @ /6/ each | | 4 | 2 |
| Mahā-bhāṣya-pradipōdyōta, (Text) Fasc. 1-9 & Vol. II, Fasc. | 1-11 @ /6/ | | |
| each | - 619 | 7 | 8 |
| Manutika Sangraha (Text) Fasc 1-3 @ /6/ each | | 1 | 2 |
| Markandeva Purana (English) Fasc 1-8 @ /12 anch | | 6 | 0 |
| *Mimamsa Darcana (Text) Fasc 7-19 @ 161 each | *** | 4 | 14 |
| Nyayavartika, (Text) Fasc. 1-6 @ /6/ | | 2 | 4 |
| *Nirnkta, (Text) Vol. III, Fasc. 1-6; Vol. IV, Fasc. 1-8 @ | /6/ anch | 5 | 1 |
| Nityacarapaddhati Fasc. 1-7 (Text) @ 6 | 707 Buch | 2 | |
| Nityacarapradiph Fasc. 1-4 | | 1 | |
| Nyayabindutika, (Text) | | 0 / | |
| Vyava Kusumanjali Prakarana (Text. Vol. I. Fasc. 1-6 V | ol. II, Fasc. | 1 | |
| 1-3 @ /6/ each CC-0 In Public Domain : Funding by | | 1 | |

चान्तिपारमिता षष्ठः परिच्छेदः।

तच्छस्तं मम कायश्च दयं दुःखस्य कारगी के तेन शस्तं मया कायो यहीतः कुच कुष्यते हैं।

श्रविकलकारणवाश्यो हि सर्वकार्यस्य कारणिमिति
प्रमाणपरिनिश्चितं । सा चाच तथाविधा विद्यते । तथा हि
तस्थापकारिणः अस्तं खड़ादि सम कायश्च । एतद्द्यं सामग्रीकृपं कृ
दुःखस्य कारणं । इति समर्थकारणसङ्गावे ऽपि कार्यं कथं नोत्पयेत । श्रव्यथा तन्तस्य कारणसेव न स्थात् । ततोऽन्यदपि तत
जत्पाद्योगः । तस्माद्यदि कारणोपनायके कुप्पते तदा स्वात्मन्यपि कोपो युक्तः । यतः स्वयमपि दुःखकारणं वहत्युपनयति
च भवान् । श्रात्मन्यकोपे परचापि न युक्त इति भावः ॥ 10

प्रकारान्तरेणोक्तसेवाधं स्पष्टयनाइ ।

गएडोऽयं प्रतिमाकारो यहीतो घट्टनासहः । तृष्णान्धेन मया तच व्यथायां कुच कुप्यते ॥ ४४

प्ररीराक्तिरयं पक्षगाडों भया यहातः। धर्वदुःखहेतु-लात्सर्वीपसर्द्धहः। त्राकोटनताडनादिभिर्प्यभेद्यलात्। दुःख- 15 परिहाराय सुखप्राप्तये च या त्रणाभिजाषः। तद्भेन पिहित-प्रज्ञाजोचनेन तस्यां यथायां सत्यां सुत्र सुप्यते। न हि गण्डस्य सुद्धादि[706]संपर्कने दुःखे क चिदिवेकतः कोपो युक्तः॥

^{1 =} tatsāmagrīto, nyad api kāraņam syāt, tata... ?

² Tib.: çu-ba mi-yi gzugs hdra-ba reg-tu mi-bzod sdug-bsnal-can = gaṇḍaḥ (= abscess) puruṣa(= çarīra)rūpasamaḥ sparçana-asahaḥ duḥkhī.... But Comm.: sarvopamardasahaḥ...abhedyatvāt. On pratimā, see *Qikṣās*. 358, lb; on gaṇḍa, *Aṅg. Nikāya* IV, 386.

⁸ Ms. : pakṣa°, but Tib.; çu-ba smin-pa.

प्रजाकरमतिकता बोधिचर्यावतारपञ्जिका।

839

श्विप च । यः कार्यणानधी तेन तत्कारणमेव परिहर्तयं भवेत् । श्रहं तु विपर्यस्तमितिरिति विमर्भसुपदर्भयन्नाह ।

दुःखं नेच्छामि दुःखस्य हेतुमिच्छामि वालिशः। स्वापराधागते दुःखे कसमादन्यच कुप्यते॥ ४५

उद्धं दण्डाद्यभिघातजं नेक्कामि । तस्य पुनः कारणं भरीरं प्रत्यपकारणं चेक्कामि वालिम इति वालधर्मो विपर्याप्तः । तस्मात्कारणात्स्वकाये यहुःखं तत्स्वापराधागतमेव । इति कस्मा-दन्यच तत्सहकारिमाचे कुप्यते ॥

त्रात्मवधाय खयं मंक्षातशस्त्रस्वैवान्यत्र मम कोपो न युक्त 10 इत्याह ।

श्रिसपत्तवनं यदद्यया नार्कपिक्षणः। मत्कर्मजनिता एव तथेदं कुच कुप्यते॥ ४६

श्रीसपस्तवनं नर्कससुद्भवं । श्रमय एव पत्ताख्यस्थिति काला । श्रीसग्रहणं प्राधान्यात् । श्रन्यद्पि ग्रस्तं नारकदुःखहेतुर्यन्तं चै । 15 वने तिसान्निवासिनो ग्रिशोलूकवायसाद्यः पत्तिणो यथा मत्क-मंजनिता एव दुःखहेतवो भवन्ति । नान्यद्व दुःखकारणमस्ति । तथेदमपि परग्रस्तादिकं दुःखहेतुर्भत्कर्मजनितसेव । इति कुच कुष्यते ।

¹ Ms.: kāryeṇānadhī tena.; Tib.: hbras-bu don-du mi gũer-pa des...— (Byań-chub don-du gũer=prārthayed bodhim). Should the conjecture be right, anarthin, with a new meaning=anabhilāṣin.

² Ms. yantram evanasya tannivāsino.... But Tib: hkrul-hkhor dan mtshon-cha gzan-dag kyan bzun-no (=grhitāni), nags-thsal de-na gnas.....

इत्यमपि विषयीम एवायमित्युपदर्शियतुमाइ।

मत्कर्भचोदिता एव जाता मय्यपकारिणः।

येन यास्यन्ति नरकान्मयैवामी इता ननु॥ ४७

येन मदीयेन कर्मणा चोदिताः प्रेरिता एव मिय पूर्वकार्तापकारे ऽपकारिणो जाताः मन्तो नरकान्यास्थन्ति । तेन 5
सयैवामी अपकारिणो इता नतु । खिचत्तं मंबोधयित ।
नामीभिरहं इतः । अयमभिप्रायः । यदि नाकरित्यमहमीदृशं
कर्म तदैतेऽपि नापकारिणो ऽभवित्यन्तित । मत्कृतेनैव कर्मणापकारिणो भवन्ति ॥

खपकारिष्वेव [71ª] मोहादपकारिनुद्धिमंगेति कारिका- 10 दयेन दर्भथनाह ।

एतानाश्रित्य मे पापं श्रीयते श्रमतो बहु।
मामाश्रित्य तु यान्त्येते नरकान् 'दीर्घवेदनान्॥ ४८
श्रहमेवापकार्येषां 'ममैते चोपकारिणः।
कस्मादिपर्ययं कत्वा खलचेतः प्रकुष्यिस॥ ४९ 15

एतानपकारिण श्रात्रित्य निमित्तीकत्य । मम पापं पूर्व-जन्मकतपरापकारजनितं चीयते तहुःखानुभवनविपाकेन चयं याति । चमतः चान्तिमालम्बमानस्य । बद्ध श्रनेकपर्यायेण कृतं ।

¹ According to the Comm. : tīvra°.

So M. L2.-Minaev : mayaite.

प्रज्ञाकरमतिकता बोधिचर्यावतारपञ्जिका ।

ननु यद्यपकारी भवान् तर्हि भवत एव नरकगमनसुचितं 5 न लेषामित्याह।

भवेन्समाशयगुणो न यामि नरकान्यदि । एषामच किमायातं यद्यात्मा रक्षितो मया ॥ ५०

या प्रत्यपकार निष्टि त्ति निष्ठा एतन्त्रमा प्रयमा हात्य्यं नरकगतिनिष्टि त्ति हेतुः । नरका ज्ञ यामि तदात् । प्रायमा हात्य्यवलेन ।

10 न तु पुनरेषां दुरा प्रयत्या नरकेषु ममापतनिमिति भावः ।

एतदेवा ह । एषा मित्यादिना ॥ अयम च ससुदायार्थः । यद्य हमपकारी मन्नि केन चिदुपायकौ प्रतेन नरका न यामि ।

तदेषा सुपकारिणां किमायातं । किमपची यते । का चिति रित्यर्थः ।

मया तावदेकेन [रचिता न] भवन्ता मन्ये रचित आत्मा च

15 भवेत् । न चैतावता किं चिदेषां न्यूना धिकं गुणदोषेषु स्थात् ॥

\$39

¹ Minaesv: āçrayaguņo.; Tib.: bsam-pa=M. L2: āçaya°.

² Tib.: gal-te bdag-la bsam-pa yi yon-tan yod na, dmyal mi hgro: yadi mayy āçayaguno bhaven, narakam na yāmi.

⁸ As said supra 1. 3.

⁴ Possibly apakāriņām; but the apakāriņah are said to be upakāriņah.

⁵ Ms. illegible and from a second hand: bhavatām anyam ro.—Tib.: rezig bdag-ñid geig-pas khyed-cag gzan ni ma bsruns-la, bdag-ñid ni bsrunba yin te=tāvad ātmanā ekena anyasmin eva na rakṣite ātmā eva rakṣito bhavet.—kyed-cag=plural of the pronoun of the second person the Tib. translator failed to understand this clause.—According to Prof. Kern: mayā tāvad ekena [na] bhavatā, manye, rakṣita ātmā ca bhavet.

15

नतु यदि नामैवं तथापि भवतो ऽपि न युक्तमात्मरचण-सुपकारिकतज्ञतया। दत्याप्रङ्खाहः।

श्रथ प्रत्यपकारी स्यां तथाप्येते न रक्षिताः। हीयते चापि मे चर्या तस्मान्त्रष्टास्तपस्विनः॥ ५१

यदि दण्डादिघा[71] तं कुर्वत्यु प्रत्यपकारी भवेयं। तथा धिते 5 न रचिता भविना। न कि श्विदेषां प्रतीकारो नरकगमनादिषु कृतः स्थात्॥ प्रत्युत। ताङ्गिनापि मया न प्रतिताङ्गियं। तथा। धर्वसन्तेषु न मैत्रिचत्तं भया निचेप्तयं। श्वन्तभो न दग्धस्थूणायामपि प्रतिघचित्तसुत्पादियतयं। दत्यादेवेधि-सन्तर्याया मस हानिरेव स्थात्॥ तस्मादेति प्रतीकारोपाया- 10 भावात्तपिस्वनो वराका रचितुमभ्रकावान्तष्टा दुर्गतिपतिता एव। दत्युपेन्युन्ते तावदिदानीं। पश्चात्तदुपायमिष्यगम्य तत्करिस्थामि यथेषां दुःखमणुमात्रकमपि न स्थात्॥

तदेवं परापकारमर्षणचान्तिं प्रतिपाद्यं। श्रधुना धर्मनिध्या-नचान्तिसुपदर्भयितुमाह ।

मनो इन्तुममूर्तत्वान शक्यं केन चित्क चित्। शरीराभिनिवेशात्तु कायदुःखेन वाध्यते॥ ५२

¹ Minaev: pratyayakārī.—L2: syāt tathā...

² L2 : kṣīyate.

⁸ Ms. : mayā niçoitavyam; but Tib. : spans-par mi-bya-ba.

⁴ Cp. VI, 1, in fine.

⁵ Ex conj. (=na sattvāpekṣā kriyate). Ms.: upekṣante—Tib.: de-ltar-na re-zig btan-snoms-su byas la: evam tāvad upekṣām kṛtvā.

⁶ Cp. ad VI, 8 and 35.

⁷ Ex conj.—Minaev, M, L²: cittam duḥkhena..., L¹ Dev: kāyo.—Tib.: lus hdi sdug-bshal-dag-gis gnod = kāyo 'yam duḥkhair bādhyate.

१६८ प्रज्ञाकरमतिकता बोधिचर्यावतारपञ्जिका।

दिविधं दुःखमविचारतो वाधकसुपजायते। काथिकं मान-ि सकं चेति। तत्र मनिस न किञ्चहण्डादिकं दातुं ग्रकः। श्रमूर्तवात्मनसः। दित तदुद्भवं दुःखं परमार्थतो न संभवित। कन्पनाकृतं तु दौर्मनस्यादिकं विद्यते। एतदेव दर्भयित। गरीरेत्यादिना। मनेदं ग्ररीरिमिति विकन्पाभ्यासवासना-वग्नात् कायदुःखेन चित्तं विह्नस्यते॥

¹तचापि प्रतिनियतसेव दुःखकार्णसित्या ह।

न्यकारः परुषं वाक्यमयश्रश्चेत्ययं गुणः। कायं न बाधते तेन चेतः कस्मात्मकुप्यसि॥ ५३

न्यक्कारादिगणः समूइः कायस्य दुःखहित् नं भवति । न हि कायस्यायं कं चिदुपघातं करोतीति येन तेन चेतः कस्माद्धेतोः प्रकुष्यसि॥

त्रथापि स्थात्। यदि नाम न्यक्काराद्यः कायस्य बाधका न भवन्ति [724] तथापि तच्छुवा मयि स्रोकानामप्रसन्नं चित्त-15 सुत्पद्यते। दति मया नेस्थन्ते। दत्याप्रद्याहः।

मय्यप्रसादो योज्येषां स किं मां भक्षयिष्यति। वह जन्मान्तरे वापि येनासौ मे जनभौष्मितः॥ ५४

भवतः नामैवं तथापि विचारणीयमेव । मिय न्यक्कारादि-श्रवणाद्यो ऽयमप्रमादो जनानां स किं मां भचयिष्यती इलोके

¹ tatra = kāye.

² Minaev : nyakkāraparuṣam vākyam—M. : nyakkāraḥ.—Tib. : brñas dan thsig-rtsub smra-ba dan.

⁸ Tib. : bdag-la za-bar mi byed na, bdag ni çii-phyir de mi hdod.

परलोके वा । येनासौ लोकाप्रसादो समाप्रियः । इति विचार्य न कर्तव्यो ऽचासिनिवेगः॥

श्रस्ति वाचाभिनिवेशकारणं लाभविघातो नामेत्याह।

लाभान्तरायकारित्वाद्यद्यसौ मे उनभी प्सितः। नङ्ख्यती हैव मे लाभः पापं तु खास्यति भ्रुवं॥ ५५ ई

तथा हि न्यक्कारादिश्रवणादप्रसादी लोकानां। तसाच लाओपनामनवैसुखां। ततो ऽसौ न्यक्कारादिर्गणो ममानिष्ट इति चेत्। तदयुक्तं। नङ्च्यति विनश्वरधर्मतयापगमिय्यति। इद्देव प्रतिनियतेरेव दिनेर्मम लाभः। न तु परलोकानुबन्धी अवियति। तिन्निमत्तं न्यक्कारादिकर्त्वषु क्रुथ्यतो यत्पापं तदेव 10 परं खाखति। परलोकानुबन्धि भवियति। ध्रुवमिति श्रपरि-सुक्ते तत्पाले तखाविनाग्रात्॥

द्रदमपि चात्रालोचनीयं।

वरमधैव मे सत्युर्न मिथ्याजीवितं 'चिरं। यसाचिरमपि स्थित्वा सत्युदुःखं तदेव मे॥ ५६ 15

द्रसेव वरं श्रेष्ठं यन्नाभाभावादिसान्नेवाहिन से मर्णमसु । न तु पुनः परापकारदारेण लाभप्रतिलक्षान्मिष्याजीवितं चिरं दीर्घकालं। कुतः। यसादद्वतरकालमपि जीविला मर्णानं

 $^{^1}$ Mithyā-ājīva is well-known, see $\it Qikṣ\bar as.$ 267, $_{11},$ $\it Sa\dot m.$ 111, 239; Majjh. 111, 75.

१०० प्रज्ञाकरमतिक्रता वोधिचर्यावतारपञ्जिका।

हि जीवितं । द्रत्यवश्वंभाविनो स्त्योर्दुःखं तदेव मम । यत्प-स्वादर्षश्रतात्यये भविष्यति तदेवेदानीं मम स्वियमाणस्य । दति चिरजीवितेस्वविशेषः ।

द्तो ऽष्यविशेष एवेति स्रोकदयेन द[72b]र्भयनाह ।

मुद्धतमपरो यश्व सुखो भूत्वा विवुध्यते । मुद्धतमपरो यश्व सुखो भूत्वा विवुध्यते ॥ ५० ननु निवर्तते सौखं इयोरिप विवुद्धयोः । सैवोपमा मृत्युकाले चिरजीव्यल्पजीविनोः ॥ ५८

यथा कश्चित्वप्नोपलयं वर्षमतं दृखसुपशुज्य विवुध्यते।

गि श्रन्यः पुनः चणमावं। स तावन्मावेण सुखिनमात्मानं मन्यते।
श्रनयोर्द्योरिप खन्नोपलय्योपशुक्तसुखयोः प्रतिविवुद्धयोः सतोः
तदुपल्यं विनष्टं सुखं न निवर्तते। जाग्यद्वस्थायां नानुवर्तते।
सारणमावावभेषलात्। सेवोपमा खन्नोपलय्यसुखयोरिव पुरुष्योर्द्ययुकाले सरणसमये चिरजीविनो उल्पजीविनश्च॥ ननु

विवर्तते सौख्यमिति। खार्थेऽष्यणं॥

द्रत्य सं मित्याजी वितेन ॥ श्रस्माद्पि साभासाभयोर्न कि स्विदिशेष द्रत्युपद्रश्यन्ना इ।

¹ This formula which puzzled James d' Alwis (cp. Max Müller, Dhamma-pada, 148) is common in Sanskrit and Pāli books.

² Minaev: na tan nivartate L²: pravartate.—See Commentary.

⁸ Ms. tu.

⁴ saukhyam = sukham.

⁵ See VI, 56.

लक्ष्वापि च बह्रँ साभान् चिरं भुका सुखान्यपि। रिक्तइस्तश्च नम्रश्च यास्यामि सुषितो यथा॥ ५१

प्रचुरतरलाभान् लब्धापि समासाद्य चिरकालसुपभुज्य सुखान्यपि। पुनर्ध्वयुमधिगम्य रिक्तइस्त्य तुच्छहस्तः। न तस्माल्लाभादीषदपि पाथेयं ग्रहीतं। नापि सुखात्किं चित्परि- 5 प्रिष्टमवस्थितं। कटिस्चकमाचमपि न परिग्रेषितमिति नग्नथ चौरैः परिसुषित द्वास्माल्लोकात्परं लोकं यास्थामि॥

खादेतत्। त्राख्येव विशेषो लाभस्य चीवरादीनामविघाता-दायुःसंस्काराणासुपस्तम्भाचिरतरकालं जीवितं स्थात्। ततश्च पूर्वकतपापस्य विदूषणाससुदाचारादिना परिचयं श्रिचासंवर- 10 परिरचणेन बोधिचित्तसेवनादिना च सुश्रस्तपचस्य च दृद्धं सुर्यां। यदुक्तं।

यावचिरं जीवित धर्मचारी तावत्पसूते कुग्रलप्रवाहं । दति [734] 1 त्रतो लाभान्तरायकारिणि युक्त एवं प्रदेष दत्याग्रङ्कयन्नाह । 15

पापक्षयं च पुण्यं च लाभाज्ञीवन् करोमि चेत्।

लाभादुक्तक्रमेण जीवन् श्रियमाणः पापचयं च पुष्यं च करोमीत्यादि मन्यमे। नन्तेतदितः ममधिकं दोषमपण्यताभि-धीयत दत्याइ

¹ Kațisūtra = girdle, " pagne."—Form in "ka is new.

² I cannot give exact reference.

पुर्ण्यक्षयञ्च पापं च लाभाय कुध्यतो ननु ॥ ६०

लाभार्षे लाभनिमित्तं तदन्तरायकारिणि देषं कुर्वतः सुकृतस्य एवोपजायते । यदुत्रं सर्वमेतत्सु चिरतिमित्यादिना । श्रयं तु विशेषः । श्रचान्तिससुद्भवस्य पापस्य राश्चिरिभवर्धते च॥ श्रयापि स्थाद्या कथं चित्ताविच्रकालं लाभाज्जीवितं स्थात् । तावतेव नः प्रयोजनं । द्वाराह ।

यदर्थमेव जीवामि तदेव यदि नश्यति। किं तेन जीवितेनापि केवलाशुभकारिणा॥ ई१

न खलु वोधिश्वत्त्रसम्बव्जीवितं निःप्रयोजनसेवाभि
10 खितं। किं तिर्ह संभाराभिसंवर्धनार्थं पापचयार्थं च। तद्यदि

सुकृतचयनिमित्तसेव तत्यात्। तदा किं तेन तादृग्रेन जीविते
नापि केवलाग्रभकर्मकरणगीलेन। निन्दितसेव तदिति भावः॥

स्थादेतत्। न लाभान्तरायकारितया ममावर्णवादिनि

प्रतिघिचत्तसुत्पद्यते। किं तु गुणप्रच्छादनादिकर्मणा दुःख
15 हेत्लात्। द्रत्याह।

श्रवर्णवादिनि देषः सत्त्वानाश्रयतीति चेत्। परायश्कारे ऽप्येवं कोपस्ते किं न जायते॥ ६२

श्रयगोऽभिधायिनि योऽयं भवतो विदेषः । सोऽवर्णवादी

¹ See supra VI, 1.

दोषाविष्करणाहुणप्रच्छादनाच लां नामयति । इति मला चेद्यदि म तिन्नमित्तकः ॥ श्रथ वा मलान् लोकान्नामयति । श्रवर्णवादेन मयि निग्राह्यति । ख्यमप्रमन्नचित्तस्तेषामपि चित्तमप्रमादयतौत्यर्थः । इत्यवर्णवादिनि देषस्रेत् । उच्यते । तदा [736] योऽपि परेषामन्यमलानामयमः प्रकामयति तचापि ६ कोपस्ते किं न जायते । मोऽपि चावर्णवादी मलान्नामयति । तदस्मिन्नपि युक्तरूप एव कोपः ॥

अनोत्तर्भाग्रङ्गयनाह

परायत्ताप्रसाद्त्वादप्रसादिषु ते श्रमा।

परेष्वन्येषु सत्तेष्वायत्त त्रात्रितोऽप्रसादोऽखेति । त्रन्यसत्तान् 10 विषयोद्यत्य ससुत्पन्न इति । तस्य भावसत्त्वं तस्मात् । परा-त्रिताप्रसादलादप्रसादिष्वप्रसन्नित्तेष्ववर्णवादिषु तव चमा चान्तिहत्पद्यते । त्रात्मित्तसेव एक्कति । त्रवाह ।

क्षेशोत्पादपरायत्ते क्षमा नावर्णवादिनि ॥ ६३

यदि यः परायत्ताप्रभादः तत्र चमा भवतो भवति । तदा 15 खिसानवर्णवादिनि किं न चमा । किंह्रपे । क्षेत्रोत्पादनपरा- यत्ते क्षेत्रानामुत्पादपरतन्त्रे । परायत्ताप्रभादवं चमाहेतुमुख- मुभयवापि । दृत्यर्थः ॥

¹ There are, according to the Comm., two acceptable readings: sa tvām nāçayati, sattvān (=sems-can) nāçayati. There is no obvious difference in the Ms. between tva and ttva.

² As the aprasada is a cause of vinaça. Cp. supra ad V, 80.

^{8 &}quot;Yo yasminn aprasannacittah, na tasminn ev äprasannacittas, tatkleçeşu tv aprasannah." Such I take to be the meaning of the sentence.

प्रजाकरमतिकता नोधिचर्यावतारपञ्जिका।

208

प्रतिमाद्युपघातकारिषु श्रद्धावशादपि प्रतिघित्तं नोत्पाद-यितव्यमित्याइ ।

प्रतिमास्तूपसडमेनाशकाकोशकेषु च। न युज्यते मम देषो बुडादीनां न हि व्यथा॥ई४

गणका विकोपयितारः । त्राक्षोणका दोषबुद्धा वैरूषाभिधायिनः । तेषु न युक्तो मम देषः । कुतः । यसादुद्धादीनां
बोधिमचार्यश्राद्धकप्रद्येकबुद्धानां वितथाभिनिवेणप्रस्तात्मग्राहनिरुत्तेरभिष्यङ्गाभावाच यथा चित्तपीडालचणं दोर्भनस्यं
नास्ति । इति भावः ॥ श्रतः प्रतिमादिविनाणकेषु देषचित्तं
गि नोत्पाद्यितयं । तथा विरुद्धधर्मकारिषु कर्णेव तु युच्यते तेषु
साधूनां । श्रन्यथा तत्र विशेषाभावात्पापमेव केवलसुपजायते ।
यदि पुनर्धमंतो निवारियतुं ग्रक्यते । तदा न दोषः ॥
यदि पुनर्धमंतो निवारियतुं ग्रक्यते । तदा न दोषः ॥
यदि पुनर्धमंतो तदि विनिवा (१४०) विभिन्न । इत्याह ।

15 गुरुसालोहितादीनां प्रियाणां चापकारिषु। पूर्ववत्प्रत्ययोत्पादं दृष्ट्वा कोपं निवार्येत्॥ ६५

गुरवो धर्ममार्गोपदेष्टारोऽकुभन्नपचनिवर्तयितारः। मानो-

¹ Cp. Brahmajālasutta, I, J, 5: "Brethren, if outsiders should speak against me, or against the Doctrine, or against the Order, you should not on that account either bear malice, or suffer heart-breaking, or feel ill-will. If you, on that account, should be angry and hurt, that would stand in the way of your own self-conquest" (Rhys Davids).

² The compound is new.

हिताः मोदरा । श्रन्थेऽपि ज्ञातिमगोत्रवान्धवादयः । तेषामपकारिषु । तथा प्रियाणां प्रेमस्थानानां चापकारिषु कोणं
निवारयेत् । दित संबन्धः । कथं पूर्ववत्प्रत्ययोत्पादं दृष्टा ।
यदुकं ये के चिदपराधाञ्चेत्यादिना । श्रतः सर्वेऽप्यमी पूर्वकमेर्गपजनितमेव फलसुपशुञ्चते । नात्र कञ्चित्पतीकारहेत्रस्ति । ।
तदनेन यथापरसमये देवगुरुदिजातिमातापित्प्रस्तीनामर्थे पाणं
कुर्वतोऽपि न दोष दित मतं । न तथेहाभिमतिमत्युकं भवति ।

किं चेदमपि वस्तुतत्त्वं मनिमकुर्वता न मत्त्रेषु चित्तं दूष-चितव्यभित्याह ।

चेतनाचेतनकता देहिनां नियता व्यथा। 10 सा व्यथा चेतने दृष्टा समस्वैनां व्यथामतः ॥ ६६

समस्तकार्यस्थान्यस्थिति काभ्यां जनकलेनावधारितं सामग्रीलचणं कारणं । सा च सामग्री वस्तुधर्मतया का चिक्क चित्समर्थस्वभावा । तत्र चेतनेन कता इस्तपादादिप्रहारेण । श्रचेतनेन दण्डग्रस्तरोगादिना । तत्रापि चेतनावद्यापारोऽस्त्र्येव । 15
साचात्पारम्पर्यक्रतस्तु विग्रेष: । स्वयमेव यदृच्क्र्या वा लोष्ट्रसुद्याद्यभिघातजनिता वा देहिनां ग्ररीरिणां नियता स्था
नियमेन समुत्पद्यते । नान्यदितो स्थाकारणमस्ति ॥ सा चैवं
दिविधकारणसामग्रीप्रसूतापि चेतने सविज्ञानके काये दृष्टा
प्रमाणपरिनिश्चिता । श्रतस्तदेव तद्त्यत्तिस्थानं । नान्यत् । 20

¹ See supra VI, 15.

² I cannot give reference but to V, 84.

³ Minaev has: vyathām manah—See the Commentary

२०६ प्रजाकरमतिकृता बोधिचर्यावतारपञ्जिका।

भवेतने वेदनायोगात्। ततो यद्यस्थोत्यित्तस्थानं तत्त्वेव भवित । नान्यच । यथा पद्धे पद्भजं न स्थले ॥ त्रतोऽस्मान्या-यात्समस्य महस्वैनामनन्तरकथितो [74]भयक्षपां यथां॥

मोहादेकेऽपराध्यन्ति कुष्यन्यन्येऽपि मोहिताः । ब्रूमः कमेषु निर्देषं कं वा ब्रूमोऽपराधिनं ॥ ६७

त्रात्मात्मीयग्राहाभिनिवेग्रविपर्यामादेने ने चिद्पराध्यन्ति दण्डादिना । समाक्रोग्रादि वा वदन्तः सदोषमात्मानं कुर्वन्ति । अस्ये पुनस्तदपराधेन कुर्यन्ति रूथन्ति । विमोहिता मोहादेव खक्ततकर्मफलसंबन्धमननुसरन्तोऽविद्यावरणात् । प्रतिताङ्ना-क्रोग्रादिकमारभन्ते ॥ दत्यं ब्रूमः कसेषु क्रोग्रराचमावेग्र-वगौकतेषु निर्दीषं । कं वा ब्रूमोऽपराधिनं दोषवन्तं । उभये-षामपि माधारणदोषलात् ॥

15 द्रमपि चातागतमेव चिन्तयता प्रतिघचित्तं निवर्तियत-व्यमित्याच ।

कस्मादेवं क्रतं पूर्वं येनैवं बाध्यसे परैः। सर्वे कर्मपरायत्ताः कोऽइमचान्ययाक्रतौ॥ ६८

¹ Ms.: kathitabhaya°; ubhaya from the Tibetan.

² So Min.—According to the Commentary : anye vimohitāh.

³ M, L2: kāmeşu.

⁴ Ms.: vadataḥ—Tib.: brdeg-pa am brgyad-bkag smra-bai=tāḍanaṁ nigrahaṁ vā vadantaḥ...

कसात्कारणात् किमित्येवमेतत्मलं हेतुकर्म कृतं। येनेति लोकोक्तिरेषा । यदित्यसार्थं यदेवं । यदि वा येन कर्मसा-मर्थेन हेतुना । त्राक्रोग्रवन्धनताडनादिभिः वाध्यसे पौडासे परेरन्येः । नतु यदि नामैवं तथापि प्रतीकारो युक्त द्त्याह सर्व द्रत्यादि । सर्वे दुःखहेतवः कर्मप्रत्ययोपजनितप्रवत्तयः । दति इ कोऽहमचान्ययाक्रतौ तत्मलनिवर्तनाय । न कश्चित् । फलदा-नोन्मुखस्य कर्मणः केन चिन्निवर्तयितुमग्रक्यतात् ॥ दृदं पुनरच युक्तस्वपमित्याह ।

एवं बुद्धां तु पुर्ण्येषु तथा यतं करोम्यहं। येन सर्वे भविष्यन्ति मैचित्ताः परस्परं॥ ६६ 10

एते सत्ताः कर्मक्षेणपरायत्ताः परस्परमसमञ्जसकर्मकारिणो निवर्तियत्मणक्या दति । एवं बुद्धा ज्ञाला पुनः
पुष्णेषु कुणलेषु कर्मसु तथा यत्नं करोम्यहं । तेन प्रकारेण
वीयं समार्भे । येन तथाविधं सामर्थे [758] प्रतिलभ्य सन्तार्गे
प्रवर्तिताः सन्तः सर्वे मैचित्ता हितसुखविधानतत्पराः परस्पर- 15
मन्योन्यं भविथन्ति ॥

द्रोहित्तं विनिवर्त्यं प्रियवस्त्रपघातकारिणि सौकिकोदा-इरणेन देषं निवर्तयेदिति स्नोकदयमुपदर्भयन्नाहः।

¹ Tib.: hjig-rten-pai smra-bai thsul-lo.

² Tib. Text-translation: bdag-gis hdi-la ci-ste bkon?=aham atra kim vairi?

⁸ Tib. mthon-nas = drstva.

प्रजाकरमतिकता बोधिचर्यावतारपञ्जिका।

205

5

दह्ममाने यहे यददिमर्गत्वा यहान्तरं।
त्यादी यच सच्चेत' तदाक्षष्यापनीयते'॥ ७०
एवं चित्तं यदासङ्गादह्मते देषविज्ञना।
तत्क्षणं तत्परित्याच्यं पुण्यातमोदाहणङ्कया॥ ७१

एकसिन् ग्टहे ऽिमना दह्ममाने यथा तसाहुहादन्यहुई

ग्रहान्तरं गला। श्रिश्चित्र हणकाष्ठादौ सच्चते लगित।
तदन्तर्गतमन्यदिप वस्तु मा धाचौदिति ग्रङ्गया। तदाङ्गय्यापनीयते प्रथकृता निर्धार्यते। दित दृष्टकमं प्रञ्जतेऽपि योजयन्नाह। एवसुक्तोदाहरणन्यायेन चित्तं मनो यस्य वस्तुन
विश्वास्त्रा दह्यते परितप्यते देषविक्तिना प्रतिघानलेन
तदासङ्गस्थानं वस्तु तत्चणं न कालान्तरपरिलम्बेन परित्याच्यं।
तत्राभिनिवेग्यः परिहर्तव्यः। किं कारणं। पुष्पस्थात्मा ग्ररीरं
पुष्पस्कन्य दिति यावत्। तस्थोक्तकसेणोद्दाहः परिचयो मा
भ्रत्। श्रन्यया ग्रहान्तर्गतपदार्थवत् प्रदेषविक्तिस्तमिप दहेत्॥

श्विप च। लाभ एवायं स्त्र्यो यन्मनुख्यदुःखेर्नरक्षकलं कर्म
विपच्चते। दिति प्रतिपादयन्नाह।

मारणीयः करं छित्ता मुक्तश्वेत्किमभद्रकं। मनुष्यदुःखेनरकान्मुक्तश्वेत्किमभद्रकं॥ ७२

¹ Minaev: sajjeta; Ms.: sahyeta. Tib.: rtsva-sogs gan la mched-byed-pa.—mched-par-byed-pa = ausbreiten, weithin verbreiten (Schmidt).—Mched-pai me = eine Feuersbrunst.

² Minaev: tathākṛṣya; but L², M: tadāko; Tib.: de-ni phyun-ste don'-yin.—Phyun-ba (hbyin)=avakṛṣta, nirvāsita.

यो हि मारणमहित स यदि इस्तमानं किन्ता सुचते।
तदा न का चित्रितिरस्थ। प्रत्युत स्वश्रसामात्मानं मन्यते।
प्रत्यस्पमिदं मरणदुःखात्करच्छेदनदुःखमिति। तथा योऽपि
मनुख्यदुःखं ताड़नवन्धनितरस्कारादिकतमनुभूय नरकदुःखादिसुक्तो भवति। तस्यापि न किं चिद्रपचीयते। न किं 5
चिद्दिदं दुःखं नरकदुःखात्। सुखमेव तत्। ततो यदि विच[75] चण: स्थात्। तदा सौमनस्यमेवान युक्तमस्य॥

श्रथापि स्थात्। न मया स्वस्पमानेऽपि दुःखे चमा कर्तुं प्रकात इति। श्रवाह।

यद्येतन्माचमेवाद्य दुःखं सोढुं न पार्यते। 10 रित्नारकव्यथाहेतुः क्रोधः कसमान वार्यते॥ ७३

³खटचपेटलोष्टा दिपहारकतमीषना निष्मि दुःखिमदानीं भोढुं मिर्षितं न पार्यते न प्रकाते। तदच भवन्तं पृच्छामः। यद्येवमेव तद्यं नारकदुःखमंवर्तनीयः क्रोधः कोपः कस्मात्कार-णान्न वार्यते। श्रयमेव द्यतितरां नरकेषु दुःखदायक दति 15 दुःखभीह्णणमेव क्रोधं] निवर्तयितं युक्तं स्थात्॥

किंच। यद्यपि सोढुं न प्रकाते तथापि तद्धेतुककर्म-संभवादनिच्छतोऽपि दुःखमापतिययति भवतः। न च किं चित्पालमुत्पत्यते।

¹ Ms.: na kadā cit.

² Tib.: des-na: tasmāt.

⁸ capeta, Apte: The palm of the hand with the fingers extended; khataka=the half-closed hand,-khata given in P.W. from Lexx, only.

२१० प्रचानरमतिकता बोधिनयीवतारपञ्जिका।

मर्षणात्पुनस्रस्य महार्थनाभी भविस्थतीति हत्तद्वेन भिन्नियत्मारः

कोपार्थमेवमेवाहं नरकेषु सहस्रगः।
कारितोऽस्मि न चात्मार्थः परार्थो वा कतो मया॥ ७४
न चेदं ताहणं दुःखं महार्थं च करिष्यति।
जगदुःखहरे दुःखे प्रीतिरेवाच युज्यते ॥ ७५

कोपनिमित्तमेव। एवमेव निष्मलभेव। नरकेषु यंजीवा-दिषु। महस्रगः श्रनेकमहस्रवारं। श्रहं कारितः केदनभेद-नपाटनादिकारणाभिः पीड़ितः। एवं दुःखमनुभवतापि मया 10 न च नैवातमार्थो दृष्टादृष्टफलसाधनः कृतो निष्पादितः। परस्थान्यस्य वार्थः सुखविधानलचणः। इति निष्पयोजनमेव नारकदुःखमहस्रगःपरिभवो जातः।

तदद्यापि न तथैव ममामहिष्णुता युक्तेत्याह । इदं दुःखं नैव तादृग्रं यादृग्रं नरक्षमुद्भवं । श्रय च महार्थं मर्वमल
15 हितसुखविधानसृतं बुद्धलं साधिययित । श्रतो जगतो दुःखहरे चिजगत्पर्यापन्नमर्वसत्त्वस्वदुःखप्रग्रमनकरे दुःखे प्रौतिरेवाच युच्यते नाह्यिरिति भावः॥

पर[762]गुणश्रवणेयामिलप्रचालनायाह ।

¹ Tib. hdod-pai don-du, as if : kāmārtham.....

² kārīta = pīdita.—Tib.: myos gyur kyan; kyan points to a reading: kārīto' pi.—myos, wrongly for myons?—myo-ba = mada.

⁸ Quoted ad IV, 39.

यदि प्रीतिसुखं प्राप्तमन्यैः स्तुत्वा गुणोर्जितं । मनस्त्रमपि तं स्तुत्वा कस्मादेवं न हृष्यसि ॥ ७६

गुणाधिकं सुला यदि प्रीतिसुखं कैश्वित्याप्तं। तदा हे मनः
लमपि तहुणसंवर्णने[न] किमिति हर्षसुखं नानुभविष । किमकाण्डमेव तदीर्थ्यानलञ्चालायामात्मसंतानिमन्धनीकरोषि ॥
ननु सर्वसुखमासङ्गात्मतया निषिद्धमेव सेवितं। ततोऽहं

सर्वसुखवैसुखादिदमपि नोपाददे। वच्छिति हि।

यत्र यत्र रितं याति मनः सुखिनमोहितं। तत्तत्सहस्रमुणितं दुःखं भूलोपतिष्ठते ॥ इति ।

आह ।

10

द्दं च ते हृष्टिमुखं निरवद्यं मुखोद्यं। न वारितं च गुणिभिः परावर्जनमुत्तमं॥ ७७

न हि सर्वे हृष्टिसुखमपाद्यतं । श्रिप तु यत्सावद्यमसुश्रस-हेतुः । दूदं च पर्गुणाश्रयं हृष्टिसुखं निरवद्यं तव । न चासुश्रसहेतुः । श्रतः सुखोद्यं सुखस्थोद्यो ऽस्मादिति द्वला । 15 श्रत एव न वारितं च गुणिभिर्भगवच्छासनविधिज्ञैः । श्रयमपरो

¹ Minaev: guņārjitam; M. L²: gaņorjitam.—Ūrjita=adhika of the Commentary.

² Ms. : samvarnnena.

⁸ Atmasamtāna = ātmabhāva = ātmā; the self in his everlasting evolution.

⁴ Mss. : yatra tatra

⁵ VIII, 18.

⁶ Ms.: °sukham maya k°; Tib.: dgag-pa=nisiddha.

ऽस्य गुणः । यत्परावर्जनमुत्तमं परगुणेषु प्रीत्या । गुणेस्वेव-मयममत्परीति मन्यमाना श्रन्थेऽपि मला श्रावर्जिता भवन्ति ॥ श्रतो युक्तमेवाच प्रीतिसुखसुपादातुं॥

स्थादेतत्। न परग्रणेषु ममाचमा का चित्। किं तर्षि त्रावत्तस्यैव सुखमेतदिति मया सोढुमगकामिति। श्रवादः।

तस्यैव सुखमित्येवं तवेदं यदि न प्रियं। स्रतिदानादिविरतेर्द्वष्टादृष्टं इतं भवेत्॥ ७८

तस्वैव स्तुतिकर्तुः सुखिमिति । एवमनेनाभिप्रायेण भवतो यदीदं परगुणस्तुतिप्रतिमसुद्भवं सुखं न प्रियं। तदातिमंकटे 10 पिततो ऽसि । कथं। स्रतिदानादिविरतेः । यदपि च भवतः खात्मसुखिनिमत्तं खस्त्वादिषु स्रतिदानं कर्ममूख्यदानं। तथोपकारिणि प्रत्युपकारकरणं। द्रत्यादेविरतेवैभुख्यात् । तदपि न कर्तव्यमेव स्थात्यरसुखिवदेषिण[ा] [76]। यतस्ते नापि तस्य सुखमेव मंपत्यते । ततो दृष्टमेहिकं फलं। श्रदृष्टं पारलोकिकं। उभयमपि हतं भवेत्यरसुखभंपद्मिषणां ॥ किं च । मिथ्योत्तरमेवेदं भवत दति प्रतिपादयन्नाह ।

स्वगुणे कौर्त्यमाने च परसौखमपौच्चिस । कौर्त्यमाने परगुणे स्वसौखमिप नेच्चिस ॥ ७९

¹ Minaev:...virate dṛṣṭa°. The first line is translated in Tib.: gzhan yań de-ltar bde gyur zhes, gal-te khyod bde hdi mi hdod: anyo' py evaṁ sukhī iti yadi tava sukham idaṁ na priyam.

² Ms. sampadyam.º

यदि कश्चिद्भवतो गुणमुदीरयति । तदा तस्य परसानिष्ट-मपि मौस्थमिच्छमि । त्रथ परगुणाननुवर्णयति । तदा पुन-रीर्थाशन्यवित्यमानमानमः स्वमौस्थमपि नेच्छमि । त्रासां तावत्परमौस्थमित्यपिशब्दः । तस्मात्परसुखमंपदीर्थेव भवतो । न स्वावकसुखामहिष्णुता ॥

5

यदुक्तं।

तस्यैव सुखिमित्येवं तवेदं यदि न प्रियं। दति। वित्रेषणदूषणमाह।

बोधिचित्तं समुत्पाच सर्वसत्त्वसुखेच्छया। खयं लब्धसुखेषच कस्मात्सचेषु कुप्यसि॥८०

इदमितगर्हितमेव विशेषेण ममुत्पादितबोधिचित्तस्य यत्पर-मुखमंपदमहिष्णुता नाम। यतः मर्वमलास्त्रीधातुकान्तश्वराः ममलसुखमंपत्तिमंतर्पिता बुद्धलमधिगम्य मया कर्तव्या इति मनसिकारेण बोधिचित्तमुत्पाद्यते । तदुत्पाद्य कस्मात्मलेषु कुष्यते। श्रद्येदानीं। किंभ्द्रतेषु प्रमादस्थानेषु स्वचित्तमभिप्रमाद्य 15 स्वयमात्मनेव प्राप्तसुखेषु। इत्यकरणीयमेव तत्परसुखेवेसुस्थिचित्तं वोधिसल्स्थेति भावः॥

यः पुनक्त्यादितबोधिचित्तो ऽपि परस्य नाभसत्कार-

¹ Ms :.. parah saukhyam.

² VI, 78.

³ Ms.: utpādayitum.

संपत्तिमभिसमीच्य तदीर्थाकषायित इदयस्तेनैव गोकेन दह्यते। तस्य परिभाषणार्थमा ह ।

वैलोक्यपूज्यं बुद्धत्वं सत्त्वानां किल वाञ्छिस। सत्कारमित्वरं दृष्टा तेषां किं परिदृह्यसे ॥ ८१

प्रथ वा स्थादेतत्। न खल् मया तस्खमेव न स्थाते। 5 किं तर्हि तद्झावितान्यगुण्यवणाभिप्रसन्नमानसः ति[77º]षा-मुपनामितं जाभसत्कारमित्यचार । चैजोक्येत्यादि ।

चयो लोका एव। कामरूपारूपधातुलचणा[°]। लोक-प्रसिद्धा वा खर्गादिखभावाः । चैलोक्यं । तत्समुदायो वा । 10 तस्य पूजामईतीति पूज्यमभ्यर्चनीयं। अनेन पर्वातिगायिलं प्रतिपादितं । तथाभृतं बृद्धलं मलानां किल वाञ्क्सि । किले-त्यनेन विपर्ययं दृष्टाक्चिं प्रकाशयति। सत्कार्मित्यपलचणं नाभमपि। ग्रेषं सबोधं।

नासमिसंधायाह ।

पुष्णाति यस्त्वया पोष्यं तुभ्यमेव ददाति सः। 15 कुटुम्बजीविनं लक्ष्वा न हृष्यसि प्रकुप्यसि॥ ८२

¹ Minaev: parivrjyase; but Tib. (gdun-par byed) confirms the reading of L2, M.

^{2 ...} cravanad abhio ... ?

^{8 ...}labhasatkaram na mṛṣyate.

⁴ It is rather strange that the stanza is introduced by two prefatory sentences.

⁵ The same reading (arūpyadhātu) occurs M. Vyut. 155 (corrected in PW.K.F.

⁶ Tib.: gñen-gyis htsho-ba = kutumbena jīvan—Cp. Pāli.

10

15

लया पोषणीयं प्रियपुचकादिकं लदीयं यः पुष्णाति स तुभ्य-मेव ददाति। तवैव तेनोपचयः क्षतो भवेत्। अतस्त्रलुदुम्ब-जीविनं । लदीयं सुदुम्बं जीवयति यस्तं तथाविधं पुरुषं सन्धा प्राप्य प्रद्यस्य न काकां पृच्छति। प्रसुप्यसि न प्रद्यस्यसे चेत्यर्थः। तथा प्रकृतेऽपि येन सर्वसत्ता आत्मीयत्वेन ग्रहीता- क् सास्य तसुर्खेः सुखमेवोचितमिति॥

खादेतत् । बुद्धलमेव लया तेषां प्रतिज्ञातं । न तु पुन-रन्यसुखमित्याप्रज्ञाह ।

स किं नेच्छिति सत्त्वानां यस्तेषां बोधिमिच्छिति। नन्तेतद्वि न सम्बक् । यस्तात्।

जगदद्य निमन्तितं भया सुगतलेन सुखेन चान्तरां।

दति प्रतिज्ञातं। भवतु नामैवं। तथापि यः समुत्पादितबोधिचित्तस्तेषां सत्तानां बोधिं बुद्धलिमच्छिति स किमन्यस्नौकिकसोकोत्तरमर्थजातं नेच्छिति। श्रथ नैविमिखते। तदा

बोधिचित्तं कुतस्तस्य यो उन्यसंपदि कुप्यति॥ ८६

बोधिचित्तं कुतस्तस्य मिथ्येव बोधिचित्तप्रतिज्ञस्य। कस्य। यो उन्यमंपदि कुष्यति । इतर्विश्वतौ लाभसन्कारप्रस्तायां।

बोधिचित्तमपि हीयते द्वाह।

¹ Ms. tem ku°; but Tib. khyod-kyi.

² Ms. kātkā or kākvā. Tib. has: zhes zur-gyis hdri-bao=indirectly (Jäschke). See Apte s. voc. kāku and infra ad VII, 19.

³ Supra III, 33.

⁴ Sampad = hbyor-ba.

प्रजाकर्मतिकता बोधिचर्यावतारपञ्जिका।

२१६

इति मर्मचोदना बोधिसत्तस्य कुग्रजनर्मनिष्टित्ति [776] हेतु:॥
श्रीप चापरस्य जाभसत्कारसंपदभावे ऽपि न भवतस्तद्भाव-संभवः। तिक्तमकारणमेव तिद्देषिणात्सघाताय यतः क्रियते इति प्रतिपादयन्नाह ।

यदि तेन न तल्लव्यं स्थितं दानपतेर्धहे । सर्वथापि न तत्ते ऽस्ति दत्तादत्तेन तेन विं॥ ८४

यदि नाम तेन तवाचमाविषयेण मच्चेन तद्दीयमानं वस्तु न लक्षं। तथापि स्थितं दानपतेर्ग्यहे। भवतस्तु किं तस्माच्चातं। मर्वथापि तेन लब्धेन ग्रहावस्थितेन वा न तदस्तु तवास्ति। 10 इति दत्तादत्तेन तेन किं। न किञ्चित्पयोजनं भवतः। श्रत-स्त्रवोपेचेव युक्ता विदुषः॥ किं च। इदमपि तावत्परि-भायतामिल्पर्पर्भयन्नाह।

किं वारयतु पुर्ािन प्रसन्नान् स्वगुणानय। समानो न यह्हातु वद केन न कुप्यसि॥ ८५

15 यो ऽसावतिप्रसन्नैर्दायकदानपतिभिर्जाभसत्कारैः पूज्यते । स किं वारयत पुष्णानि पूर्वजन्मकतानि विपाकोन्मखानि

¹ Tib. does not translate marman (See Çikṣās. Index s. voc.). codanā = gnod-byed-pa. Query: bādhana.

² Minaev has: prasannāt; the reading of the Commentary (°ān), in L², M.— The Tibetan translation agrees with the Sanskrit: bsod-nams dan ni dad-pa am / ran-gi-yon-tan ci-phyir hdor=punyāny eva prasannāç ca svaguņā vā kim tyajyante.

यद्गात्तस्य लाभसत्काराः। उत प्रसन्नान् दायकदानपतीन् वार्यतु । त्रथ खगुणान् वार्यतु । यानात्रियौषां प्रसादो जातः । मा प्रसादमप्येषां जनियय्येति। श्रय वा लभमानोऽपि तेभ्यो न खीकरोतु। ब्रहि केन प्रकारेणाच न भवतो ऽपरि-तोषः स्थात्। तत्र पुष्णादीनां वार्यितुमग्रक्यलात्। लभ्य- 5 मानाग्रहणेऽपि सर्वथापि न तत्तेऽस्तीत्यादिना बाधकस्योक्तला-दिति न कश्चित्परितोषकार्णमस्ति॥

त्रथापि खात्। परखेव लाभसत्कारमंपत्तिरस्ति न मम। त्रथ सम नास्ति तदा पर्स्थापि मा भूदित्येतनामासंतुष्टि-निवन्धन सित्या गङ्गा ह।

10

न केवलं त्वमात्मानं क्रतपापं न शोचिस। क्षतपुर्यैः सह स्पर्धामपरैः कर्तुमिच्छिस ॥ ८६

सुबोधं। यत्किञ्चिद्वःखं तत्सर्वे पापसमुद्भतं। श्रभिनाष-विघातोऽपि इ:खं। यदपि पर्येषमाणो न लभते तदपि दःखिमिति वचनात् । [781] यदच्यति ।

15

त्रभिलाषविघाताञ्च जायने पापकारिणामिति । यत्कं चित्सखं तत्सवं पुण्यप्रसूतमिति सुखाभिलाषिणा गुभे कर्मणुद्योगः करणीयः। यदच्यति । पुण्यकारिसुखेच्छा लित्यादि ॥ इति कथं क्षतपुष्यैः सह सार्धा युज्यते । सुक्रत-

¹ Minaev has : aparām; Tib. : gzhan-dag dan lhan-cig. = aparaih saha.

² Ms. duhkham api; Tib. : zhes.

⁸ See VII, 41.

⁶ Cp. VII, 42, 43.

प्रजाकर्मितकता बोधिचर्यावतारपश्चिका।

282

कियायामेव तत्सुखाभिलाषिणां स्पर्धा युक्तेत्यर्थः ॥ श्रिप चेद-मिष प्रष्ट्योऽसि ।

जातं चेदप्रियं श्चोस्वत्तुष्यां किं पुनर्भवेत्।

तव प्रचोर्देषविषयस्य लद्भिलाषमाचेण श्रप्रियमिनिष्टं

जातसुत्पन्नं चेद्यदि । एतावता भवतः किं पुनर्भवेत् । भवतः
तावत्तस्यानिष्टं । श्रन्यस्य तः भवतः वा मा वा । सस किं
चिदेव तावन्माचेण प्रयोजनमिति । पराभिप्रायमाप्रद्ध्याः ।

त्वदाशंसनमाचेण न चाहेतुभेविष्यति[°]॥ ८९

तवागंसनिमक्काभिलाष इति यावत्। तावन्माचेण न

10 चाहेतुः। न विद्यते हेतुरस्य। इत्यहेतुरर्था भविष्यति॥

त्रिप्रयस्य भवतु नामैवसभ्युपगम्यायुच्यते।

श्रत त्वदिच्छया सिइं तदुःखे किं सुखं तव।

यदि नाम तवेच्छया सिद्धं निष्पन्नमियं ग्रची:।
तथापि तस्य दुःखे समुत्पन्ने किं सुखं तव। न किं चित्।

15 निष्पृयोजनिमदमिभिपेतिमिति यावत्। नित्वदमेव प्रयोजनं
यत्तदुःखे मम संतुष्टिरित्यत श्राह।

¹ Minaev: tvan tustyā—Tib.: de-la khyod dgar ci-zhig yod = to your pleasure = à vos souhaits.

^{2 &}quot;I do not care if anybody else is unhappy or not; if my enemy be unhappy, there is something good in it for me."

³ Tib.: de-la gnod-pai rgyur mi hgyur: tatra na bādhāhetuh.

5

अथाष्यर्थी भवेदेवमनर्थः को न्वतः परः॥ ८८

एवमपि परदः खपरितोषे यद्यर्थः प्रयोजनं भवेत्। तदातः

परो ऽनर्थः को तु । तुरित्यतिश्रये । श्रयमेवानर्थौ महा-नित्यर्थः ॥ कथं पुनर्यमनर्थं दत्या ह ।

एति बिडिशं घोरं क्षेश्रवाडिशिकार्पितं। यतो नरकपालास्वां क्रीत्वां पश्चिन्त कुमिषु॥ ८६

यसादेतदिदसेवंविधं परानर्थित्तं विषयं घोरं महा-अयद्भरं। किसूतं। क्षेणवाडिणिकार्पितं। क्षेणा एव विषयेन चरन्तीति वाडिणिकास्तैर्पितसादत्तं। यतः क्षेणवाडि[786]णि-कात्। वाडिणिकादिव सत्यं। नरकपाला यसपुरुषास्तां कीता 10 पद्यन्ति पद्यन्ते। क्ष चिन्नीलेति पाटः। कुम्भिषु नरकविणे-षेषुं। तसादत्राभिलाषं मा कार्षीरिति भावः॥

यदपि सुत्यादिविघाते दुःखसुत्पद्यते तद्यविवेचयत एवेत्युपदेशयनाह ।

लुतिर्यशो ऽय सत्कारो न पुण्याय न चायुषे। 15 न बलार्थं न चारोग्ये न च कायसुखाय मे॥ ६०

¹ Minaev has: ko 'ndhataḥ paraḥ; M. has: arthataḥ paraḥ (=there is not anartha worse than this artha). According to the Tib.: anarthaḥ kas tataḥ paraḥ = de-las phuṅ-ba aṅ gzhan ci yod.

² There is in Ms. between tadā and tas some little mark of omission or interpunction: tadā 'taḥ (?).

⁸ Supported by Tib.—M. has kṣiptvā; Comm., varia lectio: nītvā.

⁴ Ms. has: arpitam dattam.

⁵ See Qiksās. 75, 8, note.

⁶ See Qiksas. 266, 9.—On arogyn, see Majjh. N. Index, stanzas.

एतावां अवेत्वार्थी धीमतः स्वार्थवेदिनः।

पञ्चप्रकार एवार्थः पुरुषार्थलेनाभिमतो विदुषां । तद्यया पुण्धं । त्रायुर्देद्धिः । बलर्द्धिः । त्रारोग्यलाभः । कायसुखं चेति । न चैतेषु क चिदुपयुज्यन्ते स्तृत्याद्यः । द्यानेव हि खार्यो भवतो भवेत्प्रज्ञावतः खार्यवेदिनः । श्रन्यस्य पुनरन्य- यापि भवेत् । दत्यात्मनि पराम्यप्रति । जानन्तु यद्यपि खार्थे तथापि खार्थवेदिनो [ऽनु]पायलात्पृथगुषद्धितः । धीमत दत्यनेन तदसङ्गत्या तद्पि कथितं ॥ ननु मानमभपि सुख-मस्ति । तेनावधारणमयुक्तमित्यवाह ।

10 मद्यचूतादि सेव्यं स्थान्धानसं सुखिमच्छता ॥ ८१

मानमं सुखं सौमनसं। तदिच्छता मंद्यं द्यूतं गणिका परदारिकं सेवनीयं स्थात्। यत्पुनः सद्धर्मादिश्रवणास्थौमनस्यं तत्पुष्णग्रहणेन मंग्रहीतमित्यदोषः। तस्मास्थौमनस्यहेत्भंवतोऽपि सुत्यादयो बाजजनानन्दकारिणो ऽनुपादेया एव। इत्यमि वाजजनोद्धापकारिणः सुत्यादय इत्याह।

यशोऽर्थं हार्यन्यर्थमात्मानं मार्यन्यपि।

के चिन्मोहपुरुषास्तादृशगुणात् स्वयमतिसुदूरे वर्तमाना श्रिप गक्रादिगुणैः स्वयमाना वन्दिजनैरन्यैय प्रोत्फुलनयनवदना

¹ Such seems to be the old reading; from a second hand : bhavan.

² Ms. pṛthagāpa^o.—Tib. has : ran-gi don çes-pai thabs-ma-yin-pai-phyir log-tu ma bstan-te=svārthajñasya anupāyatvān mithyā na darçitam.—But observe that logs-su=pṛthak.

5

यगोऽर्थिनो इस्ययादिधनं तणवत्तेभ्यः प्रयक्ति । तथा तैरेव गुणैः संसावित।त्मानामपि । भन्नवत् भन्नविजय[79º]ससुद्भृतं यभो सम जगित विपुलतां गिमस्यति । दत्यिभिनिवेभादुः सहसंग्रामारोहणान्मारयन्ति ॥ न चात्र परमार्थतः किं चित्रयो-जनं। श्रन्यत्र सिय्याविकन्यात् । दति प्रतिपादयन्नाह ।

किमक्षराणि भक्याणि सते कस्य च तत्सुखं॥ ८२

स्तुत्याद्यभिधायकान्यचराणि वर्णाः किं भच्छाणि चर्वि-तव्यानि । यश्रोऽर्थं स्टते सति कस्य च तत्सुखं यश्रःश्रवण-समुत्यं ॥ तसाद्वालकीडासमानसेतदित्युपदर्भयन्नाह ।

यथा पांशुग्रहे भिन्ने रोदित्यार्तरवं शिशुः। 10

यथा कञ्चिद्वालो धूलिमयग्रहेण परमपरितोषेण परि-क्रीडमानः । केन चित्तस्मिन् भग्ने महद्दुःखेन परिग्रहीतः पर-मार्तिपीडित दव मङ्गृहं भग्नमिति कर्षाखरं क्रन्दति । सैवोप-मात्रापि । द्रत्याह ।

तथा स्तुतियशोहानौ स्वचित्तं प्रतिभाति मे ॥ १३ 15

तथैव सुतियगोहानी विघाते स्वित्तं दुः समाविश्व प्रति-भासते विचारयतो सम [1] अचापि न वस्तुसता केन चिद्वि-

¹ Tib. has : ...ci-zhig bya = kim akṣaraiḥ kartavyam ?

² Tib. has: byis-pa bzhin = bālavat.

^{8 =} dravyasatā, paramārthasatā. The opposed notion is expressed by such words as s mvrtisat, prajūaptisat.

प्रसाम इति परामर्थे ॥ पुनरत्यथा विचारेण वासधर्म एवा-यमिति चतुर्भिः स्रोकैः पर स्थायनाइ।

शब्दस्तावदिचत्तत्वात्स मां स्तौतौत्यसंभवः'।

प्रब्दो वर्णात्मको बाह्यार्थतया ऽचित्तो ऽचेतनः। तस्य ५ भावः। तस्मात्। स प्रब्दो मां स्तौति मदीयं वर्णसुदीरयति। प्रसंभवो न संभवत्येतत्॥ तत्कथं सौमनस्यं जायते द्रत्याहः।

परः किल मिय प्रीत इत्येतत्यीतिकार्णं ॥ ६४

श्रन्यः पुरुषञ्चेतनात्मकः । किलेति निर्थकसेतद्गीत्य-रुचिप्रतिपादकं । मिथ प्रीतोऽभिप्रसन्न द्रत्येतद्भिसंधानं 10 प्रीतिकार्णं ।

तत्राणेवमसंबन्धात्केवलं ग्रिशुचेष्टितं । दति संबन्धः । त्रसंबन्धमेव कल्पयन्नाहः ।

अन्यच मिय वा प्रीत्या किं हि मे परकीययां। तस्यैव तत्प्रीतिसुखं भागो नाल्पोऽपि मे ततः॥ ८५

^{1 =} Qikşās. 266, 1, with the reading: mām stantīti na sambhavah.

² See *Gikṣās*. 266, ₂, where occurs the reading, confirmed by Tib.: ity ayain me matibhramah.

⁸ Infra p. 223, l. 14.

^{4 =} Qikṣās, 266, 6.

यस्रादन्यस्मिन् सत्ते मिय [वा] प्रीत्या पर्मतानवर्तिन्या किमायतं म[79] म । न किं चित् । कुतः । तस्येव ततो य एव प्रीतः स्तृतिकर्ता तत्प्रीतिसुखं । नान्यस्य । प्रतो भागो नान्योऽपि ईषद्पि मम ततः पर्संतानवर्तिनः प्रीतिसुखात् ॥ स्थादेतत् । परसुखेनेव सुखिलं बोधिसन्तानां । तत्किमिति 5 ततो भागो नास्तीति । प्रवाह ।

तत्मुखेन सुखित्वं चेत्सर्वचैव ममास्तु तत्। कस्मादन्यप्रसादेन सुखितेषु न मे सुखं॥ १६

यदि परसुखेन सुखिलं तदा तिसान्नत्यन⁸ प्रसादेन सुखि-तेऽपि समास्तु तत्सुखिलं। किमात्मन्यभिप्रसादेन प्रौते पर- 10 [स्मिन्] प्रौतिः । न लन्यस्मिन्प्रसादेन सुखितेषु मम सुखं॥ तस्मादचनमान्नमेवैतत्। न परमार्थ द्वति द्र्ययितुमाइ।

तस्मादहं स्तुतोऽस्मीति प्रीतिरात्मिन जायते। 'तचाप्येवमसंबन्धात्केवलं शिशुचेष्टितं॥ १७

I va is translated in the Tib.

² The Buddhists do not, of course, admit the ordinary Indian notion of self (ātman, puruṣa); everything is only the succession (samtāna) of its moments (kṣaṇa), and this succession is no real being apart from the kṣaṇas, or links of the samtāna (samtānin). The parasamtāna is the self of the paras; the svasamtāna is our ātman or ālayavijūāna.

⁸ According to Tib. : sarvatra.

⁴ Tib. = kim ātmany abhiprasanne parasmin parasmin punah prītih.

⁵ Tib. adds: sems-can-la (=sattveşu).

⁶ M. has : stuta iti .- See Commentary.

⁷ Tib : de yau de-ltar mi hthad-pas = tad apy evam anupapatieh. ...

तदन्यनिमित्ताभावात्। श्रहं स्तुत द्रत्येवं विकस्पना[त्] प्रीतिरात्मनि जायते। न पुनः परसुखेन सुखिलात्। तनापि न केवलमन्यप्रसादेन सुखिते सति। श्रात्मन्यपि एवसुत्तक्रसेणा-संबन्धादप्रत्यासत्तेः कारणात्केवलं वालविलसितसेतत्॥

म्तुत्याद्यश्च ममाप्चयमेव दधतीत्युपर्भयनाह । स्तुत्याद्यश्च मे श्लेमं संवेगं नाशयन्यमी । गुणवत्स च मात्सर्थं संपत्कोपं च कुर्वते ॥ ८८

श्रमी स्तुत्यादयो सम देमं कल्याणं। श्रथ चेमं कुणल-पचपरिपालनं। तथा मंत्रेगं संसारदुःखनिर्वेदनं। नाणयिन्त 10 प्रन्ति। 'एतावन्ताचसेव। किंतु गुणवत्सु च मात्सर्यः। श्रात्मनि गुणाधिकमानेन परगुणप्रच्छादनात्। तहुणास्हनतया वा संपदि लाभसत्कारादिखभावायां कोपं चामषे कुर्वते तेखेव। श्रहसेव गुणाधिको मसेव सर्वा संपत्तिक् चिता नान्ये-षामिति मला॥ यत एते दोषाः स्तुत्यादिषु संभविनः।

15 तस्मात्ततुत्यादिघोताय मम ये प्रत्युपस्थिताः। ऋपायपातरस्रार्थे प्रदत्ता ननु ते मम ॥ ६६°

¹ tatrāpi = ātmany api.

² So M.; L² has: stutyādayas ta; Minaev: Odayo na me.—Tib. has: bstod-sogs bdag ni gyen-bar byed = disturb the mind.

³ See infra VIII, F. Eight samvegavatthus, Visuddhim. J.P.T.S., 1893. p. 93.—samvega=skyo-ba.

⁴ So Ms.—According to Tib.: na tavano.

⁶ P.W. (K.F.) has only: möglich; but see Madhyamakavrtti (Bibl. Buddh.), p. 8, n. 3.

⁶ See V, 81.

5

तस्मात्कारणात् । स्तत्यादिघाताय विरोधा [804]य ये सत्ता सम प्रत्युपस्थिता उद्यताः । श्रपायपातो नरकादिपतनं ततो रचार्षे चाणार्थं रचणनिमित्तं प्रदृत्ता उद्युक्ता नतु ते सम । श्रतः कच्याणि सचाणि ते नापकारिण दिति ॥ लाभादिविरो-धिनि सर्वथा प्रतिघित्तमस्युकं सम । द्रत्यपद्र्भियतुमाइ ।

मुक्त्यर्थिनश्चायुक्तं मे लाभसत्कार्वन्थनं। ये मोचयन्ति मां वन्थाद्वेषक्तेषु कथं मम॥ १००

विसुक्तिकामस्य लाभसत्कारौ बन्धनिमव । सङ्गस्थानलात् । श्रयुक्तं नोचितं सुसुचोर्बन्धनं । कत्थाणिमचक्तव्यकारिणः ग्रचु- वेनाभिमता विमोचयन्ति वियोजयन्ति मां बन्धात्संसारदुःख- 10 लचणात् । लाभादिखभावादा । देषस्तेषु परमोपकारिषु प्रौतिस्थानेषु कथं मम । न युक्तमित्यभिप्रायः ॥ कथं न युक्तमित्याद्यः ।

दुःखं प्रवेष्टुकामस्य ये कपाटत्वमागताः । बुद्धाधिष्ठानत दव देषस्तेषु कयं मम ॥ १०१ 15 खाभगत्काराभिव्यङ्गप्रमङ्गात् । संगारदुःखैर्निमोक्तुकामस्य । ये सत्पुक्षविशेषाः कपाटलमणदारलमागताः । कुतः । बुद्धा-नामधिष्ठानतोऽनुभावादिव । देषस्तेषु कथं मम ॥

¹ kapāţa = sgo-hphar = board or plank of a door.

Apadvāra = Seitenthür, Hinterthür (Böhtlingk) = sgo-glegs = board or plank of a door.—According to the Commentary, we have to read: duḥkhān nirmoktukāmasya.—But the first clause: lābhasatkāra°, plainly agrees with the traditional text.

कुग्रजापवातकारिक्षिप देवं निवारयन्नाइ।
पुरायविद्यः क्रतोऽनेनेत्यच कोपो न युज्यते।
स्रान्या समं तपो नास्ति नन्वेतत्तद्पस्थितं।॥१०२

कु ग्रलविघातः क्रतोऽनेन । द्रत्येवं मनिस निधाय अव 5 पुष्णविघातकारिणि देषो न युष्णते । कस्मात् । यतः चान्या तितिचया समं तुन्त्यं तपः सुक्रतं नास्ति सर्वग्राभक्षमं हेत्लात् । न च चान्तिसमं तप दति वचनात् । ननु तदेवेदमयलत एवोपस्थितसुपनतं । पुष्णविष्नकारिच्छलेन पुष्णहेतुसंनिधेः ॥ तच प्रदेषे लात्मनेव पुष्णविघातः क्रतो भवेदित्याह ।

ग्रथाहमात्मदोषेण न करोमि श्वमामिह। मयैवाच क्रतो विघः पुण्यहेतावुपस्थिते॥ १०३

श्रथ यद्यात्मन एव दोषेणामहिन्णुतात्मकेन न करोसि [80] चमां चान्तिमिह विष्नकारिणि। तदा मयेव न पुन-रन्येन। श्रव पुर्णे। कतो विष्नः। कुतः। पुष्णहेतौ पुष्णवि15 घातकारिलेनाभिमते। उपस्थिते मंनिहितीस्ते। श्रवेत्यस्मिन् पुष्णहेताविति वा मंबध्यते॥

यदि पुष्णविघातकारी कथमसौ पुष्णहेतुर्यावत्स एव विघ्न इत्याह।

I Minaev has : na tv etad

² See supra VI., 2 (Dhammapada, 184).

⁸ I would take the meaning of the stanza as follows: nanu tad eva kṣān-titapas tena vighātakāriņopanatam.—But according to the Commentary: tad etat = kṣāntitapas.

यो हि येन विना नास्ति यिसंश्व सित विद्यते। स एव कार्णं तस्य स कथं विद्य उच्यते॥ २०४

यो आवः कार्याभिमतः। येन कार्णाभिमतेन विना नास्ति। तद्यतिरेके न भवति। स एव यङ्गावेन भवति। नान्यः कारणं जनकस्तस्य कार्याभिमतस्य। तदन्वययतिरेकानुविधा- ⁵ नात्। एवं प्रकृतेऽपि स जनक एव कयं तस्य जन्यस्य विष्न उच्यते। विघातद्वेत्रसभिधीयते। तथाविधेऽपि तथा यवद्दारं कुर्वतो नास्ति विप्रतिपत्तिः॥

उन्नसेवार्थे दृष्टान्तोपदर्भनेन व्यनं सुर्वसाह।

न हि कालोपपन्नेन दानविद्यः क्रतोऽर्थिना। न च प्रवाजके प्राप्ते प्रवच्याविद्य उच्यते॥ १०५ 10

न यस्रात्कस्य चिद्दानपतेर्दित्माकास एव संप्राप्तेनार्थिना।
याचनकेन । दानविष्ठः क्वत द्रत्युच्यते। यतः स कारणमेव
दानस्य। तथा कस्य चित्रव्रजित्कामस्य प्रवाजकसमवधान ।
प्रवच्या संवरादिग्रहणस्वभावा। न च तस्या विष्ठ उच्यते।
प्रवित्त कारणमेव स तस्यास्तमन्तरेण तस्या त्रसंभवात्। एवं 15
प्रकृतेऽपि द्रष्ट्यं॥

¹ Definition of the kāraņa by the classical notions of anvaya and vyatireka

² M. has: na hi pra0.—According to the Commentary: pravrajakapraptih.

⁸ Yācanaka, in P.W. from Kārandavyūha.

^{*} The Ms. by a second hand: tasyā naiva vighna.

श्रिप च चान्तिहेत्रतिदुर्जभ दति तत्समागमे प्रीतिरेव युज्यत दत्युपदर्भयन्नाह।

मुलभा याचका लोके दुर्लभास्त्वपकारिणः।

श्रतिप्रचुरप्राप्तिका याचनका लोके धर्वच धर्वेषां दौयमान-ग्रहणावैमुख्यात्। न तु पुनरपकारिणः। श्रतक्ते दुर्लभाः ग्रत-महस्रेषु यदि कथं चित्कि श्वित्थादा न वेति। कुतः पुनरेत-देविमित्याह।

यतो मे उनपराधस्य न कश्चिद्पराध्यति ॥ १०६ व्यक्तादन [814] पराधस्य निष्टत्तपरापकारस्य मम निर्नि10 मित्तं न कश्चिदेकोऽपि श्रपराध्यति । नापकरोति । कर्मणि

षष्टी । एवमतिदुर्सभतया पर्मोपकारित्वाचाभिनन्दनीय एवाप-कारीत्याच ।

श्रश्रमोपार्जितस्तसाहृ हे निधिरिवोत्थितः। बोधिचर्यासहायत्वातस्पृह्णीयो मम रिपुः॥ १०७

यसात्कथं चित्रायने अपकारिणः। तसाङ्गृहे प्रादुर्भतो निधिरिव अममन्तरेणैवाधिगतो रिपुरिभ लाषणीय एव सया

¹ This idea is sometimes insisted upon. It is asked how some people abused the Tathāgata; it is said that the wounding of the Tathāgata, with effusion of blood, is only a scholastic "casus," nobody being able to hurt a thoroughly benevolent Being. See Prof. Bendall's contribution to Mélanges Kern and M. Vyut. 271,9, quoted in loc.—The legend of Pūrņa can be quoted as a contrary instance, but the power of the aucient karma must not be lost sight of.—Beggars who ask for the blood and flesh of the giver are very difficult to meet with (Maņicūdāvadāna).

चान्तिपारमिता षष्ठः परिच्छेदः।

355

5

खात्। बोधिचर्यायां बुद्धलयंभारोपार्जने सहकारिलाच॥ एवं-विधे परसपुरुषार्थे साहाय्यं भजमानस्य प्रत्युपकार्करणमेव कृतज्ञतया सम युक्तमित्युपदर्भयन्नाहः।

सया चानेन चोपात्तं तस्मादेतत्स्रमाफलं। एतस्मै प्रथमं देयमेतत्पूर्वा स्मा यतः॥ १०८

यस्रादसौ तत्र साहायं सुर्वन् कारणमेव न विष्नः तस्रान्यया चमामभ्यस्थता। श्रनेन चापकारं सुर्वता द्रित द्राभ्यासेवोपार्जितं। एतदिति यस्य साधनाय साहायं भजते।
चमाफलं धर्माधिगमलचणं। एतसौ धर्मसहायाय प्रथममग्रतो
दातव्यं मया द्रित प्रणिधातव्यं। यथा मैत्रीवलेन वोधिसच्चेन 10
प्रणिहितं पञ्चकानुद्ध्यां। तत्र कारणमाह। यसादितत्पूर्वा।
एष एव पूर्वे कारणं यस्थाः सा तथोका। न ह्यपकारिणमन्तरेणान्यस्थान्तिकारणमस्ति॥

युक्तमेवैतद्यदि तेनैवाभिप्रायेणासौ प्रवर्तते। केवलमप-काराभय एवायमित्याभङ्कयनाह।

श्चमासिद्याशयो नास्य तेन पूज्यो न चेदरिः। सिडिहेतुरचित्तोऽपि सडर्मः पूज्यते कथं॥ १०८

चमास्य बोधिमत्तस्य निष्पद्यतामित्याग्रयो नास्थापकारो-द्यतस्य। तेन कार्णेन कुग्रलहेत्रपि यदि ग्रचुः पूजनीयो न

¹ See Kern, Buddhism I, p. 81.

प्रजाकरमतिकता बोधिचर्यावतारपञ्जिका।

230

भवति । एवं तर्हि कुग्रजनिष्यत्तिहेतुर्निरभिप्रायोऽपि सद्धर्मः प्रवचनज्ञचणः कथं पूज्यते । सोऽपि तदाग्रयश्र्न्थलात्यूजनीयो न स्थादिति भावः [८।७]॥

त्रय सङ्घर्मस्य निर्भिप्रायतया त्रपकाराश्रयोऽपि नास्ति। त्रत्रस्य पुनस्तदिपर्ययो दृश्यते दत्याह।

अपकाराश्योऽस्थेति श्रनुर्यदि न पूज्यते । अन्यया मे कथं श्वान्तिर्भिसजीव हितोद्यते ॥११०

श्रपकार श्रामयोऽस्य मनोः। द्रत्येवमिभिषंघाय मनुर्यदि
न पूज्यते दानमानेनं मित्त्रियते। श्रन्यथेति। श्रपकारिणि देष10 चित्तमनिवार्यतः कथं मम चान्तिः। तद्पकारमसहमानस्य
प्रत्यपकारं वा कुर्वतो नैव युक्तेत्यर्थः। श्रन्यवापि कथं चान्तिः।
भिम्नजीव चितोद्यते। सुवैद्यवद्भितसुखविधायके यत्र प्रेमगौरवमेव सदा देषनिबन्धनस्य गन्धोऽपि न विद्यते॥ देषचित्तनिवर्तनाच चान्तिर्चते। तस्माद्पकारिष्येव प्रतिघचित्तं

15 निवर्तयतः चान्तिरिति। एतदेव दर्भयन्नाइ।

तदुष्टाश्यमेवातः प्रतीत्योत्पद्यते समा। स एवातः समाहेतुः पूज्यः सहमवन्मया॥ १११

यतो भिमजीव हितोद्यते वान्तिन युका। त्रतो ऽसा-द्वेतो:। तस्य दुष्टाग्रयमेव प्रतीत्य निमित्तीक्रत्य ममुपजायते

¹ Ms. has gandho, but Tib sgra=çabda.

² Ms. has: "dyate ' kṣānti.

चमा। न पुनः कस्य चिच्छुभाग्रयं। श्रतोऽसात्। स एव
यस्याग्रयं प्रतीत्योत्पद्यते चमा चमाहेतः। न त पुनर्यो वैद्यवददृष्टाग्रयः। दति पूच्यः चमासिद्याग्रयरिहतोऽपि सद्धर्मवदसौ मया॥ एतदुकं भवति। किं ममानेनाग्रयविचारेण
प्रयोजनं। श्रभिमतसाध्यसिद्धौ चेदुपयुच्यते। तावतेव ममो- 5
पादेयः स्थात्। विग्रणाग्रयफलं त तस्थैव यस्थासौ विग्रणाग्रयः। सम त ग्रुभोदयहेतुरेवायं। दति कथिमव पूजनीयो
न भवेदिति। तस्मात्यंभारोपयोगिनि हेतौ किं स्वरूपनिरूपणेन॥

एतदेव संभारहेत्लमस्थागमतः प्रसाधयन्ना[82ª]ह । 10

सत्त्वश्चेचं जिनश्चेचिमत्यतो मुनिनोदितं। एतानाराध्य बहवः संपत्पारं यतो गताः॥ ११२

संभारप्रस्तिप्रदित्तिहेतुलात्सत्ताः चेनं । बुद्धा भगवन्तस्यव चेनं । दत्येवं । त्रतो बुद्धलकारणहेतुलात् । त्रनेकप्रकारं भगवता वर्णितं । कुतः । यतो यसादितान् सत्तान् जिनांश्च । 15 त्राराध्य । त्रानुकूखानुष्ठानेन । बहवो बुद्धलमधिगम्य सर्व-लौकिकलोकोत्तरसर्वसंपत्तिपर्यन्तं प्राप्ताः ॥

स्यादेतत्। यदि नाम मला श्रिप मर्वमंपत्ति हेतवस्तथापि तथागतैः सह साधारणता न युक्तेति । श्रवाह ।

¹ See the texts (Dharmasamgītisūtra) quoted Gikṣās. 153, 7; also 155, 6 (siddhim āgatā bahavaḥ). 7 (siddhikṣetra).—On kṣetra, see supra V, SI, Friendly Epistle, st. 42 (J.P.T.S., 1886), Petavatthu, Comm., p. 7.

² Tib : rnam-pa hdis = tena prakāreņa.

प्रजाकरमतिकता बोधिचर्यावतारपञ्जिका।

सत्त्वेभ्यश्च जिनेभ्यश्च बुद्धधर्मागमे समे । जिनेषु गौरवं यदन्त सत्त्वेष्विति कः क्रमः ॥ ११३

उभयेभ्योऽपि बुद्धधर्माणां बलवैशारदादीनामागसे प्रति-लमो तुल्ये श्रविशिष्टे । उभयमपि कैतस्रति हेतुलमविशिष्ट-5 मिति भावः । श्रतः साधारणेऽपि हेतुभावे जिनेषु गौरवं यदत्तदन्न मलेषु । द्रत्येवं कः क्रमः परिपाटिः प्रेचावतां । नैव युक्तेत्यर्थः ॥

ननु च सत्तानां रागादिमजैहीनाग्रयतात् कारणलेऽपि कथं भगवत्समानता युज्यते दत्याग्रङ्खाह ।

10 श्राश्यस्य च माहात्म्यं न स्वतः किं तु कार्यतः। समं च तेन माहात्म्यं सत्त्वानां तेन ते समाः॥ ११४

यद्यपि भगवतामप[ि]रभितपुष्णज्ञानोपजनितमनुत्तरिमह माहान्यं। तथाष्युपयुक्तोपयोगिलेन हेतुभावस्य तुस्यलात्ममं माहान्यमुच्यते। तेन हेतुना ते मलाः ममा जिनैसुस्या 15 उच्यन्ते दति॥ नाच विशेषः क्रियते। यच पुनः प्रतिनिय-तात्मगतो विशेषस्तसुपदर्शयितुमाह।

२३२

¹ See Dharmasamgīti, loco laud.—The phraseology of this Sūtra is worthy of notice: sattvakṣetram bodhisattvasya buddhakṣetram yataç ca buddhakṣetrad buddhadharmāṇām lābhāgamo bhavati. It is strange that Prajñākaramati gives no reference, as he did before, to the Mahāyānasūtras evidently alluded to by his text.

² Ms. tamprati.

³ yuktā paripāţih

मैच्याशयश्च यत्पूच्यः सत्त्वमाहात्त्र्यमेव तत् । बुद्यप्रसादाद्यत्पुग्यं बुद्दमाहात्त्र्यमेव तत् ॥ ११५

सत्तेषु भैत्रित्तिविहारी पुनर्यत्यूच्यते जनैः। तत्तस्यैव भैत्याभयस्य प्रत्यात्मगतं माहान्यं नान्यस्य। तथा तथागत-मालम्ब्य खित्तं प्रमाद्यतो यत्पुष्यमु[82]त्पद्यते तङ्गगवत 5 एव माहान्यमसाधार्णं। श्रन्यस्य तथाविधगुणाभावात्॥ दत्यसाधार्णं गुणमभिधाय प्रकृतसुपदर्भयन्नाहः।

बुड्डधमागमां भेन तस्मात्मचा जिनैः समाः। न तु बुड्डैः समाः के चिदनन्तां भैर्गुणार्णवैः॥ ११६

द्दमत्र बीजं समतोपादान दत्यर्थः। परमार्थतस्तु न 10 बुद्धैर्भगविद्धः समाः के चित्सचाः सन्ति। यदि भवेयु-स्तथाविधास्तदा तेऽपि बुद्धा एव स्युः। किंभ्द्रतेः। गुणार्णवैः । गुणानामर्णवा गुणरत्नाकराः। त्रगाधापारत्नात्। तैः। पुनरपि तेषामपरमेव विशेषणमाद्द। त्रनन्तांग्रैः। त्रनन्तोऽपर्यन्तः। स्रंग्र एकदेशो ऽपि येषां गुणार्णवानां। ते तथा। तैः॥ 15

^{1 =} Çikşāş 157. γ-8. (maitrāçaya). Tib. has: byams-sems-ldan = maitryāçayayān.

² Ms. has: prasādhayato.

⁸ Ms. has wrongly: anantāmçair guṇasāgaraih—See below.

⁴ Ms. has: tegha and two illegible syllables in margin. Our reading from Tib.

⁵ Tib. points to a reading: amça eva deço'pi—The Ms. has: anga,

उत्तमेवार्थ व्यक्तीकुर्वनाइ।

गुणसारैकराश्रीनां गुणोऽणुरिप चेक्क चित्। दश्यते तस्य पूजार्थे चैलोक्यमिप न स्रमं॥ ११७

गुणेषु प्रधानानासेकराभयो ये भगवन्तस्तेषां गुणोऽणुरिष ग्रमाणुमाचोऽपि गुणकणिकापीति यावत्। यदि क चित्सच-विभेषे दृश्यते प्रतीयते। तस्य तद्गुणाधारस्य पूजानिमित्तं चैलोक्यमिप न चमं। चैलोक्यजातानि रत्नादीनि न प्रति-ह्पाणीति यावत्॥

यरीवं कथं तर्हि सत्ताराधनसुक्तमित्याह।

10 बुइधर्मीद्यांश्रस्तु श्रेष्ठः सत्त्वेषु विद्यते। एतदंशानुरूष्येण सत्त्वपूजा कता भवेत्॥ ११८

व्याख्यातमेतत्पूर्वे ॥ दतौऽपि सत्ताराधनसुचितमित्याह ।

किं च निम्छद्मबन्धूनामप्रमेयोपकारिणां। सत्त्वाराधनमुत्सृच्य निष्कृतिः का परा भवेत्॥११९

15 निश्कदम्बन्धूनामकि चिमसुह्दां बुद्धानां बोधिसत्तानां च। श्रपर्यन्तोपकारिणां। निष्कृतिः तलापकारस्य निष्क्रयणं। परि-

¹ So L.2.—Minaev has: sattvasya.—Tib.: sems-can-rnams-la.

² Minaev: orupena.

^{8 =} Çiksās. 155. 10-11.

⁴ Çikşās, has the gloss in margin: pratyupakāro buddhānām.

⁵ The Ms. has the unusual reading: tatkṛtā' pakārasya.—niḥkṛti=reparation of the offences made to the Buddhas.

चान्तिपारमिता षष्ठः परिच्छेदः।

२३५

5

ग्रोधनिमिति यावत्। किमपरं भवेत् सत्ताराधनमन्तरेण। एतदेव परं निष्क्रयणिमत्यर्थः ॥

प्रभुचित्तानुत्रू जवर्तिन एव स्त्यस्य वाञ्क्तिं सिध्यतीत्यव-गम्य सत्ताराधनसेवोपादेयमिति प्रतिपादयन्नाह ।

भिन्दन्ति देहं प्रविश्वन्यवीचीं येषां क्रते तच क्रते क्रतं स्यात्। महापकारिष्ठपि तेन सर्व कल्याणमेवाचरणीयमेषु॥ १२० व

करचरणियरोनयनखमांमानि च्छिला हिला प्रदत्तानि । चेषां [83] हितसुखिविधानाय। तथावीचीमिप परदुःखदुःखिनो 10 चेषां क्रते प्रविधान्त तत्समुद्धरणाय। प्रकृतलात् बुद्धा बोधि-स्त्याः। तत्र तेषु सत्त्वेषु क्रते क्रतं स्थात्। श्रन्थया तु कृतमिप न क्रतं भवेत्। कृतभव्दोऽयिमि प्रकृताधिकारात् साधुकरणे वर्तते। चेनैवं तेन परमापकारिस्विप न चित्तं दूषियत्यं। क्रिं तु सर्वमनेकप्रकारं कायवाङ्मनोभिवं। कृत्याणमेव हित- 15 सुखमेव विधायितयमेषु॥

उत्तमेव प्रमाधयनाइ।

¹ Ms. : niskrayanam.

² Minaev has: avīcim. See Commentary and Qikṣās.

³ The following verses down to the cloka 134 (end of the chapter) occur at Qikşās. 155. 14-157-8.

प्रजाकरमतिकता बोधिचर्यावतारपञ्जिका।

२३६

स्वयं मम स्वामिन एव तावद् यद्र्थमात्मन्यपि निर्चेपेक्षाः। ऋहं कथं स्वामिषु तेषु तेषु करोमि मानं न तु दासभावं॥ १२१

मम खामिन एव बुद्धादयः खयमेव शात्मनेव तावदिति परामर्गे। यद्धे येषां निमित्तं। श्रात्मन्यपि खकायजीवितेऽपि। जक्तकमेण निरपेचा निरिम्बङ्गास्तृणवत्परित्यजन्ति। तद्हं पुनः। तेषां स्रत्यः। तेषु सत्तेषु प्रभुपुचेव्यत्यन्तप्रियेषु कथं करोमि मानं। किमिति जानन्नेव तान् प्रतिकृत्वयासि। न

10 तु दासभावं न पुनर्दासीभ्रयाराध्यामि॥

द्तोऽपि च सत्तापकारं परित्यच्य तदाराधनसेव कर्तव्य-मित्याइ।

येषां सुखे यान्ति मुदं मुनीन्द्रा येषां व्यथायां प्रविश्वन्ति मन्युं। तत्तोषणात्मर्वमुनीन्द्रतुष्टि-स्तवापकारे ऽपक्ततं मुनीनां॥ १२२

येषां सत्तानां प्रियपुत्राणामिव पतरो सुनीन्द्रा बुद्धा भगवन्तः। सुखे कायमनोजनानि । सुदं धं यान्ति । येषां च

15

¹ Ms. has: svayam evam ao.

^{2 =} nirvyapekşā.

5

दुःखे मन्युं प्रविभान्त । श्रंपरितोषमासादयन्ति । एतचानिभ-मतलाङ्गगवतामित्यमभिधीयते । न तु वाणीचन्दनकत्वाणात्तत् । श्रावकाणामपि प्रतिघानुनयासंभवः । श्रन्यत्सुवोधं ॥ कथं पुन-स्तवापकारे सुनीनामपद्यतं स्वादित्यवाह ।

> श्रादीप्तकायस्य यथा समन्तान् न सर्वकामैर्पा सौमनस्यं। सत्त्वव्यथायामपि तद्देव न प्रीत्युपायो ऽस्ति द्यामयानां'॥ १२३

समन्तात्वर्गवयवानिभवाष्य विक्तिना प्रज्ञितिगरीरस्य यथा पञ्चकामगुणैर्न सीमनस्यं। कायिकमपि सुखं नास्ति तस्य 10 प्र[83]ज्ञिलितलादेव दुःखेनाकान्तलात्। तदत्त्तर्थेव सत्तानां व्यथायां दुःखवेदनायां न प्रीतेः सीमनस्यस्थोपायो हेत्रस्ति कपात्मकानां भगवतां॥

तस्माद्परिज्ञानेन क्षेत्रग्रहावेशवंशेन वा सत्तापकारकर्मणा यदकुश्रलसुपचितं तदपीदानीसुपसंहारदारेण वान्तीकुर्व- 15 न्नाहं।

¹ It is difficult to make out the meaning of this clause. The Tib. so far as I see, gives no help.—abhimata is correctly translated by mūės-pa.—na tu... = de-ni ste dad-can-ldan lta-bu yin-te = tac chraddhāvad-vad.—Of course: na tu.....sambhavaħ.

² Qikşās. has : mahākṛpāṇām.

³ Query: upacitam.

⁴ Tib. bçags-par-bya-ba. - (See gsor-ba) = to confess, to expiate. - The reading vyaktīkurvan seems, on palæographical grounds, inadmissible.

प्रजाकरमतिकता बोधिचर्यावतारपञ्जिका। 2३८

> तसान्यया यज्ञनदुःखदेन दृःखं क्रतं सर्वमहाक्रपाणां । तद्य पापं प्रतिदेशयामि यत्खेदितास्तन्म्नयः श्रमन्तां ॥ १२४

- यसादेवं सत्तापकारे सुनीनामपक्ततं स्थात्तसात्। पापं। अदोदानी प्रतिदेशयामि । संवेगवज्ञलसोषामेव महाक्रपाणा-मग्रतः प्रकाशयामि। पुनरेवं संप्रजानन करियामि। इत्या-यत्यां संवरमापद्ये। यदि प्रतिरूपमाचरितं तत्र मे चान्ति कुर्वन् । त्रनुकम्पासुपादाय॥
- चमिवला मांप्रतमाराधनायेत्यादिना तदेकपरायणता-10 मातानो दर्भयति।

त्राराधनायाच तथागतानां सर्वात्मना दास्यमुपैमि लोके। कुर्वन्तु में मूर्भि पदं जनौघा

विद्यन्तु वा तुष्यतु लोकनायः॥ १२५ 15

तथागतानामभिप्रेतसंपादनाय लोके लोकविषये सर्वात्मना कायेन वाचा मनमा वा दामीभावं खीकरोमि। ते ऽपि मे

¹ Qikşās, has: sarvamahādayānām.

² Gikṣās. has : duḥkhanena.

³ Qikṣās. has : te munayah.

⁴ Minaev has : kurvanti.—Our reading is supported by L2 and Qiksas.

[ऽ]प्रसादं सुर्वन्तो मस्तने पादं निद्धतु । तेषां पादं प्रसुदित-चित्तः ग्रिरसा धारयामि । श्रनेन मयि पूर्वापराधमपास्य जगतां पतिर्भगवान् संतुष्टमानसो भवतु ॥

अगवत्सु च गौरवकारिभिः सत्तेष्यनादरो न कर्तव्य इति प्रसाधयन्नाह।

5

श्रात्मीकृतं सर्विमदं जगत्तैः कृपात्मभिनेव हि संश्यो ऽस्ति । दृश्यन्त एते ननु सत्त्वरूपा-स्त एव नाथाः किमनादरो ऽच॥ १२६

सर्वत्रगधर्मधात्प्रतिवेधात् सर्वस्त्रस्मतापादनपरात्मपरि- 10 वर्तनादिना वा। श्रात्मीकृतं स्वीकृतं सर्विमदं जगत्। न किय-देव। तेर्नुद्धैर्भगविद्धः करूणामयि त्तसंतानैः। सुनिश्चितमेवै-तत्। श्रन्यथा बुद्धलायोगात्। तस्मात्मत्तस्पेण बुद्धा भगवन्त एवैते सत्ता दृश्यन्ते । तेन किमनादरो ऽत्र मूढ्[११४]चेतसां। नेव युक्त दित भावः॥

श्रनेकार्थवादिप सत्वाराधनस्य तत्रैव यतितयमित्याइ।

¹ Qiksās. : samçayo'tra.

² According to Dev. 85 and to the Qiksas. - Minaev has : droyantu etena tu.

³ Tib. omits : "traga".

⁴ See VII. 16.

^{5 (5).} The Commentary is obscure. "Nanu buddhāh sattvarūpeņa dreyante? sattvā eva nāthā iti kim sattvesv anādaraḥ." Such I take to be the meaning of the sentence.

१४० प्रजाकरमितकता नोधिचयावितारपञ्जिका।

तथागताराधनमेतदेव स्वार्थस्य संसाधनमेतदेव। लोकस्य दुःखापहमेतदेव तसान्ममास्तु व्रतमेतदेव॥ १२७

इत्ति वृद्धलमंभारलचणस्वैवं। लोकस्य दुःखापसं तद्भेतलात्ं। एतदेवेति। सर्वच सत्ताराधनमिति योज्यं॥ प्रागामिभयदर्भनादिप च परापकारवैमुख्यमेवाभ्यमनौयमि त्युदाहरणोपदर्भनेनाइ।

यथैको राजपुरुषः प्रमथ्नाति महाजनं।

विकर्तुं नैव श्रकोति दीर्घदशीं महाजनः॥१२८

यस्यं राज्ञो देशनिव[ा]िषनं निस्थाषी पुरुषो । महाजनं
नगरनिगमग्रामक्वटादिवास्त्रयं । प्रमथ्नाति विमर्दयति। स चागामिराजदण्डभयदर्शितया महाजनो वचनमावेणापि याव-दिकारसुपगन्तुमममर्थः। तेन तािंडतो ऽपि मंकुचितदित्ति
15 रेवािस्त । कस्मात्

यसानीव स एकाकी तस्य राजवलं वलं।

¹ Ms. has: °lakşaņasyāsyaiva.

² According to Tib. : apahati-hetutvāt.

⁸ dirghadarçin = mig-rgyan rin-po. -rin-po = dirgha. - mig-rgyan = distance of sight, distance at which a man can be well distinguished from a woman.

⁴ Ms. has: tasya .- Tib. : gan-gi.

⁶ Ms. : ynsya.

⁶ Vāstavya = Einwohner (P. W.)

नैव स राजपुरुषोऽमहाय एव द्रष्ट्यः। कथं पुनर्यमस-हायो न भवतीत्याह। तस्येति। राज्ञो बलमेव तस्य बलं तत्पचग्रहणात्।

तथा' न दुर्वलं कं चिद्पराइं, विमानयेत्॥ १२८

तस्मात्वभ्रमिमिष कतापराघं नापकुर्यात्। सो ऽपि न 5 यसादेकाकी।

यसमन्तरकपालाश्च क्रपावन्तश्च तदलं। तसमदाराधयेतमत्त्वान् सत्यश्चएडन्टपं यथा॥ १३०°

तस्तादाराधयेत्सत्ताम्। कुतः। यसान्तरकपाकाञ्च तदपकार्मिव प्रत्यपकारिणोऽन्व[ा]चरन्नः कपावन्तञ्च जिनादय- 10
स्तत्पचपातिनो बलं। कथिमवाराधयेत्। त्रष्टस्यं राजानं
सर्वानुष्टित्तिकरणानुजीविनो यथा। तथा॥ किं च लोकप्रसिद्धत ददसेविमहोकं। न तु पुनः सत्त्वाप्रसत्तिफलस्य राजापराधक्रतेन समानता समस्तीत्याह।

कुपितः किं न्टपः कुर्याद्येन स्यान्तरकव्यथा। 15 यत्मचदौर्मनस्येन क्रतेन च्चनुभूयते॥ १३१

¹ So Minaev .- M. has : tasmān ... ; confirmed by the Commentary,

² So L2,-Minaev has : aparadhyam.

³ According to the Comm. the second line must precede the first.

⁴ Ex conj.-MS.is illegible.

⁵ Aprasatti (compound new) = aprasada.

प्रजाकरमतिकता बोधिचर्यावतारपञ्जिका।

287

किमिति काका पृच्छति । किं तदुःखजातसुत्पादियतुं नृपतिः समर्था भवेत् । नैवेति भावः । किंस्रतं । येन दुःखजा-तेन नारकी वेदनानुस्यते । श्रतिप्र [94]

[तुष्टः किं चपितर्देचाच दु इत्वसमं भवेत् ।

गत्मत्वसीमनस्येन क्रतेन ह्यनुभूयते ॥ १ इ २

श्रास्तां भिवष्य दु इत्वं सत्त्वाराधनसंभवं ।

दु हैव सीभाग्ययशःसीस्थित्यं किं न पश्यिस ॥ १ इ इ

प्रासादिकत्वमारीग्यं प्रामोद्यं चिरजीवितं ।

चक्रवर्तिसुखं स्फीतं क्षमी प्राप्नोति संसरन् ॥ १ इ ४

10 ॥ द्रित प्रज्ञाकरमितकतायां बोधिचर्यावतारपिञ्जिकायां चान्तिपारिमता षष्ठः परिच्छेदः॥]

¹ The verse of the leaf 94 begins with the first sentence of the viith Chapter. As the Commentary of the verses 132-134 is also wanting in Tibetan, I believe that the akṣaras: atipra must be read: iti pra [jñākaramatikrtāyām...]. The translation of the last clokas occurs in the Mdo XXVI, fol. 19a, at the end. (Text alone, without commentary). Their authenticity, supported by the quotation in Gikṣās (p. 157), is confirmed by the Chinese translation.

² The Tibetan adds the following colophon: Rgya-gar-gyi mkhan -po pandi-ta chen-po su-ma-ti-kī-rti-i zhal-sha-nas dan sgra-sgyur-gyi lo-tsa-va ā-tsarya mad-pa-chos-gyi dban-phyug-gis bsgyur-an zus-pa = translated by the Indian Pandita Sumatikīrti and the Lotsava translator (?) Satyadharmeçvara.

प्रज्ञाकरमतिकतायां वोधिचयावतारपञ्जिकायां वीर्यपारमिता सप्तमः परिच्छेदः।

李李康令令

तदेवं विषचप्रतिषेधेन त्रिधा चान्तिं प्रतिपाद्य वीर्थे प्रति-षाद्यितुमार ।

एवं ख्रमो भजेदीयें वीर्ये बोधियंतः स्थिता। न हि वीर्य विना पुष्यं यथा वायुं विनागितः ॥ १

एवसुक्तकसेण चमायुक्तः चमः समिस चान्तः। भजेदीर्थं 5 वीर्यसारभेत। श्रन्यथा दुःखासिष्णुतया वीर्यस प्रसम्भिनं खात्॥ कस्मात्पुनवीर्यसुपादीयत दत्यादः। वीर्य दत्यादः। यस्नादीर्यं बुद्धलमवस्थितं। तद्धेतुकतया तदायक्तलाद्दद्धलसः। एतदिप कुतः। यस्नाच वीर्यमन्तरेण पुष्यं पुष्यसंभारोऽसि। उपलच्यसेतत्। ज्ञानमिप द्रष्ट्यं। वीर्यस्रोभयदेतुलात्। तद्- 10 नेन वीर्यात्पुष्यज्ञानसंभारौ ताभ्यां च बुद्धलमित्युक्तं भवति॥ वीर्यस्रह्मपापरिज्ञानात्पुक्किति।

¹ Minaev has: kṣamī; kṣamo, according to M., Paris-Mss. and a fragment (F.) on Palm-leave (Bendall, 1899).

Minaev has: ... vinā gatiḥ; = vinā agatih.—Cp. Kern, Lotus 139: padavīm tu vinā 'gatiḥ.—Tib.: rlun med gyo-ba med-pa bzhin.

⁸ So Ms.—Tib.: ran-gis goms-par-byas-pai bzod = svayam abhyasta kṣāntib.

किं वीर्यं कुश्रलोत्साहस्तदिपश्चः क उच्चते। त्रालस्यं कुत्सितासिक्तिविषादात्मावमन्यना'॥ २

किसेतदीर्थं नाम। श्रवाह। कुग्रलोत्साहः। यो ऽयं कुग्रलकर्मणि दानादी श्रुतादी च ससुद्यमः। तदीर्थमिभिधीयते।

श्रुकुग्रले तु कीसीद्यमेवं। विपचेणोपहतं वीर्थमनङ्गसेवाभिमतसिद्ध्य दित तिद्वपचमपनयनाय दर्भयितुमाइ। तदिपच
दत्यादि। तस्य वीर्थस्य विरुद्धो विनागाय पचो विपचः क
उच्यते। उत्तरमाह। श्रालस्थमित्यादि। श्रालस्थं कौसीद्यं।
कायमनसोरकर्मस्थता। कुत्सिते जुगुप्पनीये हास्थलास्थादावा
गि सङ्गः। विषादो विषस्ता। दुःकरे कर्मणि चित्तस्य विनिदित्तः। श्रुनस्थवसानमित्यर्थः। तेनात्मनोऽवमन्यनाऽवज्ञा। श्रुयं
तद्विपचः॥

तदालखनिषेधाय तत्कारणं तावदुपदर्भयितुमाह।

त्रव्यापारसुखास्वादिनद्रापात्रयतृष्णया । संसारदुःखानुदेगादालस्यमुपजायते ॥ ३

मंसारदु:खानुदेगादमंत्रेगात् । योऽयमयापारो निर्या-पारता । तत्र तेन वा पुखास्वादः सुखाभिरामः । स च निद्रा

15

¹ F. has: kutsitaçaktir; Minaev: kutsitāço.

² Tib.: dge-ba-la mi-spro-ba ni le-lo-ñid-do=kuçale 'nudyamaḥ kausīdyam.—Infra, le-lo-ñid=ālasya; sñoms-las=kausīdya.

^{. &}amp; See VI. 21.

⁴ Tib.: de-la an des bde-noms.....

5

च मि[85]द्वाक्रमणं। ताभ्यां मिद्वाक्रमणमपात्रयत्वणां। त्र्रवष्टस्थनाभिलाषः। तथा। त्रालस्थसुपजायत इति योजनीयं॥ यदि वा। संसारदुःखानुदेगाद्यापारः। क चिद्पि कुणल-कर्मणि न प्रवृत्तिः। तस्यात्सुखास्वादः। ततो निद्रा। तस्या- श्रापात्रयत्वणा। तथा॥

श्रतः संसारदुः खानुदेगनिवर्तनार्थिमियमच संवेगभावनासुखी-कर्तथा। इत्याच।

क्षेणवागुरिकाघातः प्रविष्टो जन्मवागुरां। किमद्यापि न जानासि खत्योर्वदनमागतः॥ ४

वागुरिका मत्यादिविधका जालिका उच्चन्ते कैवर्तादयः। 10 क्षेत्रा एव वागुरिकाः। तैराघात श्रायत्तीकतः । कथिमिति चेत्। प्रविष्टो जन्मवागुरां। निकायसभागतोत्पत्तिरेव वागुरि काजालं । तत्प्रविष्टः तदन्तर्गत दत्यर्थः। ददिमह तदात्मसात्करणे कार्णं। श्रद्यापि एतां दशां प्राप्तोऽपि स्त्योर्भुखं प्रविष्टः सन् किमिति न वेत्य। जातस्वेन्मरणमवस्यंभावीति भावः॥ 15

द्रुद्रमपरं संवेगकारणमाइ।

¹ middhäkramanam not translated in Tib.

² Minaev: āghātaḥ; M.: āghrātaḥ—Tib.: bçor-ba (hohor-ba=to hunt, to chase); ña gçor-ba=to fish.—āghrāta=* ākrānta (Böhtlingk).

⁸ Tib.: dban-du byas-pa.

⁴ So Ms.—vāgurikā = vāgurā? or rather vāgurika°?

स्वयूष्यान्मार्यमाणांस्वं क्रमेणैवं न पश्यित । तथापि निद्रां यास्येव चएडालमहिषो यथा ॥ ५

यूयं वर्गः । तत्रभवा यूय्याः । यैः मह बाल्याद्यवस्थायां कीडितहसितादिना विचरितं । तान् स्ववग्र्यान् । चण्डाला
5 नामवर्ष्यमारणीयमहिषवत् । न पश्यसि ममापीयमवस्थितिः स्थादिति ॥ श्रवश्यमिह कियत्कालं परिलम्ब्य स्ट्युरागमिष्यति । तेन तावत्कालं सुखानुभवनमेव मम युक्तमित्यचाह । यदि नामैवं तथापि नावश्यंभाविनि मरणे विश्वासो युक्तः ।

यमेनोदीस्थमाणस्य बद्यमार्गस्य सर्वतः। क्यं ते रोचते भोक्तुं कयं निद्रा कयं रितः॥ ई

दित वध्यपुरूषस्थेव सर्वतो वध्यघातकेरिधिस्थितस्य वध्यस्तिं नीयमानस्य निःसर्णमपस्थतः [856] सुखासिकावसम्बनमनुचित-मेव भवतः। तस्मात्संवेगतो भावनयानया हेतुनिवर्तनादासस्य-मपास्य कुग्रसपचौत्याद्ववर्धनमनुष्टेयं॥

15 त्रायापि स्थात् । यदि नामावर्ष्यभाविता मृत्योस्त्रथापि तत्रांनिधानमवगम्यासस्यमपद्वास्थामि । दृत्याप्रद्व्याद्व ।

Minaev has: svayūthān.—Beings of the same nikāya (see p. 245, l. 12).

² So F.-Minaev: evam.

⁸ Ms. o vasyam o.

यावत्संस्टतसंभारं मर्गं शीघ्रमेष्यति। संत्यच्यापि तदालस्यमकाले किं करिष्यसि॥ ७

संस्तः सच्जीकृतः संभारः सामग्री वधाय व्याधिजरास्त्रणो येन। यावदिति स्रोकोक्तं। ग्रीप्तं लिरतमिभसंनिधानात्। तदा स्त्युसुखान्तर्गतः। श्रसमये। श्रासस्यं त्यक्तापि किं करि- 5 व्यसि। न तदा किं चित्रयोजनिमिति भावः॥ श्रकास्तासेवास्य समर्थितं दन्तवयेणाइ।

इदं न प्राप्तमारस्थमिदमध्कतं स्थितं।

श्रिकस्मान्मृत्युरायातो हा हतोऽस्मीति चिन्तयन्॥८

श्रोकवेगसमुच्छूनसाश्रुरक्तेक्षणाननान्।

वन्धून् निराशान् संपश्यन्यमदूतमुखानि च॥ ६

स्वपापस्मृतिसंतप्तः शृखन्नादांश्र नारकान्।

वासोचारविकिप्ताङ्गो विद्वलः किं करिष्यसि॥ १०

द्दं यदनागते कर्तवातया मनसिक्ततं तन्न प्राप्तं। द्दमार्खं यत्कार्यमादित एव कर्तुमिष्टं। द्दमधंकतं स्थितं यत्कियन्निष्यन्नं 15 कियदनिष्यन्नं। दति कार्यपर्यन्तमगतस्थेव श्रकसान्मृत्युरागतो मम। श्रहो वतातिकष्टं। हतोऽस्मीति विचिन्तयन् विक्रसः किं करिश्वसीत्यनागतेन संबन्धः।

भोकः प्रियविष्रयोगकृतश्चित्तपरितापः। तस्य वेगोऽनिवार्थ-

प्रवित्तः। तेन समुच्छूनानि समुच्नतानि साश्रूणि सवाव्याणि रक्षानि ताम्रवर्णानि छोचनानि येथाननेषु तानि तथा। तथाभ्रतानि श्राननानि मुखानि येषां बन्धूनां ते तथा। तान् संपद्धन् विज्ञोकयन्। तच कर्मकाधिकारात्परस्पेपदं दृष्धः । किंभ्रतान्। निराणान्। का। प्रत्युच्जीवनं प्रति त्यक्षाणान् । तत्सानाव्यविकज्ञान् वा॥ मरणसमयोपस्थितक्षतान्तानुचरमुखानि च सिक्षिः।रोषपर्षभ्रकुटीनि संपद्धन् विक्रज्ञः किं करिष्यसि। खयं क्षतपापकर्मस्भरणेन मरणसमये किमित्येवं मया कतिमिति पश्चात्तापेन तापितः। नैतावन्धाचमेव। किं तु ग्रद्धान्तरक्षसमुद्भूतान् श्र्यान्तरकोपाणासेवः। तच्छूत्वा ममा-प्रयमेवावस्थिति संवासेन यः पुरीषोत्सर्गा विट्प्रहित्तः तेनोप- जिप्रगाचः। विक्रजः। श्रनायत्तकायवाक् चित्तप्रचारः। किं करिष्यसि सर्वक्रियासु निरुत्तव्यापारः।

15 द्रति मला खखावखायामेव यतितयं। द्रति ग्रिच-यितुमारः।

¹ Ms. tatrāk°.—This clause is wanting in Tibetan which does not, as a rule, translate grammatical observations.—Mahābhāṣya I. 3. 29, Vart. 2. Sampaçyan should by I. 3. 29 be ātmanepadam, if the word were intransitive, because in that rule there is the adhikāra 'akarmaka'; but in the clause it is not intransitive, not ātmanepadam. (F. W. Thomas).

² Tib.: gan-du zhe-na, slar-gson-pai bsam-pa dan bral-ba am.

 $^{^{8}}$ So Ms.—Tib. don hba-zhig-la khro-bai sgra bzhin-du = arthantare kopaçabdam iva.

जीवमत्य इवास्मीति युक्तं भयमिहैव ते। किं पुनः कतपापस्य तीवान्वरकदःखतः॥ ११

जीवना एव मत्याः क्रमेण भचणार्थ प्रायः प्राग्दिङ्किवासि-भिरेव जन रच्छन्ते। जीवनोपलचिता मत्या जीवमत्या इति तेषासेव समयः। ग्राकपार्थिवादिवन्मध्यपदलोपी समासः। तद्वहसपि। श्रद्य शो वा नियतसेव सरिखासि। इति सनसि क्षला युक्तं अयभिहैव ते। दृहैव संप्रजानदवस्थायामेव तवासं-प्राप्तसर्णस्य सर्णतः। किं पुनः कतपापस्य भवतो भयं युनं न भवति । द्रत्यपाहार्यं । त्रतिदः सहान्रकदः खतः ॥

निर्यापार्युखाखादा भिर्तमधिकत्या ह।

10

स्पृष्ट उष्णोदकेनापि सुकुमार प्रतप्यसे। क्रत्वा च नारकं कर्म किमेवं खस्यमास्यते ॥ १२

तप्तवारिणापि संस्पृष्टः । सुनुमारेति संबोधनं । श्रतिसद्-गरीरतया सोढ्मग्रकोऽसि । यद्येवं तदा । कला चेत्यादि सुबोधं॥ श्रपरमपि तं प्रत्या ह। 15

निरुद्यमफलाकाङ्किन् सुकुमार बहुव्यय। मृत्युयस्तोऽमराकारं हा दुःखित विहन्यसे ॥ १३

सुखहे द्वत्पादनाय वापार श्र्नोऽसि । त्रथ प तस्य पतं

¹ Minaev has: me. See Comm.

² Çākapārthiva = çākapriyah pārthivah Mahābhāşya Vārt. 8 to Pāņ 2, 1,

^{69. (}not Siddh. k. as stated in the St. Petersburg-Dict.)

⁸ Minaev: "grasto mara".

सुखमभिलपि । दु:खा [866] सहिष्णुरि । त्रिय च बद्ध व्योऽि । सर्वदुःखाकरलात् । सृत्युना च वग्नी हतोऽि । त्रिय चामरण-धर्ममात्मानं मन्यसे । एवं च विपर्यसं चिरतसस्य विपय्यन् । कर्षणायमानः सखेदमेनमाइ । हा दु:खित विहन्यसे । संमोह-विक्वत्या कष्टां दगां प्रविष्टोऽिस । त्रात्मगतसेव वा विख-ग्रति । एवमन्यवापि यथासंभवं द्रष्ट्यं। निरुद्यमादीनि चामन्त्रितपदानि ॥

निद्रापरतन्त्रं प्रत्याह ।

मानुष्यं नावमासाद्यं तर दुःखमहानदीं।

10 मूढं कालो न निद्राया दयं नौर्दुर्लभा पुनः॥ १४

श्रष्टाचणविनिर्मुक्तं मनुष्यभावप्रतिलक्तं नाविभवाभ्युद्यादि-पारगमनाय प्राप्य। तर भ्रवख दुःखमयौं महानदौं। सर्व-दुःखानि पृष्टीकुरुष्य वीर्यावलम्बनेनेति यावत्। हे मोहपरवग्र नायं कालो निद्रायाः। यावदियं नौः मंनिहिता। यदि 15 नेदानीमेव यतः क्रियते। तदा पुनरियं दुर्गतिगतस्य नौर्दुर्लभा भविष्यति। यदुक्तं। पुनर्प्येष समागमः कुत दृतिं॥ एवमालस्यं निवार्यं कुत्सितासिक्तं निवार्यन्नाहः।

l Ms.:...viparyastah / caritam asya vaçyah.—($\mathfrak h=\mathfrak m$.)—In margin na (°cyan); sya, corrected to pya by a second hand.—Tib. has: mthon-nas = dṛṣṭvā.

² According to F.: āpādya.

³ Minaev: mūdhako (typographical error).

⁴ Supra, I. 4.

मुका धर्मरतिं श्रेष्टामनन्तरतिसंततिं। रितरीद्वत्यहासादी दुःखहेती कथं तव॥ १५

ग्रुभकर्मणां रतिं श्रेष्ठासत्तमां। किंस्तां। श्रननरित-सुगतिपरम्परासंजननादनन्तापर्यवसाना रतिसंततिः सुखप्रवाही यस्याः सा तथा। त्रत एव उत्तमेत्यृतं। तामपदाय 5 रतिर भिरामः । त्रौद्धत्यमुन्नतता कायचित्तयोः क्रीड्नभी खतेति यावत् । हास्रो वागौद्भत्यं । सर्भसस्य वाग्विकार दति यावत्। त्रादिग्रब्दाङ्गीतादिपरिग्रहः। तच कयं रतिस्तव। न युक्तेत्यभि-किंभ्रते दःखइतौ । नरकादिद्रगत्य्पनयनादुःखस 10 [87ª] हेतुर्भवति ॥

एवं कु त्थितास किमिप निराक्तत्य विषदात्मावमन्यनां वीर्य-विपत्तं निराकर्तु । ऋपरमपि च तदिपचनिरसनाय प्रतिपाद-यनाह ।

अविषाद्बलव्यूहतात्पर्यातमविधेयता। परात्मसमता चैव परात्मपरिवर्तनं ॥ १६

15

विषादविपरीतोऽविषादः। बलानां यूहः समूहो वच्यमाण-लचणः । तात्पर्धे निपुणता । त्रात्मविधेयता त्रात्मवमवर्तिता । एताः सर्वाः क्रतदन्द्रसमासाः । यदि वा । एभिः सहितात्मविधे-

So M .- Minaev: °hāsyādau.

Tib. has: dga-ba dan beas-pai nag-gi...—dga-ba=ānauda, rabhasa≖

fierce joy. 3 Tib. has: zlas dbye-bai tshig bsdus-pa yin-no (See Jäschke, s. voc. zla-bo)-krta, untranslated.

यता । परात्मसमतापरात्मपरिवर्तने धानपरिच्छेदे वच्छमाणे । ददमपि समस्तं कौषीद्यप्रहाणाय वीर्यसम्दृद्ध्ये प्रभवतीत्युद्देशः ॥ उद्दिष्टमेवार्थे क्रमेण निर्दिश्वचाह ।

नैवावसादः कर्तव्यः कुतो से बोधिरित्यतः।

5 कुतो में बोधिरिति। कथमहं वराकः सस्यक्षंबोधिभाजनं।
बुद्धलं हि तौद्ध्यिन्द्रियस्थार अवीर्यस्य ैत्रपरिमितपुष्यज्ञानसंभारेरितदुष्करकर्मानुष्ठानैरनेकैश्च कन्यासंस्थेयैः कस्य चित्पुरुषविश्रेषस्य साध्यं भवति। श्रहं तु न तादृश्च दति कथं मदिधानां तथाविधं बुद्धलं संभायेत। दत्येवमाकार मनसिकाराद
10 वसादो विषादो न कर्तयः। महार्थभंश्रस्य हेतुलात्। यथोकं।
श्रवसादोऽयनर्थं दति ॥ कसात्।

यस्मात्तयागतः सत्यं सत्यवादीदमुक्तवान् ॥ १७

यसात्त्रथागत दृदं वच्छमाणं सत्यमवितथसुक्तवान् कथितवान्। कथं ज्ञायत दृत्याहः सत्यवादीति। ज्ञानिक्रयासंभवादविपरी-

15 तवादौ। त्रतः सत्याभिधानहेतुपदसेतत्॥ किं तत्सत्यसुक्तवान्। ते प्रयासन्दंशमश्रका मिस्रकाः क्रमयस्तथा।

यैरुत्साइवशात्प्राप्ता दुरापा बोधिरुत्तमा ॥ १८

दत्याह । तेऽपि बुद्धा भगवन्तः पूर्व प्राक्यसुनिरत्निपिखि-दीपंकरप्रस्तयः संसारसागरावर्तान्तर्गताः [87] पृथग्जनावस्थायां

^{1 =} In the eighth chapter.

² Ms.: aparamita°.

⁸ Cp. Ciks as. 54, 2.

परिश्वमन्त एवंस्ता एवासन् वस्तुः । येस्त्साइवलात् वीर्यो-त्कर्षसामर्थ्यात् संभारान् संस्त्य प्राप्ताधिगता दुरापा दुर्लभ-प्रतिलम्भा वोधिस्त्तमानुत्तरा । श्रारब्धवीर्यस्य न किं चिद्व-ष्क्रसमिति भावः । ददं तत्सत्यं ॥

श्रतो सम पुनरतितरां न दुर्जभा बोधिरित्याह। किमुताहं नरो जात्या श्रत्तो श्रातुं हिताहितं। सर्वज्ञनीत्यनुत्सर्गादोधिं किं नामुयामहं ॥ १६

तिं पुनरहं मनुष्यभूतो जन्मना । प्रको ज्ञातं हिताहितसिति । ददं हितमिदमहितं । ग्रभमग्रमं च कर्मेत्युपदिष्टं ।
ज्ञातुमवबोद्धं समर्थोऽस्मि । दति विचिन्त्य । सर्वज्ञस्य मर्ववस्तु – 10
तन्तवेदिनो नीतिन्य उपादेयतलप्रतिपादनं । तस्यानुत्मर्गाद –
परित्यागात् । तस्यादानोपादानसेवनादित्यर्थः । बुद्धलं नाप्नुयामहं । काक्कां पठनाद् श्राप्नुयामेवेति ।

एतङ्गगवता र्विमेघे दिर्भितं। यथोतं। दह बोधिमचो नेवं चित्तमुत्पाद्यति। दुष्पाप्या बोधिर्मनुष्यभूतेन सता। 15 ददं च मे बीर्थ परीत्तं च हीनं च। सुमीदो ऽहं। बोधिश्चा-दीप्तशिरश्चेलोपमेन बह्रन् कल्पान् बह्रनि कल्पभतानि [बह्रनि]

¹ Minaev has: jātyāç°.

² Minaev has: sarvajñānīty°.

⁸ Minaev has: nāpnuyāmy aham.

See Apte, s. voc. kāku.—Tib.: tshig-zur-gyis.

 $^{5 =} Giks\bar{a}s. 54, 2-10.$

⁶ Çi,: dusprāpā. A read fant adval samuelos sud solina 19 4

⁷ Ms.: parītam; Qi. omits hīnam ca, 133 sagadi and tank all

कल्पमहस्राणि समुदाचरता समुदानेतथा। तन्नाहसुत्सह देहुग्रं भारसुदोढुं॥ किं तर्हि बोधिमलेनेवं चित्तसुत्पादयि तथं। ये ऽपि ते ऽभिमंबुद्धास्तथागता ऋईन्तः सम्यक्संबुद्धाः । ये ऽपि वाभिमंभोत्यन्ते। ते ऽपीदृग्रेनेव नयेन। देहुग्या प्रतिपदा। देहुग्रेनेव वीर्यणाभिमंबुद्धाः। यावन्न च ते तथा-गतभ्रता एवाभिमंबुद्धाः। श्रहमपि तथा तथा घटिथे। तथा तथा थायंस्थे। मर्वमल्साधारणेन वीर्यण। सर्वसत्तारखणेन वीर्यण यथाहमप्यनुत्तरां सम्य[88]क्संबोधिमभिसंभोत्य दति॥ युक्तमेवैतत्। केवलमतिदुष्करकर्मश्रवणादनध्यवसायो निवर्त-

10 चितुमग्रका दूति विकल्पयनाइ।

श्रयापि इस्तपादादि दातव्यमिति मे भयं।

करचरणित्ररःप्रस्थितिदानमन्तरेण बुद्धलं न प्रायत इत्यति-दुष्करकर्मसु प्रवृत्तिभयादुत्साहो निवर्तत एव । इति चेन्मन्यसे 15 स्वित्तसेवमाह ।

गुरुलाघवमूढत्वं तन्मे स्यादविचारतः॥ २०

तदेतत्तत्तुरुलाघवमूढलमेव मे। श्रन्ये बद्धतरं बद्धतरे चान्यतरमिति मोइवग्रेनाविचारतो ऽविवेकान्त्रम स्थाच तु पर-मार्थविचारतः॥ परमार्थविचारेण गुरुलाघवविपर्यास एवाय-मित्युपदर्भयनाइ।

¹ samudācaratā, omitted by Qi.

² Qi. makes here reference to the Buddhas of the present time.

⁸ Ms. has: ārambhaņena (Sic).

छेत्तव्यश्वासि भेत्तव्यो दाद्यः पाव्यो ऽप्यनेकशः । कल्पकोटीरसंख्या न च बोधिर्भविष्यति ॥ २१

संसारचारके निवसंस्तथाविधकर्मवग्राच्छेत्तव्यश्वासि कर् चरणाद्यङ्गप्रत्यङ्गच्छेदनाचरकादिषु। तथा भेत्तव्यो ऽस्मि ग्राति-कुन्तादिभिः। दाह्यो नरकदहनादिना। पाव्यो व्यक्तित्रक-चादिना। त्रनेकग्रो ऽनेकवारान्। नरकादिषु कारणामनु-अवन्नपर्यन्तपथि संसारे। कच्पानां कोटीरमंख्येयाः मंख्यातुम-ग्रक्याः। द्रत्यकामस्थापि दुःखमपर्यन्तमनेकप्रकारमापतिस्थति। न च बुद्धलसंभाराय तत्संपत्स्यते॥

दृदं संसारापर्यन्ततथा दुःखं बद्धतरं निष्पालं च । बुद्धल- 10 प्रसाधकं पुनरस्पतरं सक्तलं चेत्युपदर्भयन्नाहः।

द्रदं तु मे परिमितं दुःखं संबोधिसाधनं । नष्टश्रख्यव्ययापोच्चे तदुत्पाटनदुःखवत् ॥ २२

यद् बुद्धलप्रसाधकं तदिदं दुःखं परिमितं मम प्रतिनियत-कालभावितया । दुःख(प्रथमन)हेतुः च । तत्त्रथास्तं प्रद्धं । तेन 15 व्यथा । तस्या [श्र]पोहो निरुत्तिः । तन्निमित्तं तद्घुदासाय । यावज्जीवं तत्कृतदुःखप्रहाणायेत्यर्थः । तस्य नष्टप्रद्यस्यो[88]-

¹ So M.—Minaev has: dābyapāţyair anekaçaḥ.

² Minney has; etat .- See Comm.

³ So Minaev; M. has: etat parimitam duhkham sambodhisukhasadhanam.

⁴ This is the reading of the Ms., praçamana being written in the margin by a second hand. It cannot be correct, as the Tib. has: ...sdug-bshal-gyi rgyu de de-lta-bur gyur-pai zug-rhu des.... = duḥkhahetus tat tathābhūtam çalyam tena...

त्पाटनं। प्ररीरादुद्धरणं। अपकर्षणमिति यावत्। तेन यहुःखं प्रतिनियतकालमन्पतरं। दीर्घकालिकदुःखोपप्रमनिमित्तं। तद-सोदुमुचितमिदमपि दुःखं॥

त्रतो ऽपि ममुचितमिद्मित्या ह।

सर्वे ऽपि वैद्याः कुर्वन्ति क्रियादुः खैररोगतां। तस्मादह्रनि दुःखानि इन्तुं सोढव्यमल्पकं॥ २३

सर्वे ऽपि न के चिदेव। लङ्कनपाचनादिकतैर्ययेष्टाहारविहारप्रतिषेधजनितेश्व क्रियादुः खेः । रोगपी डितानामारोग्यं
विद्धति । श्रन्यथा तत्कर्तुमग्रक्यं। यत एवं तस्मादित10 ग्रयेनान्पमन्पकं दुः खं सोढ्यं। किमर्थं। बह्ननि दुः खानि हन्तुं।
सर्वसन्तानामात्मनश्च दीर्घकालिकसर्वदुः खप्रग्रमनायेत्यर्थः। एवं
तावत्स्वीकर्तं युक्तं धीमतः॥ न चेदं युक्तमपि दुःकरं कर्मादिकर्मिकस्यं प्रथममनुज्ञातं भगवतेति दर्भयन्नाह।

क्रियामिमामप्युचितां वरवैद्यो न दत्तवान्।

15 क्रियामिमां समनन्तरप्रतिपादितां दुःखोत्पादनीं। उचितामपि सेवनीयामपि। वरवैद्यों भगवान्। सर्वया सर्व-

¹ langhana = das Fasten, Hungereur, pācana = Digestivum, Caraka 1.22, 6.3 St. Fetersburg-Dict.

² We have tried to ascertain the meaning of the word ādikarmika (Bouddhisme, Etndes et Matériaux). Our hypothesis was wrong to a certain extent. M. Oldenberg has criticised the translation given by Cowell and Neil (Divyāvadāna): beginning a wrong action without finishing it. (See Buddhistische Studien, p. 650). His own translation refers to a special case.—The ādikarmika is the "débutant," who has taken the samvara, but who is wanting in abhyāsa (See Qikṣas. Index, p. 375).

⁸ See Kern, Manual, p. 47, and Vyādhisūtra, J.R.A.S., 1903, III.

व्याधिचिकित्सकः । प्रथमं न दत्तवान् न कर्तव्यतया प्रति-पादितवानादिकर्मिकस्य॥

कथं तर्हि रागादिव्याधीनपनयति। श्राइ।

मधुरेणोपचारेण चिकित्सित महातुरान्॥ २४

सुकुमारतरेणोपचारेणोपक्रमेण। यथाचमं चिकित्सा- 5 प्रणयनेनेत्यर्थः। चिकित्सिति रोगमुक्तान् करोति। महातुरान् दौर्घरोगिणो रागादिमहाव्याधियस्तान्॥

कः पुनरयं मधुरोपचार द्रत्याह।

श्रादौ श्राकादिदानेऽपि नियोजयित नायकः। तत्करोति क्रमात्पश्राचल्बमांसान्यपि त्यनेत्॥ २५ 10

मात्सर्यमलापनयनाथं सुखसुखेन संभारसंवर्धनाथं च।

प्राक्यपरित्यागे प्राक्षसकुपिष्डिकादिदानेन प्रथमतरं प्र[89ª]वर्तयति नायको भगवान्। पुनस्तथोपायविभेषेण नियोजनं

करोति। तदिति लोकोक्तौ वा। यद्यथा दाता मृदुदानाभ्यासक्रमेण श्रिधमात्राधिमात्रदानाभ्यासप्रकर्षमासाद्यन् पश्चा- 15
दुत्तरकालमकक्क्रेणेव खमांसर्धिरादिकमपि प्रमन्न एव

प्रयक्केत्॥

क्यं पुनरेतदेविमत्याग्रङ्खाह।

यदा शाकेषिव प्रज्ञा स्वमांसेऽघ्युपजायते । मांसास्यि त्यजतस्तस्य तदा किं नाम दुःकरं ॥ २६

¹ Sukhasukhena, given in St. Petersburg Dist. from Lexx. only.

यसिन् काले दानाभ्यासात्परमप्रकर्षगमनात् सर्वयापगत-मात्सर्यतया प्राकेष्मिव स्वमांचेऽपि निरासङ्गा बुद्धिरूपजायते। तदा स्वमांसादिदानेऽपि नाप्रक्यानुष्टानबुद्धिरिति तस्मिन् काले किं नाम दुःकरं। नैव किं चिदित्यर्थः॥

मशापि स्थात्। ऋतिदीर्घकालं परार्थे संसरता तहुखं कथमिव परिहर्तं प्रकामित्यचाह।

न दुःखी त्यक्तपापत्वात्पण्डितत्वान दुर्मनाः। विक्ते पापात्काये यतो व्यथा॥ २७

दिविधमेव हि दुःखं बाधकसुपजायते कायिकं मानसिकं

10 चिति। तदेतद्वयमपि बोधिमच्च न संभवति। कायवचनमनोभिः सर्वावद्यविरतेः कायिकं दुःखमस्य न जायते।

युक्त्यागमाभ्यासुभयनेरात्म्यस्यं च निञ्चयनान्मानसमपि कुतः।

यतो मिथ्याकच्यनया ऽसदिकच्येनात्मात्मीयग्रहप्रदक्तेन भावाद्यभिनिवेशकतेन वा चित्ते दुःखं। पापात्माणातिपातादेः काये।

15 एवं तावदुःखहेतुपरिहारादुःखमस्य न जायत दति प्रतिपादितं॥

इदानीं सुखमेव केवलमस्यासीति प्रतिपादयन्नाह ।

¹ Prakarşagamana, see Supra II. 20, Bodhicaryā v.t. Index, Nyāyabindu. 14, 22.

² L' has: na samkitamanās (sic).

³ L' has: vikalpacittena.

Bāhya°, adhyātmaçūnyatā, or pudgala°, dharma°, to be established by the Sacred Books (āgamas) and by the common pramānas (anumāna, yukti).

10

15

पुर्ण्येन कायः सुखितः पारिष्डित्येन मनः सुखिः। तिष्ठन् परार्थे संसारे क्रपालुः केन खिद्यते। २८

सुखं जातमस्य कायस्थेति सुखितः। सुखं विद्यतेऽस्य मनस इति सुखि। एवसुभयसुखसमन्वागतलात् कपा[89]वान् पराधं संसारे संसरन् केन दुःखेन खिद्यते। खेदं मन्यते। यदि वा केन खिद्यते। खेदहेतोरभावान्न केन चिदिति भावः । तिल्किमिद्मकारणभीकृतया वैसुख्यसुपादीयते॥

खादेतत्। दीर्घकालमासेवितभावितवज्ञलीकतेन महता पुण्यसंभारेण सम्यक्संबोधिरधिगम्यते। तद्दरं सुसुचूणां भीघ-कालतया आवक्यानसेवाअयणीयं स्वादित्याभद्भ्याह।

क्षपयन् पूर्वपापानि प्रतीच्छन् पुख्यसागरान्। बोधिचित्तवलादेवं श्रावकेभ्योऽपि शौघ्रगः॥ २८

पूर्वक्कतानि यानि पापानि तानि बोधिचित्तवस्रादेव चयीणि कुर्वन्। यथोक्तं प्राक्।

> युगान्तकालानलवन्महान्ति पापानि यन्निर्दहति चणेनेति।

तथा बोधिचित्तवलादेव प्रतीच्छन्नाददानः पुण्यमागरान्। यद्क्तं।

¹ L2 M. sukhitah kayah.

² Minaev has: sukhī.

⁸ L2. M.:dayāluḥ.

⁴ See supra VI. 106.

⁶ L2: balad eşa.

⁶ See supra I. 14.

२६० प्रजानस्मितिकता बोधिचर्यावतास्पञ्जिका।

त्रविच्छित्ताः पुण्यधाराः प्रवर्तन्ते नभःसमा दति ॥ प्रवंविधोपायवज्ञज्ञेन महायानमारूढो बोधिसन्तः श्राव- केभ्योऽपि ग्रीप्रगस्त्रितगामौ॥

ग्वं सुखात्सुखं गच्छन् को विषीदेतसचेतनः।
बोधिचित्तर्यं प्राप्य सर्वखेदश्रमापदं॥ ३०

प्रतिपादितसेवार्थं पिण्डीकृत्य दर्भयति। एवसुक्तक्रसेण सर्वावद्यविरतेः पुराकृतपापच्याच खप्ने ऽपि दुर्गितगमना- भावात्। तीव्राभिप्रायेणानेकसुखेनाइनिंगमाकाग्रधातुव्यापिनः पुण्यसागर्खाभवर्धनाच सुगतिपरम्परासन्मार्गावतर्णवोधिचित्तं 10 रथिमवासाद्य। त्राकृत्वीति यावत्। सर्वखेदैः पिक्तिग्रैः श्रम श्रायासः। तमपहन्तीति प्रतिपादितनयेन। सर्वखेदश्रमं वाप- इन्तीति तं। सुखादेकसादपरसुत्तरोत्तरमधिकाधिकं सुखं देवमनुष्यसंपत्तिचच्छां गच्छन्तनुप्राप्नुवन्। को नाम प्रेचावान् विषादि 90कीमापद्यते॥

15 तदेवमनेकविधविषाद्निमित्तप्रतिषेधेनाविषादं प्रतिपाद्य बल्ख्यूहं प्रतिपाद्यितुमाह ।

> छन्दस्थामर्तिमुक्तिवलं सत्त्वार्थसिइये। छन्दं दुःखभयात्नुर्यादनुशंसांख भावयन्॥ ३१

¹ See supra I. 19.

² See Qikşās. 361.9.

⁵ Minaev has: chandah sthāma ratir muktibalam; M.: chandasthāna°.

⁴ See VII. 16.

5

द्रमणुद्गिवाक्यमेव । क्रन्द दह कुप्रकाभिकाषः । स्थाम श्रार्थहृद्रता । रितः सत्कर्मामितः । सुितरसामर्थे तावत्काल-सुत्सर्गः । एतचत्रकृवलं । श्रनेकावयवससुदायात्मकलात् । हस्त्यादिवलवत् । सत्त्वार्थसिद्धये । वीर्यहेत्वादस्य वीर्यस्य च मर्वाभिमतसाधनलादिति भावः ॥

तत्र क्रन्दवलस्य वज्ञकरत्वाच्छन्दिमित्यादिनास्थोत्पत्ति-निमित्तमाह। दुःखभयादिति। त्रग्रग्नभक्तमेणो दुःखं जायत दति त्राधाच्छन्दं कुर्यात्। त्रनुग्रंधांस्य भावयन्। त्रनुग्रंधाः फलदारेण गुणविश्रेषाः। ते चार्थात्कुग्रलकर्मण एव। तान् भावयन्। ग्राभकर्मणोऽनेकप्रकारेण मधुरफलोत्पत्तिं पुनः पुनः संचिन्तयन्त्रित्यर्थः॥

सांप्रतं बलस्य व्यापारसुपदर्भयितुमा ह।

एवं विपस्रमुन्मून्य यतेतोत्सा इर इये। छन्दमानर्गतत्यागतात्पर्यविशतावनेः॥ ३२

एवसुत्तप्रबन्धनीत्यादि। विपचमालस्यादि । उन्मून्य प्रतिपच-भावनाविधिनापसार्थ। वीर्थप्रवर्धनाय यतं कुर्यात् । केनोपाये- 15 नेत्यादि । मानस्वित्तस्थोन्नतिः। त्रयं स्थामवलस्थोपर्यहर्षं। स्थामवलसेव वा। तेषां वलैः सामर्थैः। सामर्थ्यपर्यायो ऽत्र वल्याब्दः॥

तच तावक्कसोत्पादनाय प्रथममाह।

¹ See VII. 2.

⁹ Ms.: ityādi—Ex. conj.: ity āha chandetyādi.

5

त्रप्रमेया मया दोषा हन्तव्याः स्वपरात्मनोः।

एकैकस्यापि दोषस्य यच कल्पार्णवैः स्रयः॥ इइ

तच दोषस्यारम्भे लेशोऽपि मम नेस्यते।

त्रप्रमेयव्यथाभाज्ये नोरः स्फुटति मे कथं॥ ३४

गुणा मयार्जनीयाश्च बहवः स्वपरात्मनोः।

तचैकैकगुणाभ्यासो भवेत्कल्पार्णवैन वा॥ ३५

गुणलेशोऽपि नाभ्यासो मम जातः कदा चन।

सर्वसत्तानासुपकरणतया ऽतानश्च समस्तक्षेणप्रहाणाय निः
 प्रोषगुणोत्पादनाय च मया बोधिचित्तसुत्पादितं। तच्च न

10 ग्रिथिखव्यापारसाध्यमित्यवगम्यापि यद्यनार[90b] अवीर्यतया

 मन्दसमारमा एव तिष्ठामि तदा दुर्गतिविनिपातमन्तरेण

 नान्या गतिरिस्ति मसेति विचिन्त्य संवेगमासुखीकुर्वन् कन्द
 सुत्पादयेदिति ससुदायार्थः॥

श्रवयवार्थस्त्रच्यते । श्रप्रमेयाः प्रमात्मग्रच्याः । दोषाः

15 काय[वाक्]चित्तममाश्रिताः । इन्तच्याः प्रइन्तव्याः । खपरात्मनोः
खात्मनः परात्मनञ्च । एकेकस्थापीति । श्रास्तां तावद्वह्ननां ।
यत्र येषु । मन्दवीर्येण कन्यार्णवैरनेकेः कन्यग्रतमहस्तेः । चयः
प्रहाणं क्रियते ।

तच तेषु। दोषचयारमे दोषप्रहाणोत्साहे। लेगोऽपि 20 खल्पमाचमपि मम नेच्छते न दृश्यते। श्रतो ऽप्रमेयव्यथाभाज्ये ऽपरिमितदुःखभाजनस्य मम नोरः स्फुटित इदयं विदीर्घते कथं केन प्रकारेण॥

गुणा सयेत्यादि सुबोधं ॥ इति विचिन्य संवेगसुपदर्भयति । **एथा नीतं सया जन्म नयं चिस्तव्यमद्गृतं ॥ इ६ं**ट्या विषक्तमेव सया जन्माचणविनिर्मुतं नीतं प्रेरितं । ६

ट्योक्ततिमिति यावत् । नथं चिस्तव्यं महार्णवयुगच्छिद्रकूमें –

ग्रीवार्पणवत् । सुचिरेण प्राप्तं । श्रत एवाश्चर्यस्थानवादद्भुतं ॥

इतो ऽपि विषक्तिस्थाह ।

न प्राप्तं भगवत्पूजामहोत्सवसुखं मया।
न क्रतां श्रासने कारां दिरद्राशा न पूरिता॥ ३० 10
भौतेभ्यो नाभयं दत्तमार्ता न सुखिनः क्रताः।
दुःखाय केवलं मातुर्गतोऽस्मि गर्भशस्यतां॥ ३८

तथागतानां सित्तियाभिर्महोत्सवमितिययवदिभिनन्दनं । तेन सुखं सौमनस्यं न प्राप्तं नाधिगतं मया। नापि ग्राप्तने प्रति- मास्त्रपमद्धर्मादिसत्तारैः विहारारामग्रयनादिवस्तुप्रदानेश्व कारा 15 पूजा कता। नापि दरिद्राणां धनहीनानामाग्राभिलाषः सर्वीपकरणसंपत्तिसंपादनेन पूरिता।

¹ See supra IV. 20.—The meaning of this simile, as it is given in the Commentary of that passage (Tibetan only), is known from the Friendly Epistle (Journal Pāli Text 1886), p. 18—See Supra p. 9, note; and F. W. Thomas, Candragomin's Epistle to the king Kanika, Intr. (Ind. Ant. 1903).

² Ms. has : viphalam ityādi.

⁸ Minaev : krtah-M., L2 : krta.

⁴ According to L2 = tathāgataçāsane.

⁵ According to L1=pūjā.

⁶ Utsava, masc. only in St. Petersburg Dict.

नापि भीतेभ्यः षपत्नादिभयसमाकु लितेभ्यो मा भेषीरित्य-भयं दत्तं। नापि कायमनोदुः खेरार्ताः पीड़ितास्तदपनी [91º] य सुखिनः कृता दति सर्वैः सत्पुरुषधर्मे विरहितलादाह। दुःखा-येत्यादि सुबोधं॥

कथं पुनरेतां धर्मद्र्यां प्राप्तो भवानित्याह । धर्मच्छन्द्वियोगेन पार्विकेन ममाधुना । विपत्तिरीह्मी जाता को धर्मे छन्द्रमुत्मुजेत्॥ ३९

धर्माभिजाषस्थाभावेन प्राक्तनजन्मोपचितेन । समाधुनास्मिन् जन्मिन विपत्तिरीदृशी जाता । सर्वसामर्थ्यवैकन्त्रस्वभावा सम-10 नन्तरकथिता ससुत्पना । एवं ज्ञाला को धर्म छन्दसुत्मृजेत् । परित्यजेत् । को नाम नोपाददीत विचचण दति भावः ॥

किं पुनः कुप्रकार्थिनां क्रन्दोत्पादने यत्न दत्याप्रद्य यचोक्तं क्रन्दं दुःखभयात्कुर्यादित्यादि तद्यक्तीकर्तं चाह।

कुश्रलानां च सर्वेषां छन्दं मूलं मुनिर्जगौ।

तस्यापि मूलं सततं विपाकफलभावना ॥ ४०

न केवलं विपत्तिपरिहारार्थं। ग्रुक्तधर्मीपचयार्थमपि इस्न्दो-त्यादने यतितयमिति चकारार्थः। सर्वेषामिति न केषां चिदेव। इन्दं मूलं कारणं भगवानुक्तवान्। न तु खयसुत्पेच्छो-च्यत दत्यर्थः। तस्थापि च्छन्दस्थापि मूलं सततं सर्वेकालं विपाक-20 फल्लभावना। ग्रुभाग्रभकर्मणो विपाकफलं परलोक दष्टानिष्ट-प्राप्तिलचणं। तस्य भावना पुनः पुनरासुखीकरणं॥

10

15

20

तत्राग्रभक्षमेणो विपाकपनसुपदर्शयन्नाह । दुःखानि दौर्मनस्यानि भयानि विविधानि च । श्राभिनाषविधाताश्व जायन्ते पापकारिणां ॥ ४१

याविन कायिकमानसिकानि नरकादिगतौ दुःखानि विविधानि नानाप्रकार।णि जायन्ते भवन्ति सर्वाणि पाप-कारिणामेव। भयानि वधवन्धनताड्नादिभ्यः। पर्येषमाणस्य लाभविधातेनाभिलाषविधाताञ्च॥

सुक्ततकर्भणो विपाकपलमाइ।

मनोरषः शुभक्षतां यच यचैव गच्छति । तच तचैव तत्पुख्यैः फलार्घेणाभिपूज्यते ॥ ४२

दृष्टाग्रंसनविकल्पो सनोर्थः। यस्य लोके सनोराज्यमिति [91] प्रसिद्धिः। ग्रुभक्ततां पुष्यकारिणां। यत्र यदैवेति वीप्यायां न क चिदेव। गच्छति प्रसर्ति। फलार्घेणेति। श्रुभवाञ्कितफलोपनासनसेवार्घ द्वार्घः पूजा॥ तेन पुनरग्रुअस्य फलसाइ।

पापकारिसुखेच्छा तु यच यचैव गच्छति। तच तचैव तत्यापैदुःखशस्त्रैविहन्यते ॥ ४३

सुखेच्छा सुखाभिलाषः । तत्पापैरिति कर्तर हतीया। दु:खग्रस्तेरिति करणैः । दुःखान्येव ग्रस्ताणीव तदिच्छाविच्छद-हेतुलात्॥

¹ So M., L2,-Minaev: hanyase.

रर्द्

5

पृथग्जनासाधार्णग्रुभकर्मविपाकपालससाधार्णमाह ।

विपुलसुगन्धिशीतलसरोक्हगर्भगता
सधुरजिनस्वराश्चनकृतोपचितद्युतयः ।
सुनिकरवोधिताम्बुजविनिर्गतसदपुषः
सुगतसुता भवन्ति सुगतस्य पुरः कुश्लैः ॥ ४४

प्रतिलक्ष्यमुदितादिस्सयों हि बोधिमला श्रिनिच्हनों मादकुचों नोत्पद्यन्ते। किं तिर्ह सुखावत्यां विश्वद्रलक्षमल-कोग्रेषु जायन्ते। तेषां सुखविस्तिमनेन कथयति। विपुलानि विस्तीर्णानि सुगन्धीनि सनोज्ञगन्धानि ग्रीतलानि ग्रीतस्व-10 स्पर्णानि तानि च मरोक्हाणि पद्भजानि चेति। तेषां गर्भाणि सरोक्हाणि पद्भजानि चेति। तेषां गर्भाणि सरोक्हाणीं वा विग्रेषणान्येतानि। तेषु गताः संस्थिताः प्रज्ञोपायमहाक्रस्णानिर्यातपुष्णज्ञानकललसंवित्तसंबोधिचिन्ताः स्मातस्ता भवन्ति कुग्रलैरिति संबन्धः।

क्षयं पुनः पद्मगर्भेषु पुष्टिं लभन्त इत्यचाह। मधुरेत्यादि।

15 सधुरैः सर्वखराङ्गोपेततया परमसौसनस्थकारिभिः संबद्घधर्म
घोषाअनेराहारैः कता उपचिता द्युतयो वपूंषि येषां ते तथा।

¹ Minaev has: asana--; M., Dev. 85: oaçanao.

² See Dharmasamaraha LXIV, LXV; and the Daçabhümiçvara (an older reduction entitled Daçabhümaka was found recently by Professor Bendall).

⁸ See Sukhāvatīvyūha, and infra X. 4.—Birth from lotuses, Qikṣās. 175. 5 sqq.

⁴ Ms.: sugandhāni, but see VIII. 67 and Pāṇini quoted in loco.

⁶ Garbha, masc. only (St.-Petersburg Diet.)

⁶ Comp. infra the lokottarakāya,

कयं च ततो निर्यान्तीत्यत त्राह । सुनिकरेत्यादि । सुनि-करैः परिपाककालमवगम्य तथागतरिक्षभिर्वाधितानि विका-सितानि च तान्यम्बुजानि चेति । ततो विनिर्गतानि निर्याता-[92ª]नि सन्ति लचणव्यञ्चनालंकतत्या ग्रोथनानि वपूंषि येषां ते तथा । तथाभूताः सन्तः सुगतस्त्रता बोधिसत्ता भवन्ति 5 जायन्ते । सुगतस्य पुरः सुखावत्यासिमतासस्य भगवतोऽग्रतः । कुग्रलेरेकान्तग्रुक्तैः कर्मभिः ॥

तदनेन मावकुची ससुत्पद्यमानानासेति दिशेषणविपर्ययेण दुःखं वेदितयमित्युपदिर्शितं भवति । तथा हि तच संकटे दुर्गित्थिन जठरानलसंतप्ते चौत्पन्नस्य मातापित्रग्रिचिसंभ्रतस्य 10 मातः पीताश्रितिर्वान्तकस्यैः संदर्धमानस्य गर्भमलपङ्गिनमग्रस्य परिपाककाले कथं चित्कप्रगतप्राणस्य यन्त्रनिष्यी डितस्थेव ततो निगमनिमिति प्रायेण मनुस्थस्तस्य व्यतिमित्रकर्मविपाक-फलसुकं॥

एकान्तरूपास्य तु विपाकपासमाइ।

15

यमपुरुषापनीतसकलक्कविरातरवो हतवहतापविद्रुतकताम्ननिषक्ततनः । ज्ञलद्सिशक्तिघातशतशातितमांसदलः पति सुतप्तलोहधरणीष्वशुभैबेहुशः॥ ४५

यमपुरुषैः कालदूतैरपनीता विश्वेषिता ज्वलितसुद्गरादि- 20

^{... 1} vidrutaka = "vidruta (St.-Pet. Dict.) = liquid.

प्रहारै: सकला समला इविश्वर्मप्रभावो वा यस स तथा।
प्रतिप्रयेनार्तः सन् पतित सुतप्तलोहघरणीषु। पुनरपि किंग्न्तः।
तीव्रानलतापेन द्रवीभृतं यत्तास्रं तेन निषिक्ता स्वापिता तनुः
कायो यस्र। त्रतोऽष्यपनीतसकलक्क्षितः। ज्वलनोऽसयः प्रक्त
ग्य प्रस्तविष्रेषाः। तेषां घातमतरनेकेः प्रहारैः प्रातितानि
विक्केदितानि सांसदलानि मकलानि यस्र स तथाभृतः सन्
पति। सष्टु तप्तास लोहमधीभृभिषु। त्रम्भरसुम्भवः कर्मभिः।
वक्ष्म दति वह्नन् वारान् दीर्घकालेन तत्पलस्य परिचयात्॥
तदेवं ग्रुभाग्रुभकर्मणोर्विपाकमलं प्रतिपाद्य क्हन्दबलग्रुपसंहरन्नाहः।

तसात्कार्यः गुभच्छन्दो भावयित्वैवसादरात्।

यत [92^b] एवं ग्रुभाग्रभकर्मणोर्मधुरकटुकपालविपाकः । तस्मादेवं परिभाव्य ग्रभच्छन्द एवादारेणाग्रभकर्म विहाय कार्यः॥

15 **सां**प्रतं स्थामवलं प्रतिपाद्यितुमाइ।

वजध्यजस्य विधिना मानं त्वारभ्य भावयेत्॥ ४६

वज्रध्वजस्वप्रतिपादितविधानेन मानं पुनः साधं कर्मारभ्य भावयेत्। त्रय वा त्रारभ्य भावयेदिति गाढसमारसेण भाव-येत्। चेतिस स्थिरं कुर्यात् न ग्रिथिकोपक्रसेणेत्यर्थः॥

२६८

I So Ms.

Supra I. 9, vipākaphala.

⁸ See Qikşās. 22. 5 and 278, 14.—On the good mana, see Nettipakarana, p. 87.

वीर्यपारमिता सप्तमः परिच्छेदः।

रहंट

श्रारकासेव ग्रिचित्माइ।

पूर्व निरूष्य सामग्रीमारभेवारभेत वा।

पूर्वे प्रथमत एव। श्रभिमतकार्यनिष्पादनाय मामग्रीं कारणसाकत्व्यं निरूप्य तस्या बलावलं विचार्य। श्रारभेत सति बले नारभेत वासति बले। किसेवंविचारेण प्रयोजनमिति वित्। श्राहः।

अनारक्शो वरं नाम न त्वारभ्य निवर्तनं ॥ ४९

श्रनारक्षो वरं नाम प्रथमत एव न लारभ्य निवर्तनमणकाले सिति ॥ नतु किमच दूषणं येनैवं नेस्थत इत्याह ।

जन्मान्तरेऽपि सोऽभ्यासः पापादुःखं च वर्धते । 10 अन्य कार्यकालं च हीनं तच न साधितं ॥ ४८

तथा क्रियमाणो ऽन्यस्मित्रिप जन्मिन सोऽभ्यास द्रारास्य निवर्तनं नाम। प्रतिज्ञातमकुर्वतश्च पापं ततो दुःखं वर्धते। श्रत्यच हीनं नष्टं यत्परित्यच्य तदारखं। कार्यकालं च हीनं। श्रारक्षपरित्यक्तकार्यस्य कालो ऽस्य कार्यस्येति । तस्मिन् काले 15 यदन्यत्कार्यं कर्तव्यं तदित्यर्थः। तच्च यदारभ्य परित्यक्तं तदिप न साधितं न निष्पादितं। दति पञ्चप्रकारमच दूषणं। तेन नेष्यत दत्यभिप्रायः॥

¹ Nidarçana erased, düşana supplied in margin.

² Ms. Kālasyeti, in margin : rya.

त्रय किमयं मानः सर्वत्र न कर्तयो । नेत्याह । चिषु मानो विधातव्यः कर्मीपक्षेशशक्तिषु ।

केषु चिषु । तदाह । कर्मसु उपक्षेत्रेषु प्रक्षौ च । तचोप-क्षेत्राः चुद्रवस्तुक्तमंज्ञिताः क्षोधोपनाहम्रचप्रदाग्रादयः सप्त 5 [93 °] । पञ्चाप्रत् क्षेत्रां एव वा रागादय उपक्षेग्रा उच्चन्ते॥ तच कर्ममानं व्याख्यातुमाह ।

मयैवैकेन कर्तव्यमित्येषा कर्ममानिता॥ ४८

यत्किं चिद्रनवद्यं कर्मापितितं भवति सत्त्वानां तत्वर्वं सर्थे-वैकेन कर्तव्यं । नान्यस्थावकाग्रो दातव्य द्रत्यर्थः ॥ एतदेव 10 दर्भयन्नाह ।

क्षेशस्वतन्त्रों लोकोऽयं न स्रमः स्वार्थसाधने।
तस्मान्मयेषां कर्तव्यं नाश्रक्तोऽहं यथा जनः॥ ५०
क्षेशेः परायत्तीकतः सर्वा ऽयं जनकायः क चिदपि खार्थसाधने समर्था न भवति। द्रत्येषां सर्वसुखोत्यादनाय मया

¹ See Mahāvastu, II. p. 279 the dvārtrimçatākāra āryamāna.

² Ms. mraksa pramādayah.— See the "twenty-four minor evil passions" Dharmasamgraha LXIX; Madhyamakavrtti, Chapter VI; Kern, Manual, p. 52; Qikṣās. Index.

³ Ms. pañcāsat.

⁴ Dharmasamgraha, LXVII: six evil passions; Childers gives a list of ten; see Madhyamakavrtti, loc. laud.

⁵ Cp. Qikşās. 278. 6.

⁶ Minaev: Kleçasvatantro.

⁷ So M .- Minaev has: mayasya; see the Commentary.

बोधि चित्तसुत्पादितं । यत एवं तस्मान्नामकोऽहमीदृमं भार-सुदोढुं यथायं जनः । त्रतो मयेवैषां सर्वे कर्तव्यं ॥ दीने ऽपि कर्मणि वैसुख्यं नोत्पादि यत्यमित्या ह ।

नीचं कर्म करोत्यन्यः कथं मय्यपि तिष्ठति।

नी चमितगर्हितं लोके भारोदहनादिकं। मय्यपि धर्व- 5 मत्तानां दासभूतेऽपि तिष्ठति विद्यमानेऽपि। मत्करणीयं कथ-मन्यः करोति। मयैव कर्तुमुचितमिति भावः॥ श्रथाप्रतिरूपं मभैव तत्कर्मैति चित्तस्थोन्नतिं निवारियतुमाह।

मानाचेन्न करोम्येतन्मानो नश्यतु मे वरं॥ ५१

को ऽसुखपुच दूरं च कर्मातिनिहीनं। तद्युक्तं मम 10 कर्तुमिति मानाद्यदि न करोमि। तदा मानो नखतु मे वरं। किमनेन मानेन महार्थभंगकारिया मम न तु नीचकर्म- प्रदित्तः॥

दति कर्मसु मानमिधायोपक्षेणेषु मानमुपद्र्णयित्माइ।

स्टतं दुग्डुभमासाद्य काकोऽपि गरुडायते।

ग्रापदाबाधतेऽल्पापि मनो मे यदि दुबलं॥ ५२

यद्युपक्षेणेषु निहतमानतया दुबलहित्त मम चित्तं स्थात्।

¹ Ms. kādamuşya^o, but da is deleted and avagraha supplied by a second hand.—amuşyaputra, in St. Pet. Dict., from Lexx. only=der Sohn eines berühmten Mannes, der Sohn des und des.

¾ Kusalo māno: yaṁ mānoṁ nissāya mānaṁ pajahāti (Nettip.)

तदा त्रापदापत्तिः। त्राबाधते त्राक्रामिति [यथा] सापत्तिकं स्वादित्यर्थः। अन्यापि सदुप्रचारोपक्षेणजनितापि। कथमिवे-त्याह। स्वतमपगतप्राणं दुण्डुभं प्राप्य यथा काको ऽपि गरूड्-वदाचरति [93] ॥ कुतः पुनरेविमित्याह।

विषादक्षतिमञ्जेष्ट श्रापदः सुकरा ननु । व्युत्यितश्रेष्टमानस्तु महतामिप दुर्जयः ॥ ५३

चित्तोत्रितिवर्हिते विष्णतया मन्द्रकायचित्तप्रदृत्ता-वाक्तस्रोपहते सुषितस्तृतौ । श्रापदः सुकराः सुक्रभाः । उत्प-दन्त एव स्वन्पापदापि गम्यवात् । युत्यितः ससुन्नतिचित्ततया 10 पुनक्तसाहसंपन्नः चेष्टमानः स्तृतिसंप्रजन्याभ्यासुपक्केग्रानामनवकाग्रं ददानः । सहतासपि दुर्जयोऽजय्यः स्थात् ॥

तसादृ हेन चित्तेन करोम्यापदमापदः। चेलोक्यविजिगीषुत्वं हास्यमापज्जितस्यं मे ॥ ५४

स्थामबलावलम्बनं निगमयन् दर्भयति । यत एवं तस्मात् । 15 दृढेन चित्तेन मानमंनाहः । श्रापद एवापदमनर्थं करोमि सर्वथा तदनुप्रवेगं निवारयनुन्मू लितमंतानं करोमि । श्रन्यथा

२०२

¹ Alias : ākramati,

² So M, L², Dev. 85-Minaev has: āvarjitasya me.-Ll has the gloss: vipattiyā vipattim.

चिजगदिजयारसो सम हाखसुपहसनीयमापदा । श्रापदायत्त-तया वरा किकया । जितस्य गिमस्यति ॥ की दृश्मेत]दित्या है।

मया हि सर्वे जेतव्यमहं जेयो न केन चित । सयैष मानो वोद्यो जिनसिंहसुतो ह्यहं॥ ५५

कुतः। यसाञ्चिना एव भगवन्तः सिंहाः सर्वमारस्यौ-रनभिगम्यलात्। तेषां सुतो ऽहमपि कथमन्यैः पराजितो नाम ैनामधेयं लच्च द्ति मनिष निधाय मयेष मानो वोढयः। यया हि सिंहिकिग्रोरः प्रतिलक्षेवैग्रारदः सर्वान्यसृगैरनिभक्षत एव वने विचरति तथा मया दृढेन भवितयमित्यर्थः ॥

खादेतद्यद्येवं तदा ये ऽपि सपतादिविजयाय मानसु- 10 दहन्ति तेऽपि मानिनः प्रश्रस्थाः कथं न भवेयुरित्यवाह ।

ये सच्चा मानविजिता वराकास्ते न मानिनः। मानी श्वुवशं नैति मानश्वुवशास्त्र ते ॥ ५६

मानविजिता मानेनाभिभूता वराकास्तपखिनः। ते मानिनो भवन्त्येव। कुतः। मानी प्रचुवप्रं नैति न गच्छति। नासौ 15 वैरिजनानुवृत्तिं करोतीत्यर्थः। ये $\left[94^{\circ}
ight]$ भवताभिमता

13-4 2 20 W. T. W. o. S. F.

¹ Ms. āpadām ā padāyattatayā, ā from a second hand.

² Varākikā, See St.-Pet. Dict.

⁸ Ms. kīdrçamdityāha, m from a second hand.—otat = sthāmabala.

^{4 =} Buddhasntanāmadheyam.

⁵ M. L2 = vaçãs tu te.

⁶ Ms. ye na bhagavatā ni bhimatā māninas.

208

मानिनस्ते मानग्रदुवग्रास्तद्यस्यस्य समर्थित्तमारः।

समर्थित्मारः।

मानेन दुर्गतिं नौता मानुष्येऽपि हतोत्सवाः।
परिपाडाशिनों दासा मूखा दुर्दर्शनाः क्षशाः॥ ५७
क्षित्रेतः परिभृताश्च मानस्तन्धास्तपस्त्रिनः।

तेऽिप चेन्सानिनां मध्ये दीनास्तु वह कौह्याः॥ पूट सप्तिवधमानेष्वन्यतमेन मानेन दुर्गतं नीता नरकादिषु पातिताः। त्रथ कथं चिन्मनुष्यभावप्रतिलम्भो भवति तेषां। तदा तत्रापि तिन्नन्दाफलेन इतोत्सवा निरानन्दा अवन्ति। 10 दीनदीनमनम दत्यर्थः। परपिष्डाणिन त्राहारवैकल्यात्पर-दत्त्तिम्बाहारभुजः। दामाः परतन्त्रदत्त्तयो स्त्याः। सूर्खाः सर्वविवेकग्र्न्याः। दुर्दर्णना विक्पात्मभावा त्रप्रीतिजनकास्य। क्रमा दुर्वलगरीराः मामर्थरहितास्य। सर्वतः सर्वभ्योऽक्रतापराधाः त्रपि काथवन परिभवलाभिनो भवन्ति॥

के पुनरेवं मानस्त्रभास्तपिखनो मानेन स्त्रभा त्रनद्याः। तपिखनो वराकाः। तेऽपि चेत्। एवंभ्रता त्रपि यदि मानिनां मध्ये गण्यनो तिर्घ दीनाः कपणाः कपापात्र-मित्यणः। पुनरन्ये दीनाः कीदृगा भवन्तीति वद ब्रूडि चोदकमामन्त्रयते॥

¹ Ms. prabhrtayah.

² So Dev. 85.—Minaev has °pindāsino; St.-Pet. Dict. has pindāça, pindāçaka (Bettler) from Lexx. only, and açin = weitreichend, dauernd, only.

⁸ See M. Vyut. 104. 25-31.

⁴ Ll has the scholion: mano ragadi jetavan?

बीर्थ्यपार्यमता स प्रमः परिच्छेद।

यद्येविधा मानिनो नोच्यन्ते कीदृगासिई ते भवन्ती-त्याह ।

ते मानिनो विजयिनश्च त एव श्रूरा थे मानश्चुविजयाय वहन्ति मानं। थे तं स्फुरन्तमिप मानिरिपुं निहत्य कामं जने जयफलं प्रतिपादयन्ति॥ ५६

त एव आनिन उच्चनो ये बोधिसत्तासं स्पुरत्तमि प्रभ-वन्तमि आनवैरिणं निहत्य विध्य । कामं यथेष्टसुद्दामेति यावत् । जने खोके सदेवकादिके जयफलं प्रकाणयन्ति बुद्ध-लावखायां । एतादृणं तन्मानग्रनुविजयफलं यादृणमसास दृष्यत 10 दत्यभिप्रायः । त एव विजयिनश्च खन्धविजयाः । त एव यूराखेजखिन दति पदद्दयं यथासंभवं योज्यं [946]॥ उपक्षेत्रेषेषु मानं प्रतिपाद्य ग्रक्तौ मानमाह ।

संक्षेत्रपश्चमध्यस्थो भवेदृतः सहस्रगः।

मंक्षेप्रानां पची वर्गः। तस्य मध्ये तिष्ठन् महस्रगुणेन दुप्ततरो 15 भवेत्। त्रतिप्रयवच्छौर्यवत्तमवलम्बेत। किंभ्रतः मनित्याह।

दुर्योधनः क्षेत्रगनैः सिंहो सगगगैरिव ॥ ६०

र्थ्य

5

¹ M. has dhīrāh.

² Ll: ye tam = sattvā mānam.

^{\$} Ll: kāmam = yathestam.

! देवह

दु: खेन योधत इति दुर्योधनः । कथं चिद्पि न परा-जीयत इत्यर्थः । कथमिव । यथा हि सिंहो स्मगराजो स्म-कुलमध्ये सहातेजोबलसमन्वागतो विहरन् वने सर्वस्मानिस-भवति । न च तैरिभिस्थत इति । एवं बोधिसत्त्वो दुर्योधनो मनेत् ॥

द्रमप्रमपि निमित्तसुद्वहीतव्यमित्याह । महत्त्वपि हि छच्छेषु न रसं चक्षुरीक्षते । एवं छच्छमपि प्राप्य न क्षेत्रविश्रगो भवेत् ॥ ई१

त्रितप्रकर्षवत्खिप कच्छेषु दुःखेषु सत्सु रसं मधुरादिकं

10 जिक्केन्द्रियग्राह्मं न चचुरीचते न प्रतिपद्यते न विषयीकरोती
त्यर्थः । तस्य[ा]विषयलात् । नाविषये प्रवर्तत द्रति भावः ।

एवसुक्तरसचचुर्न्थायेन कष्टमपि प्राप्य न क्षेत्रवशं गच्छेत् ॥

द्रत्युक्तेन प्रवस्थेन स्थामवलं विधाय र्तिवलमावेद्यितुमाह।

यदेवापद्यते कर्म तत्कर्मव्यसनी भवेत्।

15 तत्कर्मशौएडो ऽतृप्तात्मा कौड़ाफलसुखेस्वत् ॥ **६**२

कर्म संभार निबन्धनं ध्यानाध्ययनादि लच्चणं यदेवापद्यते। क्रमकरणयोगेनापतितं भवेत्। तस्मिन्नेव कर्मणि व्यसनीभवेत्। तिक्रयार पनिमग्नचित्तः। तत्कर्मग्रौण्डस्तत्पद्यत्ति लम्पटः। श्रद्ध-प्रातमा पुनः पुनरभि लाषयुक्तः। क दव। क्रीड़ाफलसु खेप्रुवत्।

20 द्यूतादिकीड़ाया यत्मालं सुखं तदाप्तृमिच्कृरिव ॥

¹ Minaev has: sukhaphalepsuvat .- See the Commentary.

द्तोऽपि विचारयता कर्मणि रतिरूत्यादयितये त्युपदर्श-यन्नाच

सुखार्थं क्रियते कर्म तथापि स्यान वा सुखं। कर्मेव तु सुखं यस्य निष्कर्मा स सुखी कथं॥ ६३

सर्वेरेव [95°] कर्मफलसुखिलप्रिया कर्म क्रियते । श्रन्यथा 5 तत्र प्रवृत्तिर्न स्थात् । तथायेवं चेतसा प्रवृत्ताविष कस्य चित्कर्मणोऽभिवाञ्च्कितफलं स्थात् । कस्य चित्पुनर्न स्थात् । निष्फलारभस्थापि संभवात् । तथापि कर्मारस्थात्पुनः फल-संभावनया नैव निवर्तते जनः । यस्य पुनः कर्मैव सुखं न तदु-त्तरमपरसुखाभिलाषः स निष्कर्मा कर्मविरहितः कथं सुखौ । स्थात् । न कथं चिदित्यर्थः ॥

द्रमिप भावयता कर्मेखिभिनिवेष्टयमित्याह ।

कामैने तृप्तिः संसारे खुरधारामधूपमैः। पुर्ण्यासृतैः कथं तृप्तिविपाकमधुरैः शिवैः॥ ६४

रूपादिविषयैः । संसार इति संसरित पुनः पुनः । श्रमः । श्रमः । विरुद्धित्तरनाष्यायनं । किंभ्रतैः चुरधारामधूपमैः । चुरधारायां यनाधुं मधुरसं यदाखादय्यं तथावणाविष्ठाच्छिदनोत्तरकाचं

¹ See Commentary : kāmair atṛptih.

² Ms.: āsvādāya.

⁸ Ms.: trşnāvasā jihvā°.

दु: खसुपजायते । तेनोपमा उपमानं यादृशं येषां ते । श्रापात-माचमाधुर्येऽपि परिणितदुः खेन कटुकरमलात्तेषाभित्यभिप्रायः ॥ पुष्णान्येवास्तानीव । तैः कथं वित्रिरस्तु । किं विश्विष्टैः । विपाकमधुरैरभ्युद्यफलसुखहेत् तया परिणाभेन मधुर्रस्रलात् । ग्रमसुखजनकेः भिवैः कच्छाणकारिभिर्निः श्रेयसावाहकतया । श्रजरामरफलदानपरलात्सर्वदुः खिनवंतेकेरित्यर्थः । श्रत एव पुष्णास्तैरित्यत्र हेत्पदमेतत् ॥

तसादित्युपमं हारेण पुनः कर्मा भिरामं दृढयञ्चा ह ।

तसात्कमावसानेऽपि निमज्जेत्तच कर्मणि।

यथा मध्या इसंतप्त श्रादी प्राप्तसराः करी ॥ ईधू

तस्यारअस्य कर्मणो ऽवसानेऽपि निमच्चेत्। तद्भिनिवेश-रमनिमग्न एव विमुञ्चेत्। कथिमव। यथा ग्रीश्रसमये मध्यं-दिनवर्तिनि सूर्ये [95] पर्वतो जलमलभमानस्य श्रात[ा]प-तापितो इस्ती परमाभिनिवेशसंयक्तः । श्रतिश्रयवदाह्वाद-

15 कारिभीतलजलपरिपूरितं ह्रदमासाद्य प्रथमतो निमळ्ता। तथा। दति ससुदायार्थः। प्राप्तं सरो येन स तथा। पश्चा-

त्कर्मधारयः । त्रादावित्यस्य निमच्चतीत्यनेन संबन्धः ॥

ददानीं रतिवर्त्तं व्याख्याय मुक्तिवर्त्तं व्याख्यातुमा ह

बलनाशानुबन्धे तु पुनः कर्तुं परित्यजेत्।

सुसमाप्तं च तन्मुच्चेदुत्तरोत्तरतृष्णया । ६६

20

30 €

10

¹ So Ms.

² Ms.: abhiniveçarasamyuktab.

श्वारक्षकर्मनिष्पादने सामर्थंचयमातानोऽवगम्य। सामर्थंप्रतिलक्षे स्रति पुनः करियामि। द्रत्यभिप्रायेण तावत्कालं
परित्यजेत् सुच्चेत्। न तावतास्य विचेपः स्थात्। श्रन्यथा
तथापि तद्परित्यागेऽनर्थसमावेग एव स्थात्॥ यदापि सुनिष्यन्तं तदारक्षं कर्म भवेत्। तदापि मोक्तवं। श्रन्यथा स्वरस- 5
वाहितवापि तस्मिन् प्रदक्ते पुनर्यापारादिचेप एव स्थात्।

तस्मादपरापरविश्वेषाकाङ्गया तन्मुञ्चेत्परित्यजेत् । एतेन चढुकां प्राक् । पूर्वे समीच्य मामग्रीमित्यादि तस्योत्सर्गस्याय-सपवाद जक्तः ॥

तदेवमवान्तर्विश्रेषोपदर्शनेन वल्यूहं सर्वथाभिधाय प्रथ- 10 सोद्देशप्रतिपादितमपि पुनः हन्दादिगर्धे कथितं तात्पर्धे व्याचचाण श्राह ।

क्षेत्रप्रहारान् संरक्षेत् क्षेत्रांत्र प्रहरेहृढं। खद्गयुद्धमिवापनः शिक्षितेनारिणा सह॥ ६७

क्कियानां प्रहारानुपघातान् गंरचेत् निवारयेत्। यथा तेषां 15 प्रहारो न प्रभवतीत्यर्थः। क्कियान् पुनः प्रहरेत् निहन्यात्। दृढं गाढ़प्रहारेण यथा पुनरवकायं न सभेरन्॥ श्रव निद्र्यनमाह। यथा प्रिचितेन प्रस्तिवद्याकौयलसमन्वा[960]गतेन प्रवृणा

¹ See VII. 47.

² See VII. 16.

⁸ So L2. Minaev has: samraksan.

[•] So L2. Minaev has: kleçams tu.

200

सह निपुणतरः खड्नेन संग्रामयन् तमिभवति। न च तेनाभिभृत इति॥

तथा तत्रेवादिना पुनसात्पर्थ ग्रिचित्साह । तत्र खड्डं यथा अष्टं यह्नीयात्सभयस्वरं ।

क स्मृतिखद्गं तथा अष्टं यह्लीयानरकान् सारन्॥ ६८

तत्र तिसान् खद्गयुद्धे यथा खद्गं हस्तात्कथं चिदिचितितं पुनः संद्रत्य ग्रह्णीयात्। सभयः। मा मामयं क्रत्मनुप्रविष्य प्रचुर्वधीत्। त्रिमिति। प्रीप्रमेव न कालप्रतिलम्बेनेति यावत्। तथा तददेव स्मृतिप्रमोषे। श्रितिरेव खद्ग दव क्रोप्रणचुविज-व्याय। तं भ्रष्टमपगतं ग्रह्णीयात् त्रामुखीकुर्यात्। नरकान् रौरवादीन् स्परन्। स्विलिते सति तदुःखभागितां मनसिकुर्वन्॥ ननु सूत्मक्रोप्रसमुदाचारेऽपि का चितः येन तचोपेचा न

विषं रुधिरमासाद्य प्रसपति यथा तनी।

तथैव च्छिद्रमासाद्य दोषश्चित्ते प्रसपेति॥ ईट

श्रणमात्रस्थापि दोषस्थावकाशो न दातस्यः । श्रन्यथा तन्मात्रस्थाप्यनुप्रवेशे चित्ते तत्प्रमरावरोधस्य कर्त्मश्रक्यलात् । यथा हि खल्पवणेऽपि रुधिरसंपर्कवतो विषस्य शरीरे । तस्मा-दणुमात्रक्षेश्रप्रहारनिवारणेऽपि तात्पर्यं कुर्यात् ॥

20 पुनरन्यथा तात्पर्य दृढीकुर्वन्नाह ।

¹ In St. Pet.-Dict. from Lexx. only.

⁸ Minaev: grhniyad bhayasatvaram.

10

15

तैलपाचधरो यददसिहस्तैरिधिष्ठितः। खुलिते मर्णवासात्तत्परः स्यात्तया वृतौ ॥ ७० ध

यथा कञ्चित्पुरुषञ्चण्डनृपाज्ञया तैलपरिपूर्णपात्रमादाय
पिच्छलसंक्रमेणासिहस्तै राजपुरुषः। विन्दुमात्रतेलसंग्रेऽष्यद्यैव
लां प्राणिर्वियोज[िय]य्याम दति बुवाणिरिधिष्ठतो गच्छन् यदि
ममात्र कथं चित्सविलितं स्थात्तदा नूनममौ मां व्यापादयेयुरिति सरणभयात्तत्परो भवति। तथा व्रतौ ग्रहौतसंवरः
प्रक्षतस्विलिते नरकादिदुःखन्नासात्त्तद्वकाणाय तत्परः स्थात्
यक्षवान् भवेत्॥ जक्तसु[96] पसंहत्य दर्णयन्नाह।

तस्मादुत्मङ्गगे सर्पे यथोत्तिष्ठति सत्वरं। निद्रानस्यागमे तद्दत्मतिकुर्वीत सत्वरं॥ ७१

यत एवं तसादुसङ्गो कोड्गते सर्पे श्राभीविषे यथा लिरतमेवोत्तिष्ठति । मा मामयमहिर्दचीत् । तथेव निद्रा-लिखागमे मिद्रस्थानप्रादुर्भावे प्रतिकुर्वीत तत्प्रतिपचानित्य-तादिभावनया प्रतीकारं कुर्यात् ॥

त्रस्य चैवं यत्नवतोऽपि कथं[चित्] किं चित्स्विति ग्रूर-स्वितिन्यायेन स्थात्। तदा प्रतीकारं क्रवा पुनर्यत्नवान् भवेत्। दृत्यपदर्शयन्नाह।

¹ See Qikṣās. 356, 19.

एकैकिसमंश्वले सुष्ठु परितप्य विचिन्तयेत्। कयं करोमि येनेदं पुनर्मे न भवेदिति॥ ७२

स्मृतिप्रमोषे मत्येकैकिस्मिन् प्रत्येकं इन्ते स्विक्ति कर्यं चित्केपानामनुप्रवेषे सित । परितप्याध्याप्रयेन मनस्तापं इत्वा

5 विचिन्तयेत्। श्रद्दो वत जानदेव च्हिलतोऽस्मि। तत्केन प्रकारेणाच प्रतिविधानं करोमि येन पुनरिदं इन्तं न स्थात्।
दत्येवं दृढममारक्षं समादाय विद्दरेत्। न तु पुनः प्रिधिनः स्थादिति भावः॥

श्रत एवं विवेककामानां प्रतिषिद्धम्पयनुजानन्त्राह ।

10 संसर्ग कर्म वा प्राप्तमिच्छे हेतेन हेतुना।

त्राचार्यीपाध्यायतद्ग्यसब्रह्मचारिप्रस्थिति । बद्धश्रुतैस्तिपिटकवेदिभिः कौ छत्यविनोद्नकु प्रखेः सह संसर्गं समवधानमिच्चेदा प्रसेत्। तन्निःश्रित एव तिष्टेदित्यभिप्रायः। कर्म वा
प्राप्तं। तद्ववादानु प्राप्तनी खच्चेत्। श्रीन चितुना तेषामवतारसंरचणाभिप्रायेण। एतदेवाइ।

क्यं नामास्ववस्थासु स्मृत्यभ्यासी भवेदिति॥ ७३

केन विधिना नाम श्राखवस्थासु क्षेत्रावतारद्शासु सृत्य-

¹ So L2. M.-Minaev has : praptum.

भ्यासी भवेत्। श्रयत्नत एवालम्बना[97%]त्संप्रमोषो न स्थात्। दृत्यनेनाभिप्रायेण। श्रयं ससुदायार्थः। कच्याणिमनसंनिधाना- न्तद्ववादानुशासनीतस्तदाचारसंदर्शनाच सदा स्मृतिसंप्रजन्य- विद्यारिणः क्षेत्रा नावतारं लभन्ते। ततोऽस्थाविरोधत एवोत्साद्दो वर्धत दृति युक्तं।

सदा कल्याणिमचंच जीवितार्थेऽपि न त्यजेत्। दति री तथा।

जपाध्यायानुभाषिन्या भीत्याप्यादारकारिणां। धन्यानां गुरुषंवाषात्सुकरं जायते सृतिः॥ इति। अधुना तात्पर्यसुपदर्भाताविधेयतासुपदर्भयितुमार्हे।

लघुं कुर्यात्तयात्मानमप्रमादकयां स्मरन्। कर्मागमाद्यया पूर्वं सज्जः सर्वच वर्तते॥ ७४

सर्वकर्मण्यमात्मानं कायवाक् चित्तलचणं तथा कुर्यादुत्माहा-भ्यासादायत्तिं नयेदित्यर्थः। यथा कर्मागमात्कर्मारसात्पूर्वं प्रागेव सच्च आयत्तीकृतः सुदान्ताश्ववत् तन्मार्गनिरीचणासीन 15 द्व कर्मणि प्रवर्तते॥

उत्तमेवार्यमुदाहरणेन यक्तीकुर्वनाह।

so eggly seligib = aneyelds 1

the engineering (1991 Joh) . diff

Ms. ālambanā sampramoşo.

² Supra V. 102.

⁸ Supra V. 30.

⁴ See VII. 16.

⁶ Ms. kayacittasyaksanam.

258

यथैव तूसकं वायोगमनागमने वर्ष । तथोत्सा हवर्ष यायादि हिश्चैवं सम्ध्यति ॥ ७५

द्वज्ञकं कर्पामादिममुद्भृतं यथा वायोर्गमने चागमने च वग्रमायत्तं। तथा तद्देव उत्पाद्ववग्रं यायात् वीर्यवग्रवर्ती 5 भवेत । एवमभ्यामपरायणस्य स्टिद्धियाकाग्रगमनादिज्ञचणा सन्ध-भ्यति संपद्यते ॥

परातासमतापरातापरिवर्तने पुनर्भयत्राष्टुपयुक्ते इति धानपरिच्छेद एव बाखोये॥

द्ति प्रज्ञाकरमितकतायां बोधिचर्यावतारपिञ्जकायां वीर्थ-पारमितापरिच्छेदः समाप्तः॥

l ubhayatra = dhyāne vīrye ca.

² Tib. (fol. 173b): brtson-hgrus-kyi leu-ste bdun-pao.

प्रज्ञाकरमतिक्रतायां बोधिचर्यावतारपञ्जिकायां ध्यानपारमिता श्रष्टमः परिच्छेदः।

तदेवं चान्तेरनन्तरं वीर्यमभिधाय यदुतं। संश्रयेत वनं ततः।

समाधानाय युच्येत भावयेचा ग्रुभादिनं ॥ इति तदर्धयिलैवभित्यादिना प्रतिपादयितुसुपक्र[97]मते।

वर्धयित्वैवमुत्सा हं समाधी स्थापयेन्सनः।

एवसुक्तप्रतिपचस्यासेवनादिना विपचसुत्त्रू स्व वौर्यं वर्धियला ऽनाभोगवाहितया स्थिरीकृत्य समाधी समाधाने चित्तेकाय-तायां स्थापयेकानः । तच निवेषयेत् । श्रारोपयेदिति यावत् । किमर्थमित्याह ।

विश्विप्तचित्तस्तु नरः क्षेश्रदंष्ट्रान्तरे स्थितः ॥ १

तुरिति हेतौ। यसास्त्रमाधानमन्तरेण विचित्रचित्तो-ऽसमाहितचित्त्तससुदाचारो वीर्यवानपि नरः पुरुषः क्षेत्रानां राचसाणामिव दंष्टान्तरे मध्ये स्थितः। कवलित एव तैरास्ते। तसात्॥

Part of the 20-th kārikā of the Qiksās., See pp. XLV and 179 5-9.

रटह

तत्र तावत्समाधिविपचं विचेपं निराकार्तुं पौठिकावर्त्धं रचयचाह ।

कायिक्तिविवेकेन विश्वेपस्य न संभवः।
तस्मास्त्रोकं परित्यज्य वितर्कान् परिवर्जयेत्॥ २
कायिववेको जनसंपर्कविवर्जनता। चित्तविवेकः कामादि
5 वितर्कविवर्जनता। दृति कायिक्तियोविवेके निरामक्तित्या
विचेपस्य तयोक्त्वतताया श्रास्त्रस्वनाप्रतिष्ठानस्येति यावत्। न
संभवः न प्रादुर्भावः। यत एवं तस्मास्त्रोकं खजनवान्धवादिसच्यां परित्यज्य विद्याय पूर्वं वितर्कां श्वित्तविचेपहेद्वन् परिवर्जयेत परित्यजेत॥

10 तत्र लेकापरित्यागहेतं तावित्रराकर्तसुपदर्भयनाह । स्नेहान त्यज्यते लोको लाभादिषु च तृष्ण्या । तसादेतत्परित्यागे विद्वानेवं विभावयेत् ॥ ३

त्रात्मात्मीयग्रहप्रवर्तितोऽभिष्यङ्गः स्रेहः। तसात्र त्यञ्चते लोकः। लाभादिषु च त्वषाया। त्रादिग्रव्दात्मत्कारयगःश्लोका-विदयः परिग्रह्मन्ते। तेषु त्वष्णया प्रलोभेन। चकारात्र त्यञ्चते लोक इति ससुचीयते। यत एतत्कार्णसपरित्यागस्य तस्मा-

¹ pithikā = Unterlage, Piedestal (P. W. from Kārandavyāha 15.9) = introduction.

² vitarkān, L¹ has the scholion: rāgādibhiḥ.

³ vikşepa = kāyacittayor unnatatā, cittasya ālambane' pratisthāna.

⁴ On priyasneha, VIII 5-16; lābhatṛṣṇā, 17.

⁵ So L2, M, Dev.-Minaev has: vidhanevam?

⁶ L2, M: vicārayet.

ध्यानपारमिता अग्रमः परिच्छेदः।

500

5

देतस्य स्नेइस्य लेग्भादीनां वा । यदि वा लेग्नस्य परित्याग-निमित्तं विदान् विचचणः । एविमिति वच्छामाणं विभावयेत्॥ तदेवाच ।

> श्रमथेन विपश्यनासुयुक्तः कुरुते क्षेश्रविनाश्रमित्यवेत्य। श्रमथः प्रथमं गवेषणीयः स च लोके निर्पेक्षयाभिरत्या॥ ४

ग्र[98°]अथः चित्तेकायतालचणः समाधिः। तेन सुयुक्त इत्यपाद्भृत्येचापि योजनीयं। यदि वा हेलर्थे तिनया। ग्रम-येन हेत्तुना विपम्यनासुयुक्तः। सहार्थे व। ग्रमयेन साधे विप- 10 ग्यनासुयुक्त इति।

विपयाना यथास्ततत्त्वपरिज्ञानस्वभावा प्रज्ञा। तथा
सुयुक्तः। युगनद्भवा हिमार्गयोगेन करते क्षेप्रानां विनागं
प्रहाणिमत्येवमवेत्य ज्ञाला क्षेप्रविसुसुचुणा प्रमथः प्रथममादौ
गवेषणीयः। उत्पाद्य इत्यर्थः। तदनन्तरं विपयाना।

ैं समाहिता हि यथाभूतं प्रजानातीत्यवदन्मुनिः। ग्रमाच न चलेचित्तं बाह्यचेष्टानिवर्तनादिति॥ स च ग्रमथः। लेकि लेकिविषये निर्पेचयाभिरत्या।

¹ Metre.

² Cp. P. W. anapoddharya.

⁸ It is the 9th kārikā of the Qiksās., p. XLI, text p. 119.9 and Add-Notes p. 403.—The first part [an old saying of the Master: Sam. N. III. 13; Milinda 39.3] is quoted Bodhic. p. IX, 1.

श्रिभरतिं परिहरत एवोत्पद्यते नान्यथा ॥ तासेवाभिरतिनिर-पेचतासुत्तरप्रवन्धेन दर्भियतुमाह ।

कस्यानित्येष्वनित्यस्य सेहो भवितुमहिति। येन जन्मसहस्राणि द्रष्टव्यो न पुनः प्रियः॥ ५

कस्य अचेतनस्य स्वयमेवानित्यस्य । श्रनित्येषु पुत्रदारा-दिषु । स्नेहो भवितुमईति युच्यते । केन हेतुना । येन कार-णेन जन्मनां सहस्राणि श्रनेकानि जन्मान्यपर्यन्तसंसारे संसरता कदा चिदपि द्रष्टयो न पुनः प्रियः । प्रीणातीति प्रिय उच्यते ॥

10 तद्पि चास्मिनास्ति। दत्याह।

अपग्रवाद्यति याति समाधौ न च तिष्ठति। न च तृष्यति दृष्टापि पूर्ववदाध्यते तृषा॥ ई

यदा तावन्न पश्चिति तं । तदायमरितमप्टितं याति ।

तेनेवामोमनस्वेन समाकुलितिचित्त्तवात्समाधौ न च तिष्ठति ।

15 नैव स्थितो भवित । तमवलम्बित्मग्रक दत्यर्थः । श्रथ यदापि

प्रियदर्भनमस्य जायते । तदापि न च हप्यति । दृष्ट्वापि पुन
रिधकतरं वाध्यते [98] हषा । तद्दर्भनाभिलाषेण पूर्ववत् ।

श्रदर्भनकाल दव पौद्यते ॥

श्रपि च मर्वानर्थनिदानं प्रियसंगतिकरणिमत्य्पदर्भयन्नाह ।



1.281 P 33 B

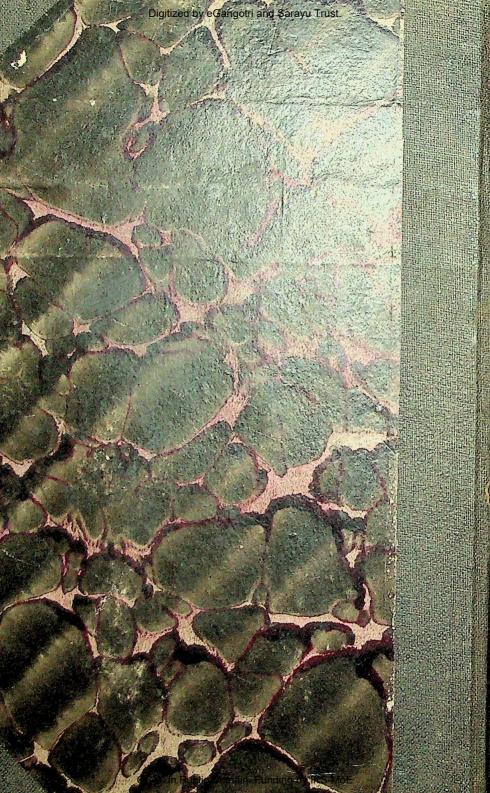
२८८

Mo has: priyaḥ. api ca priṇāti.

| - Pigitized by Gengotri and Saravu Trust | | / |
|--|--|--|
| Padumawati, Pigitized by & Gangotri and Sarayu Trust. | 100 | Rs. 8 |
| Paricista Parvan, (Text) Fasc. 1-5 @ /6/ each | *** | 1 |
| Prākrita-Paingalam, Fasc. 1-7 @ /6/ each | | 2 |
| Prithivirāj Rāsa, (Text) Part II, Fasc. 1-5 @ /6/ each | "" " | 1 |
| Ilitto (Bhalich) Dout II II 7 | *** | ALCOHOLD THE REAL PROPERTY. |
| Puelerte Leleganam (Ward) Fare 1 | *** | 0 |
| Prakrta Laksanam, (Text) Fasc. 1 | ••• | 1 |
| Paraçara Smrti, (Text) Vol. I, Fasc. 1-8; Vol. II, Fasc. | 1-6; Vol | . III, |
| Fasc. 1-6 @ /6/ each | | 7 |
| Paraçara, Institutes of (English) | | 0 |
| Prabandhacintāmani (English) Fasc. 1-3 @ /12/ each | | 2 |
| *Sāma Vēda Samhitā, (Text) Vols. I, Fasc. 5-10; II, 1 | G. TIT | 17. |
| IV, 1-6; V, 1-8, @ /6/ each Fasc. | 0; 111, | |
| | | 12 |
| Sankhya Sutra Vrtti, (Text) Fasc. 1-4 @ /6/ each | | 1 |
| Ditto (English) Fasc. 1-3 @ /12/ each | | 2 |
| Sraddha Kriya Kaumudi, Fasc. 1-5 | *** | 1 |
| Suçruta Samhitá, (Eng.) Fasc. 1 @ /12/ | " | 0 |
| *Taittereya Samhita, (Text) Fasc. 14-45 @ /6/ each | | 12 |
| Tandya Brahmana, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ each | _**** 5 | |
| Trantra Vartika (Euglish) Fasc. 1-2 @ /12/ | ••• | |
| Transfer Vartika (Biigiish) Past. 1-2 (@ /12/ | | 1 |
| Tattva Cintamani, (Text) Vol. I, Fasc. 1-9, Vol. I | l, Fasc. | 2-10, |
| Vol. III, Fasc. 1-2, Vol. IV, Fasc. 1, Vol. V, Fasc. 1-5, 1 | Part IV, V | ol. II, |
| Fasc. 1-12 @ /6/ each | *** | 14 |
| Tattvarthadhigama Sutrom, Fasc. 1-2 | *** | 0 |
| Trikāṇḍa-Maṇḍanam, (Text) Fasc. 1-3 @ /6/ | | 1 |
| Upamita-bhava-prapañca-kathā (Text) Fasc. 1-6 @ /6/ | anch | 0 |
| | JAOH . | 4 |
| Uvāsagadasāo, (Text and English) Fasc. 1-6 @ /12/ | | and the second s |
| Vallala Carita, Fasc. 1 | *** | 0 |
| Varāha Purāṇa, (Text) Fasc. 1-14 @ /6/ each | | 5 |
| Varsa Krya Kaumudi, Fasc. 1-6 @ 6 | | 2 |
| Vayu Purana, (Text) Vol. I, Fasc. 2-6; Vol. II, Fasc. | 1-7, @ /6 | each 4 |
| Vidhano Parigata, Fasc. 1-5 | ••• | 1 |
| Vişnu Smrti, (Text) Fasc. 1-2 @ /6/ each | | 0 |
| Wind Shipin, (16x8) Faso. 1 2 @ 70, each | | . 0 |
| Vivadaratnākara, (Text) Fasc. 1-7 @ /6/ each | | 1 |
| Vrhannaradiya Purana, (Text) Fasc. 2-6 @ /6/ | " | |
| Vrhat Svayambhū Purāņa, Fasc. 1-6 | • ••• | 2 |
| Tibetan Series. | | |
| | | |
| | | 4 |
| Pag-Sam Thi S'in, Fasc. 1-4 @ 1/ each | III, Fas | |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. | III, Fas | 10. 1-5 |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each | 4.00 | io. 1-5 13 |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fas | 4.00 | o. 1-5 13 Vol. II. |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fasc. 1-5 @ 1/ each | 4.00 | io. 1-5 13 |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fas Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. | o. 1-5; T | o. 1-5 13 Vol. II. 10 |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fasc. Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnamah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea | o. 1-5; V | 70l. II 10 |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fasc Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnamah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ | o. 1-5; T | 70l. II 10 4 2 |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjed dpag hkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fas Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī. (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each | o. 1-5; V | oo. 1-5 13 Vol. II. 10 4 2 22 |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjed dpag hkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fas Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī. (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each | o. 1-5; V | oo. 1-5 13 Vol. II. 10 4 2 22 |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fas Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Toxt) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Toxt) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc | o. 1-5; V | oo. 1-5 13 Vol. II. 10 4 2 22 |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fasc Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ eāch | o. 1-5; V | 70l. II 10 4 2 22 l. 1II, 29 |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fasc. Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āîn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc. Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each | o. 1-5; \ oh | rol. II 10 4 2 22 1. 1II 29 37 |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ each Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc. Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc | o. 1-5; \ oh | io. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 22 1. 1II, 37 9 |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fas Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger | o. 1-5; Vo oh 1-5, Vo o. 1 | io. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 22 1. 1II, 37 9 0 |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ each Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Local Akbarāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol. II, Fasc. 1-36 Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ each | o. 1-5; Vo oh 1-5, Vo o. 1 | io. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 22 1. 1II, 29 37 9 0 7 |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āîn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc. 1-5, @ 1/12/ eāch Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshānnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ eac Gatalogue of Arabic Books and Manuscripts 1-2 | o. 1-5; Vo | io. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 22 1. 1II, 29 37 9 0 7 2 |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag kkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fast Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Aīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ eac Catalogue of Arabic Books and Manuscripts in the | o. 1-5; Vo | io. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 22 l. III, 29 37 9 0 7 2 of the |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fas Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Toxt) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Toxt) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshānāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ eac Gatologue of Arabic Books and Manuscripts 1-2 Catalogue of the Persian Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each | c. 1-5; Vo | io. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 1. 1II, 29 37 9 0 7 2 of the 3 |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag kkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fast Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Aīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ eac Catalogue of Arabic Books and Manuscripts in the | c. 1-5; Vo | io. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 1. 1II, 29 37 9 0 7 2 of the 3 |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fasc Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshānāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-10 @ /6/ eac Gatalogue of Arabic Books and Manuscripts 1-2 Catalogue of the Persian Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each | c. 1-5; Vo | io. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 1. 1II, 29 37 9 0 7 2 of the 3 |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fast Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ eac Gatalogue of Arabic Books and Manuscripts 1-2 Catalogue of the Persian Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Esphangi-Bashīdi, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each | c. 1-5; Vo c. 1-5, Vo c. 1 h Library c Faso. 1 | io. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 22 l. III, 29 37 9 0 7 2 of the 3 -21 @ 21 14 |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fast Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ eac Gatalogue of Arabic Books and Manuscripts 1-2 Catalogue of the Persian Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Esphangi-Bashīdi, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each | c. 1-5; Vo c. 1-5, Vo c. 1 h Library c Faso. 1 | io. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 22 l. III, 29 37 9 0 7 2 of the 3 -21 @ 21 14 |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fast Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ eac Catalogue of Arabic Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Farhang-i-Rashīdī, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each Fihrist-i-Tūsī, or, Tūsy's list of Shy'ah Bōoks, (Text) F | c. 1-5; Vo | io. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 22 l. III, 29 37 9 0 7 2 of the 3 -21 @ 21 14 |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fast Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ eac Catalogue of Arabic Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Farhang-i-Rashīdī, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each Fihrist-i-Tūsī, or, Tūsy's list of Shy'ah Bōoks, (Text) F | c. 1-5; Vo | io. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 22 1. 1II, 29 37 9 0 7 2 of the 3 -21 @ 21 14 @ /12/ |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fast Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnamah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Ān-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc. Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnamah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ eac Gatalogue of Arabic Books and Manuscripts 1-2 Catalogue of the Persian Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Farhang-i-Rashīdī, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each Fihrist-i-Ţūsī, or, Ţūsy's list of Shy'ah Bōoks, (Text) F each Futūh-ush-Shām of Wāqidī, (Text) Fasc. 1-9 @ /6/ each | c. 1-5, Vo c. 1 h Library c Fasc. 1 asc. 1-4 (| o. 1-5 13 Tol. II 10 4 2 22 l. 1II, 29 37 9 0 7 2 of the 3 -21 @ 21 14 @ /12/ 3 |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag kkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fast Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ each Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ each Otto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Gatalogue of Arabic Books and Manuscripts 1-2 Catalogue of Arabic Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Farhang-i-Rashīdī, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each Fihrist-i-Tūsī, or, Tūsy's list of Shy'ah Books, (Text) F each Futūḥ-ush-Shām of Wāqidī, (Text) Fasc. 1-9 @ /6/ each | c. 1-5, Vo | o. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 22 l. 1II 37 9 0 7 2 of the 3 -21 @ 21 14 @ /12/ 3 1 |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fas Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshānāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ each Catalogue of Arabic Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Errhang-i-Rashīdī, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each Fihrist-i-Tūsī, or, Tūsy's list of Shy'ah Böoks, (Text) F each Ditto of Āzādī, (Text) Fasc. 1-9 @ /6/ each Ditto of Āzādī, (Text) Fasc. 1-9 @ /6/ each Ditto of Āzādī, (Text) Fasc. 1-9 @ /6/ each | c. 1-5, Vo | o. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 22 l. III, 37 9 0 7 9 0 7 2 of the 3 -21 @ 21 14 @ /12/ 3 3 1 0 |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fast Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc. Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ each Gatalogue of Arabic Books and Manuscripts 1-2 Catalogue of the Persian Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Farhang-i-Rashīdī, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each Fihrist-i-Ţūsī, or, Ţūsy's list of Shy'ah Bōoks, (Text) F each Futūḥ-ush-Shām of Wāqidī, (Text) Fasc. 1-9 @ /6/ each Haft Āsmān, History of the Persian Masnawi, (Text) Fa History of the Caliphs. (English) Fasc. 1-6 @ /12/ each | c. 1-5, Vo | o. 1-5 13 Vol. II 10 4 22 1. 1II, 29 37 9 0 7 2 of the 3 -21 @ 21 14 @ /12/ 3 3 1 0 4 |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fas Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ eac Catalogue of Arabic Books and Manuscripts 1-2 Catalogue of the Persian Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Farhang-i-Rashīdī, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each Eihrist-i-Tūsī, or, Tūsy's list of Shy'ah Bōoks, (Text) F each Ditto of Āzādī, (Text) Fasc. 1-4 @ /6/ each Ditto of Āzādī, (Text) Fasc. 1-6 @ /12/ each Libālnāmah-i-Jahāngiri, (Text) Fasc. 1-6 @ /12/ each Libālnāmah-i-Jahāngiri, (Text) Fasc. 1-6 @ /12/ each | c. 1-5, Vo | o. 1-5 13 Vol. II 10 4 22 1. 1II, 29 37 9 0 7 2 of the 3 -21 @ 21 14 @ /12/ 3 3 1 0 4 1 |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fast Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Toxt) Fasc. 1-13 @ /6/ each Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshānāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ each Catalogue of Arabic Books and Manuscripts 1-2 Catalogue of the Persian Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Farhang-i-Rashīdī, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each Fihrist-i-Tūsī, or, Tūsy's list of Shy'ah Bōoks, (Text) F each Ditto of Āzādī, (Text) Fasc. 1-9 @ /6/ each Ditto of Āzādī, (Text) Fasc. 1-9 @ /6/ each Haft Āsmān, History of the Persian Masnawi, (Text) Fa History of the Caliphs, (English) Fasc. 1-6 @ /12/ each Iqbālnāmah-i-Jahāngiri, (Text) Fasc. 1-3 @ /6/ each | c. 1-5; Vo | o. 1-5 13 Vol. II 10 4 22 1. 1II, 29 37 9 0 7 2 of the 3 -21 @ /12/ 21 14 @ /12/ 3 1 0 4 1 38 |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fast Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshānāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ each Catalogue of Arabic Books and Manuscripts 1-2 Catalogue of the Persian Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Errhang-i-Rashīdī, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each Fihrist-i-Ţūsī, or, Ţūsy's list of Shy'ah Bōoks, (Text) F each Ditto of Āzādī, (Text) Fasc. 1-9 @ /6/ each Ditto of Āzādī, (Text) Fasc. 1-6 @ /12/ each Igābah, with Supplement, (Text) Fasc. 1-3 @ /6 each Igābah, with Supplement, (Text) IF Fasc. 1-3 @ /6 each Igābah, with Supplement, (Text) IF Fasc. 1-3 @ /6/ each Igābah, with Supplement, (Text) IF Fasc. (#12/ each | c. 1-5; Vo. 1-5; Vo. 1-5; Vo. 1-5; Vo. 1111 | o. 1-5 13 Vol. II 10 4 22 l. 1II, 29 37 9 0 7 2 of the 3 -21 @ 21 14 @ /12/ 3 3 1 0 4 1 38 |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fast Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnamah, with Index, (Toxt) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnamah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ each Gatelogue of Arabic Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Errhang-i-Rashīdī, (Text) Fasc. 1-3 @ 1/ each Fihrist-i-Ţūsī, or, Ţūsy's list of Shy'ah Bōoks, (Text) F each Futūh-ush-Shām of Wāqidī, (Text) Fasc. 1-9 @ /6/ each Haft Āsmān, History of the Persian Masnawi, (Text) F History of the Caliphs, (English) Fasc. 1-6 @ /12/ each Igābah, with Supplement, (Text) Fasc. 1-3 @ /6/ each Isābah, with Supplement, (Text) Fasc. 1-9, Vol. II, Fasc. 1-9, Vol. I | c. 1-5; Vo. 1-5; Vo. 1-5; Vo. 1-5; Vo. 1111 | o. 1-5 13 Vol. II 10 4 22 l. 1II, 29 37 9 0 7 2 of the 3 -21 @ 21 14 @ /12/ 3 3 1 0 4 38 ,1-10; 0-12; |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fas Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ eac Gatalogue of Arabic Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Farhang-i-Rashīdī, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each Fihrist-i-'Ţūsī, or, 'Ţūsy's list of Shy'ah Bōoks, (Text) F each Ludey of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Ditto of Āxādī, (Text) Fasc. 1-4 @ /6/ each Ditto of Āxādī, (Text) Fasc. 1-9 @ /6/ each Lisābah, Mitstory of the Persian Masnawi, (Text) F History of the Caliphs, (English) Fasc. 1-6 @ /12/ each Haft Āsmān, History of the Persian Masnawi, (Text) F History of the Caliphs, (English) Fasc. 1-6 @ /12/ each Haāir-ul-Ūmarā, Vol. I, Fasc. 1-9, Vol. II, Fasc. 1-9 Index to Vol. III. Fasc. 10-11; Index to Vol. II, Ludey to Vol. III. Fasc. 11-12@ /6/ each | c. 1-5; Vo. 1-5; Vo. 1-5; Vo. 1-5; Vo. 1111 | o. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 12 11I, 29 37 9 0 7 2 of the 3 -21 @ 14 @ /12/ 3 1 0 4 1 38 ,1-10; 0-12; 13 |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fas Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ eac Gatalogue of Arabic Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Farhang-i-Rashīdī, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each Fihrist-i-'Ţūsī, or, 'Ţūsy's list of Shy'ah Bōoks, (Text) F each Ludey of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Ditto of Āxādī, (Text) Fasc. 1-4 @ /6/ each Ditto of Āxādī, (Text) Fasc. 1-9 @ /6/ each Lisābah, Mitstory of the Persian Masnawi, (Text) F History of the Caliphs, (English) Fasc. 1-6 @ /12/ each Haft Āsmān, History of the Persian Masnawi, (Text) F History of the Caliphs, (English) Fasc. 1-6 @ /12/ each Haāir-ul-Ūmarā, Vol. I, Fasc. 1-9, Vol. II, Fasc. 1-9 Index to Vol. III. Fasc. 10-11; Index to Vol. II, Ludey to Vol. III. Fasc. 11-12@ /6/ each | c. 1-5; Vo. 1-5; Vo. 1-5; Vo. 1-5; Vo. 1111 | o. 1-5 13 Vol. II 10 4 22 l. 1II, 29 37 9 0 7 2 of the 3 -21 @ 21 14 @ /12/ 3 3 1 0 4 38 ,1-10; 0-12; |
| Pag-Sam Thi S'îû, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'îû (Tib. & Sans.) Vol. I, Fas Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āīn-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ eac Gatalogue of Arabic Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Farhang-i-Rashīdi, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each Eihrist-i-Tūsī, or, Tūsy's list of Shy'ah Bōoks, (Text) F each Ditto of Āzādī, (Text) Fasc. 1-4 @ /6/ each Haft Āsmān, History of the Persian Masnawi, (Text) F History of the Caliphs, (English) Fasc. 1-6 @ /12/ each Igālnāmah-i-Jahāngiri, (Text) Fasc. 1-3 @ /6/ each Igālnāmah-i-Jahāngiri, (Text) Fasc. 1-3 @ /6/ each Igālnāmah-i-Jahāngiri, (Text) 51 Fasc. @ /12/ each Maāṣir-ul-Umarā, Vol. I, Fasc. 1-9, Vol. II, Fasc. 1-9 Index to Vol. III, Fasc. 11-12@ /6/ each Machazi of Wāqidi, (Text) Fasc. 1-12 @ /6/ each | c. 1-5; Vo | o. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 12 l. 1II, 29 37 9 0 7 2 of the 14 @ /12/ 3 1 14 @ /12/ 3 1 38 ,1-10; 0-12; 13 1 |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fast Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āni-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ each Gatelogue of Arabic Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Farhang-i-Rashīdī, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each Fihrist-i-Ţūsī, or, Ţūsy's list of Shy'ah Bōoks, (Text) F each Futūḥ-ush-Shām of Wāqidī, (Text) Fasc. 1-9 @ /6/ each Haft Āsmān, History of the Persian Masnawi, (Text) F History of the Caliphs, (English) Fasc. 1-6 @ /12/ each Isābah, with Supplement, (Text) Fasc. 1-3 @ /6/ each Isābah, with Supplement, (Text) Fasc. 1-9, Vol. II, Fasc. 1-9, Index to Vol. II, Fasc. 10-11; Index to Vol. II, Index to Vol. II, Fasc. 1-12@ /6/ each Maghazi of Wāqidī, (Text) Fasc. 1-5 @ /6/ each | c. 1-5; Vo | o. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 12 l. 1II, 29 37 9 0 7 2 of the 14 @ /12/ 3 1 14 @ /12/ 3 1 38 ,1-10; 0-12; 13 1 |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fast Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āni-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ each Gatelogue of Arabic Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Farhang-i-Rashīdī, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each Fihrist-i-Ţūsī, or, Ţūsy's list of Shy'ah Bōoks, (Text) F each Futūḥ-ush-Shām of Wāqidī, (Text) Fasc. 1-9 @ /6/ each Haft Āsmān, History of the Persian Masnawi, (Text) F History of the Caliphs, (English) Fasc. 1-6 @ /12/ each Isābah, with Supplement, (Text) Fasc. 1-3 @ /6/ each Isābah, with Supplement, (Text) Fasc. 1-9, Vol. II, Fasc. 1-9, Index to Vol. II, Fasc. 10-11; Index to Vol. II, Index to Vol. II, Fasc. 1-12@ /6/ each Maghazi of Wāqidī, (Text) Fasc. 1-5 @ /6/ each | c. 1-5; Vo | o. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 12 l. 1II, 29 37 9 0 7 2 of the 14 @ /12/ 3 1 14 @ /12/ 3 1 38 ,1-10; 0-12; 13 1 |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fast Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Toxt) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Ān-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc. Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ each Gatelogue of Arabic Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Farhang-i-Rashīdī, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each Fihrist-i-Ţūsī, or, Ţūsy's list of Shy'ah Bōoks, (Text) F each Futūḥ-ush-Shām of Wāqidī, (Text) Fasc. 1-9 @ /6/ each Haft Āsmān, History of the Persian Masnawi, (Text) F History of the Caliphs, (English) Fasc. 1-6 @ /12/ each Igābah, with Supplement, (Text) Fasc. 1-3 @ /6/ each Isābah, with Supplement, (Text) Fasc. 1-9, Vol. II, Fasc. 1-9, Index to Vol. II, Fasc. 10-11; Index to Vol. II, Index to Vol. II, Fasc. 11-12@ /6/ each Maghazi of Wāqidī, (Text) Fasc. 1-5 @ /6/ each | c. 1-5; Vo | o. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 12 l. 1II, 29 37 9 0 7 2 of the 14 @ /12/ 3 1 14 @ /12/ 3 1 38 ,1-10; 0-12; 13 1 |
| Pag-Sam Thi S'în, Fasc. 1-4 @ 1/ each Sher-Phyin, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-3; Vol. @ 1/ each Rtogs brjod dpag hkhri S'în (Tib. & Sans.) Vol. I, Fast Fasc. 1-5 @ 1/ each Arabic and Persian Series. 'Alamgirnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-13 @ /6/ ea Al-Muqaddasi (English) Vol. I, Fasc. 1-3 @ /12/ Āni-i-Akbarī, (Text) Fasc. 1-22 @ 1/ each Ditto (English) Vol. I, Fasc. 1-7, Vol. II, Fasc Fasc. 1-5, @ 1/12/ each Akbarnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-37 @ 1/ each Ditto English Fasc, 1-8 @ 1/ each; Vol II, Fasc Arabic Bibliography, by Dr. A. Sprenger Bādshāhnāmah, with Index, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ each Gatelogue of Arabic Books and Manuscripts in the Asiatic Society of Bengal. Fasc. 1-3 @ 1/ each Dictionary of Arabic Technical Terms, and Appendix, 1/ each Farhang-i-Rashīdī, (Text) Fasc. 1-14 @ 1/ each Fihrist-i-Ţūsī, or, Ţūsy's list of Shy'ah Bōoks, (Text) F each Futūḥ-ush-Shām of Wāqidī, (Text) Fasc. 1-9 @ /6/ each Haft Āsmān, History of the Persian Masnawi, (Text) F History of the Caliphs, (English) Fasc. 1-6 @ /12/ each Isābah, with Supplement, (Text) Fasc. 1-3 @ /6/ each Isābah, with Supplement, (Text) Fasc. 1-9, Vol. II, Fasc. 1-9, Index to Vol. II, Fasc. 10-11; Index to Vol. II, Index to Vol. II, Fasc. 1-12@ /6/ each Maghazi of Wāqidī, (Text) Fasc. 1-5 @ /6/ each | c. 1-5; Vo | o. 1-5 13 Vol. II 10 4 2 12 l. 1II, 29 37 9 0 7 2 of the 14 @ /12/ 3 1 14 @ /12/ 3 1 38 ,1-10; 0-12; 13 1 |

| 757 | | | 1000 | |
|-------------------------|--|------|------|--|
| | Muntakhabu-t-Tawarikhi Text) Fasc 1-15 & Saravo Trust. Rs. | 5 | 10 | |
| | Muntakhabu-t-Tawarikh, (English) Vol. I, Fasc. 1-7; Vol. II, Fasc. | | | |
| | Muntakhabu-t-Tawarikh, (Text) Fasc Jri 5 (Sarauch rust: Muntakhabu-t-Tawarikh, (English) Vol. 1, Fasc 1-7; Vol. II, Fasc. 1-5 and 3 Indexes; Vol. III, Fasc. 1 @ /12/ each | 12 | 0 | |
| | Muntakhabu-l-Lubab, (Text) Fasc. 1-19 @ /6/ each | 7 | 2 | |
| | Ma'asir-i-'Alamgiri, (Text), Fasc. 1-6 @ /6/ each | 3 | 4 | |
| | Nukhbatu-l-Fikr, (Text) Fasc. 1 | 0 | 6 | |
| | Nizami's Khiradnamah-i-Iskandari, (Text) Fasc. 1-2 @ /12/ each | 1 | 8 | |
| | Riyazn-s-Salatin, (Text) Fasc. 1-5 @ /6/ each | 1 | 14 | |
| | Ditto Ditto (English) Fasc. 1-5 | 3 | 12 | |
| | Tabaqat-i-Naşiri, (Text) Fasc. 1-5 @ /6/ each | 1 | 14 | |
| | Ditto (English) Fasc. 1-14 @ /12/ each | 10 | 8 | |
| - | Ditto Index | 1 | 0 | |
| | Tārikh-i-Firiz Shāhi of Ziyān-d-dīn Barni (Text) Fasc. 1-7 @ /6/each | 2 | 10 | |
| | Tarikh-1-Firuzshahi, of Shams-i-Siraj Aif, (Text) Fasc, 1-6 @ [6] each | 2 | 4 | |
| | Ten Ancient Arabic Poems, Fasc. 1-2 (a 1/8/ each | 3 | o | |
| | Wis o Ramin, (Text) Fasc. 1-5 @ /6/ each | 1 | 14 | |
| | Zafarnamah, Vol. I, Fasc. 1-9, Vol. II, Fasc. 1-8 @ /6/ each | 6 | 6 | |
| | Tuzuk-i-Jahangiri, (Eng.) Fasc. 1 | 0 | 12 | |
| | | | 12 | |
| | | | | |
| | | | | |
| | ASIATIC SOCIETY'S PUBLICATIONS. | | | |
| | | | | |
| 1. | ASIATIC RESEARCHES. Vols. XIX and XX @ 10/ each | 20 | 0 | |
| 2. | PROCEEDINGS of the Asiatic Society from 1865 to 1869 (incl.) @ 161 per | 20 | U | |
| | No.: and from 1070 to date (a) 18/ per No | | | |
| 3. | JOURNAL of the Asiatic Society for 1843 (12) 1844 (12) 1845 (19) 1846 | | | |
| | (D), 104/ (12), 1040 (12), 1860 (7), 1867 (6), 1868 (6), 1860 (6), 1070 (6) | | | |
| - | 10/1 (1, 10/2 (0), 10/0 (0) 18/4 (8), 1875 (7) 1876 (7) 1977 (0) 1976 | | | |
| | (0), 1019 (1), 1000 (0), 1001 (7), 1882 (6) 1883 (6) 1884 (6) 1005 (6 | | | |
| | | | | |
| | 1000 (11), 1004 (0), 1000 (1), 1000 (0) 1897 (8) 1000 (0) | | | |
| | 1000 (1) W 1001 (1), 1002 (0), 1000 (8), (0) 1/8 per No to Mombers | | | |
| | and the 2/Der No. to Non-Members. | | | |
| | N.B.—The figures enclosed in brackets give the number of New | | | |
| 4. | OCHICHAI V ILOVION OI THE ILESERICHAS OF THE SOCIETY FROM 1704 1000 | | | |
| | A sketch of the Lural language as snoken in Electory (I-ul- | 3 | 0 | |
| | | | | |
| | Theobald's Catalogue of Reptiles in the Museum of the Asiatic Society | 4 | 0 | |
| | | • | | |
| , | Catalogue of Mammals and Birds of Burmah, by E. Blyth (Extra No., | 2 | 0 | |
| | J.A.S.B., 1875) | | | |
| 5. | Anis-ul-Musharrabin | 4 | 0 | |
| 6. | Catalogue of Fossil Vertebrata | 3 | 0 | |
| 7. | Catalogue of the Library of the Asiatic Society Bonnel " " | 3 | 0 | |
| 5. | Inavan, a Commentary on the Hidavah Vole II and IV @ 10/ | 3 | 8 | |
| 9. | The state of the s | 32 | | |
| 10. | Knizanatu-i-iim | 2 | 0 | |
| 11. | Mahābhārata, Vols. III and IV, @ 20/ each | 4 | 0 | |
| 12. | Moore and Hewitson's Descriptions of New Indian I | 40 | 0 | |
| | | | | |
| 13. | Sharaya-ool-Islam | 18 | 0 | |
| 14. | Tibetan Dictionary, by Csoma de Körös | 4 | 0 | |
| 15. | | 10 | 0 | |
| 16. | Nacmiracandamrta, Parts and @ 1/8/ | 8 | 0 | |
| 17. | A descriptive catalogue of the paintings status & | 3 | 0 | |
| | | - 50 | | |
| 18. | memoir on maps illustrating the Ancient Geography | 1 | 0 | |
| | M. A. Stein, Ph.D., Jl: Extra No. 2 of 1899 | | 1 1 | |
| | | 4 | 0 | |
| | | | | |
| | | | | |
| A A CO | Notices of Sanskrit Manuscripts, Fasc. 1-29 @ 1/ each | 00 | | |
| | Nepalese Duddhist Sanskrit Literature by D. D. T. M. | 29 | 0 | |
| N. | B.—All Cheques, Money Orders, &c., must be made payable to the "Tr | 5 | 0 | |
| Asiatic Society," only. | | | | |
| | | | | |
| | Books are supplied by W D D | | | |

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.



Distrized by eGangoth and Saravia Tricks (1995)